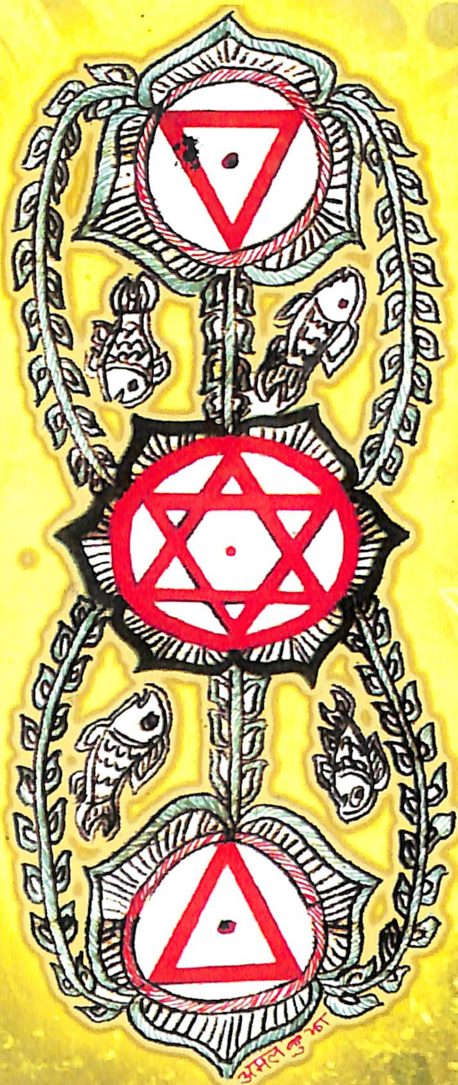
इजोत



नीरजा रेणु

इजोत



नीरजा रेणु

इजोत

(मैथिली उपन्यास)

लेखिका

नीरजा रेणु

२०१२ ई०

डा० तेजनाथ मिश्र स्मृति न्यासक आर्थिक साहाय्यसँ प्रकाशित

इजोत
(मैथिली उपन्यास)

प्रकाशक :
नीरजा रेणु
ग्रा० बिट्ठो, पो० सरिसब–पाही, जि० मधुबनी ८४७४२४

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
नीरजा रेणु
ग्रा० बिट्ठो, पो० सरिसब–पाही, जि० मधुबनी ८४७४२४
दूरभाष मोबाइल – ९५४६६२७८८६

प्रथम संस्करण : ३०० प्रति (२०१२ ई०)

मूल्य : ६०/–

लेजर टाइप एवं मुद्रक :
एकेडेमी प्रेस, दारागञ्ज,
इलाहाबाद – २११००६



डॉ० तेजनाथ मिश्र

जन्म १-११-१९३०   निधन १-६-१९८९



कामिनी मिश्र

समर्पण

सम्मान्या श्री कामिनी देवीक करकमलमे

विश्वविश्रुत विज्ञान विवेचक
विद्यावंशक 'तेज' प्रवर्द्धक।
नाथ 'कामिनि'क जनहित रक्षक
देथु सदय आशीष सदक्षण।।

'स्मृति शेष' न 'तेज' होइत अछि
अक्षर–अक्षरमे जिबैत अछि।
ज्ञानक गरिमासँ बढ़ैत अछि
दुनू लोक आलोक बँटै अछि।।

हुनक अर्धतनु कामिनीक कर–
कमलार्पित आखर पुष्पाञ्जलि।
जतए रहथु स्वीकार करथि जँ
होएत सफल जीवन भावाञ्जलि।।

श्रद्धावनत

नीरजा रेणु

दू शब्द

अपन जीवनमे देखल-सुनल घटनाकें कहब बहुत गोटएक हिस्सक रहैत छैक। आ ताहिपर किछु सोचब, अपन टिप्पणी देब सेहो जनसामान्यक दिनचर्या रहिते छैक। हमहूँ ताही वर्गक लोकमे छी। तखन कहबासँ बेशी प्रिय हमरा लिखि देब लगैत अछि। सेहो ओतबे जे देखैत-सुनैत छी वा सोचैत छी। ई एकटा आलेख बनि जाइत छैक......एक-एकटा क' के अनेको आलेख आइ धरि लिखा गेल। ओ सभ कहिया कविता, कथा वा निबन्ध कहौलक तकर परिज्ञान हमरा तहिया भेल जहिया ओकरा स्वयं दोसर बेर पढ़लहुँ वा कोनो पत्र-पत्रिकाक सम्पादकीयमे सम्पादकक टिप्पणी देखलहुँ।

......तँ ई आलेख हमर अन्य रचनासँ किछु पैघ भ' गेल। पाठक लोकनि एकरा उपन्यास कहि सकैत छथिन।

.......से नहि होइते, यदि हमर दूनू कन्या चि.सौ. नीला तथा चि०सौ० उषा बेर-बेर ई नहि कहितथि जे......किछु आओर बढ़ि सकैत छैक...... यदि हमर पति डा० किशोर नाथ झा ई नहि कहितथि जे बड़ छोट आलेख अछि........यदि चि. अमल कुमार ई नहि कहितथि जे प्रेसमे देबा योग्य वस्तु बना दिऔक....... एकर आवरण सज्जा परिश्रम पूर्वक सेहो ई तैयार कएलैन्हि उत्साह पूर्वक तँ हम हिनका सभकें यथा योग्य आशीर्वाद दैत छियनि वा आभारी छी।

प्रणाम करैत छियनि अपन गाम भाई कैं (डा० जगदीश मिश्र) जे हमरा लेल आशीर्वादक शब्द--भूमिका लिखि देलनि। आ एकेडमी प्रेसक मालिक प० श्री सुरेन्द्रमणि त्रिपाठी एवं हुनक सहकर्मी, लोकनिक प्रति कृतज्ञ छियनि जे एहि रचनाकें पोथीक रूप देलनि। कतेक प्रकारक अशुद्धि पाठककें भेटि सकैत छनि, तकरा हेतु हम इएह कहब जे हमर ओहि प्रमादकें क्षमा करथि, आ अन्तमे, प० श्री शशिनाथ झा (मदनजी बाबू) जे घरमे छिड़िआएल पन्ना सभकें नियोजित कए पृष्टसंख्या लिखलनि तँ हुनकर सहयोगक प्रति कृतज्ञ छियनि।

प्रो० तेजनाथ मिश्र ट्रस्टक सदस्यगणकें धन्यवाद दैत छियनि जे अनुदानक हेतु अनुशंसा कएलनि।

सुधी जनक स्नेहाधीन

– नीरजा रेणु

बिट्ठो / श्रावणी पूर्णिमा,
वि०सं० २०६९ (ता० २-८-२०१२)

डा० तेजनाथ मिश्रक संक्षिप्त परिचय

डा० तेजनाथ मिश्र मिथिलाक ग्रामरत्न, संस्कृत विद्याक विशिष्ट केन्द्र सरिसबक पाहीटोलमे सारस्वत साधकक एक महोच्च कुलमे आविर्भूत भेल छलाह। एहि कुलक पाण्डित्यक आलोकसँ समस्त भारतवर्ष आलोकित भए उठल छल। दू सोदर महामहोपाध्याय भवानीनाथ मिश्र (प्रसिद्ध सचल मिश्र) ओ महामहोपाध्याय मोहन मिश्र ओहि युगमे मिथिलाक कीर्ति-केतुकेँ फहरबैत रहलाह। हरिअम्मय बलिराजपुर मूलक श्रोत्रियकुलकलाधर, अक्षरपुरुष महामहोपाध्याय सचल मिश्रक प्रपौत्रक पौत्र छलाह डा० तेजनाथ मिश्र। हिनक जन्म पहिली नवम्बर १९३० ई० कैँ भेल छलनि।

हिनक प्रारम्भिक शिक्षा दरभंगहिमे भेल ओ पछाति ओही ठामक मारवाड़ी हाइस्कूल सँ मैट्रिकक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। तत्पश्चात् ई टी०एन०जे० कॉलेज, भागलपुरसँ १९५१ ई०मे अन्तर स्नातक विज्ञानक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। तहिया उक्त कालेज पटना विश्वविद्यालयहिक क्षेत्राधिकारमे छल। पुनः ई कलकत्ता विश्वविद्यालयक सीटी कालेजसँ १९५३ ई०मे स्नातक विज्ञानक परीक्षा उत्तीर्ण कएल। १९५५-५६ ई०मे दू वर्ष धरि ई गामक हाइस्कूल (लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसब)मे विज्ञानशिक्षकक पदकेँ सुशोभित कएल। किन्तु ज्ञानार्जनक अदम्य उत्कठावश गामक एहि वृत्तिक परित्याग कए ई राँची कालेजमे 'मास्टर ऑफ सायंस' वर्गमे अपन नामांकन कराओल। तहिआ राँची कॉलेज पुरना बिहार विश्वविद्यालयक अन्तर्गते छल। एतहिसँ १९५८ ई०मे जन्तु-विज्ञानमे मास्टर डिग्री प्राप्त कएल आ' तत्काले १० अक्टूबर, १९५८ ई० कैँ राजेन्द्र कॉलेज छपरामे जन्तु-विज्ञान विभागमे प्राध्यापक पद पर नियुक्त भेलाह। किन्तु ज्ञानार्जनक लेल चिर बुभुक्षु हिनक मोन एतबहिसँ सन्तुष्ट नहि भेल। अगत्या विश्वविद्यालयसँ शैक्षणिक अवकाश लए ई लन्दनक लीवरपूल विश्वविद्यालयमे अनुसन्धित्सु बनि गेलाह। हिनक शोधक विषय छल 'मत्स्य परजीवी' (Fishparasite)। हिनक शोध पर्यवेक्षक छलथिन्ह डा० जे०सी० चवेक। ओतहिसँ १९६६ ई०मे ई पी-एच०डी०क उपाधि प्राप्त कएल। स्वदेश आबि पुनः ई राजेन्द्र कॉलेज, छपराक अपन पूर्वक पदकेँ सुशोभित कएल।

'मत्स्य परजीवी' विषयक ई गवेषणा डा० तेजनाथ मिश्रकेँ अत्यधिक

यशस्वी बनओलक। मात्र पौरस्त्ये देशमे नहि, अपितु पाश्चात्यो देशमे ई एहि विषयक अप्रतिम विद्वानक रूपमे ख्यात भए उठलाह। फलतः एहि विषयसँ सम्बद्ध नव-नव अनुसन्धानक कार्यमे ई आजीवन व्यस्त रहलाह। अपन रुचि ओ प्रकृतिक प्रतिकूल ई किछु दिन धरि जगलाल चौधरी महाविद्यालय, छपराक प्राचार्यक पदपर सेहो प्रतिष्ठित रहलाह।

डा० मिश्रक प्रतिभा बहुमुखी छल। ई आजीवन विभिन्न शैक्षिणिक ओ सामाजिक संगठनक सदस्य बनल रहलाह। यथा फेलो ऑफ जूलॉजिकल सोसाइटी, लंदन; इक्थ्योलाजिकल सोसायटी ऑफ जापान, इक्थ्यो लाजिकल सोसायटी ऑफ इन्डिया, पारासायटिकल सोसायटी ऑफ इन्डिया, फिशरीज सोसायटी ऑफ इण्डिया, मेन्डेल सोसायटी, जुलॉजिकल सोसायटी ऑफ इन्डिया, ऑल इन्डिया सायन्स कांग्रेस, हेल्मीन्थो लॉजिकल सोसायटी तथा एकेडमी ऑफ जूलॉजी। एकर अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयक रिसर्च बोर्ड ओ विद्वत् परिषदक सदस्य सेहो छलाह। एतबे नहि, हिन्दी साहित्य परिषद् ओ मैथिली साहित्य परिषदसँ सेहो ई सम्बद्ध रहलाह। लीवरपूल, विश्वविद्यालयक भारतीय छात्र संगठनक महासचिव सेहो ई रहलाह तथा यूनाइटेड किङ्गडमक माउन्टबेटन ग्रान्टसँ सेहो ई सम्मानित भेल छलाह।

जखन ई पन्द्रहमे वर्षक छलाह तहिखन हिनक विवाह राधोपुर ड्योढ़ीक खण्डवला कुलोद्भव बाबू कलाधारी सिंहक ज्येष्ठा कन्या श्रीमती कामिनी मिश्रक संग भए गेलैन्हि। विद्वानक अल्पजीवी होएब कोनो नव कथा नहि। ईहो मात्र उनसठि वर्षक अवस्थामे शिव-सायुज्यकें १.६.१९८९ ई०कें प्राप्त कएलनि।

– (डा० सदन मिश्रक आलेखसँ साभार)

उपन्यासक प्रसङ्ग

विचारक लोकनि उपन्यासकेँ परिभाषित करैत सर्वप्रथम ओकरा गद्यकाव्य कहल अछि। अर्थात् काव्यात्व तँ ओहिमे रहबे करए किन्तु से रहए गद्यमे। गद्यक प्रसङ्ग कहल जाइछ जे छन्दमे बान्हल नहि हो ओ गद्य थिक अथवा छन्द रहित पदक विस्तार गद्य थिक। कोनहुँ कथावस्तुक, चरित्र वा विचारक, कल्पना ओ अनुभूतिक माध्यमेँ गद्यमे सरस, रोचक ओ रमणीय अभिव्यक्ति गद्यकाव्य थिक। युगक गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैलीमे स्वाभाविक जीवनक पूर्ण व्यापक चित्र अंकित कएनिहार गद्यकाव्य उपन्यास कहबैत अछि। जीवन एहिमे समग्रतामे चित्रित रहबाक चाही। जँ एहि दृष्टिएँ प्रस्तुत उपन्यास 'इजोत' केँ देखल जाए तँ ओ एक सफल उपन्यास प्रमाणित होएत। काव्यत्व तँ एहिमे छैके, जीवन सेहो समग्रतामे चित्रित अछि, युग-चेतनाक चित्रण विलक्षण ढंगेँ भेल अछि तथा अभिव्यक्ति कौशल सहज ओ सरल अछि।

उपन्यासक कथावस्तुक तीन गोट आवश्यक गुण मानल गेलैक अछि- रोचकता, स्वाभाविकता एवं प्रवाह। कथाक विन्यास एहन होएबाक चाही जाहिसँ पाठकक कौतूहल प्रारम्भसँ अन्त धरि बनल रहए। एहि उपन्यासक प्रारम्भ होइत अछि हरिण-हरिणीक कथासँ, जकरा दीदी अपन भतीजीकेँ सुनाए रहलि छथि। हरिणीक कथा, कदाचित् दीदीहिक जीवनक कथा थिक। भतीजी दीदीक जीवनक सुख-दुःखक कथा क्रमशः दीदीहिक मुहेँ सुनैत रहैत छथि। कथावस्तुक मौलिकता, विषयक नवीनता, नव-नव घटनाक कल्पना तथा ओकर संयोजनक ढंग एहन विलक्षण भेल अछि जाहिसँ पाठकक कौतूहल उपन्यासक प्रारम्भसँ लए अन्तधरि बनल रहैत अछि।

उपन्यासमे मानव-जीवनक चित्रण कएल जाइछ, ओ तेँ मानव चरित्रक विश्लेषण ओकर रोचकता एवं रमणीयताक प्रधान कारण बनि जाइछ। कारण रचना जीवनहिँसँ रस-ग्रहण कए जीवन्त बनि मबैछ। एहि उपन्यासक पात्र सभक चरित्र-चित्रण स्वाभाविक रूपेँ भेल अछि तेँ ओहिमे सजीवता अछि।

साधारणतः अधिकांश पात्रक, विशेषतः मिसरिया झा ओ दीदीक चरित्रक उत्कर्ष-अपकर्षक विश्लेषण बड़ मनोवैज्ञानिक ढंगेँ कएल गेल अछि। उपन्यासक चरित्र जँ उपन्यासहिक चरित्र जकाँ नहि लागि, देखल-सुनल वा सम्पर्कमे आएल चरित्रक समान लागए तँ पाठकक तादात्म्य ओहि चरित्रक संग सहजहिँ स्थापित भए जाइछ। 'इजोत' उपन्यासक-चरित्र सभमे मानव-स्वभावक ओ मौलिकता एवं सहजता देखबा मे अबैछ जाहिसँ पाठकक तादात्म्य ओहि चरित्रक संग सहाजहिँ स्थापित भए जाइछ। इजोतक लेखिका एहि कृतिक पात्र सभक चित्रण ओकर वैशिष्ट्य एवं दुर्बलताक संग कएल अछि। तेँ ओ सभ अधिक जीवन्त, अधिक हृदयग्राही भेल अछि। लेखिका विश्वसनीय व्यक्ति जकाँ पात्र सभक आन्तरिक रहस्यक उद्घाटन सेहो कएल अछि। पाठकक एहि तादात्म्यक अभावमे कोनो उपन्यासकार अपन कृतिकेँ लोकप्रिय नहि बनाए सकैत छथि। ओना सामान्यतः साहित्यहिमे ओ विशेषतः उपन्यासमे रागात्मकताक चित्रण ओकरा सहृदय-संम्वेद्य बनबैछ। इजोतमे एहि रागात्मकताक चित्रण बड़ सूक्ष्मता सँ कएल गेल अछि, तेँ ई अधिक हृदयग्राही भेल अछि। एहि उपन्यासमे अनेको पात्रक नैतिक पतनक चित्रण बड़ यथार्थ रूपेँ कएल गेल अछि। नारी-चरित्रक चित्रण यथार्थ रूपेँ कएल गेल अछि, चाहे ओ दीदीक सासुक दिआदनी होथु वा दीदीक माताक दिआदिनी लोकनि। अर्थ-लोलुप, ईर्ष्यासँ आन्हरि एहि महिला लोकनिक चित्रण लेखिका बड़ सहजता सँ ओ यथार्थ रूपेँ कएल अछि।

महाराज दरभंगाक बिलैंत जएबाक कालसँ लए आइ धरिक मैथिल समाजक बदलैत स्वरूपक चित्रण एहि उपन्यासमे बड़ सूक्ष्मताक संग अथ च यथार्थ रूपेँ कएल गेल अछि। मैथिलानी लोकनिक चित्र अंकित करबामे लेखिका पूर्ण सफल भेलीहि अछि। हुनका लोकनिक क्रिया-कलाप, ईर्ष्या-द्वेष आदिक वर्णन हृदयाह्लादक भेल अछि।

मिथिलामे स्वदेशी-बिलैंतीक संघर्ष एक ऐतिहासिक सत्य थिक जकरा एहि उपन्यासक मूल कथामे लेखिका बड़ सहजतासँ समेटि लेलैन्हि अछि। हमरहु सूनल अछि जे जखन बिलैंती घरक कन्या पुतहु बनि कए स्वदेशी लोकनिक घरमे अबैत छलथिन्ह तँ गृह-प्रवेशसँ पहिनाहिँ प्रायश्चित्त कराओल जाइत छल, नाना प्रकारेँ शुद्ध कएल जाइत छल। एहि बिहाड़िमे कतोक कन्याक नैहर छुटि गेल तँ कतोककेँ समाजहिसँ बहिष्कृत कए देल गेल। समाजक

धर्मान्धता, अर्थ–लोलुपता ओ कामुकताक चित्रण एहि उपन्यासमे बड़ मार्मिकतासँ कएल गेल अछि। स्वार्थपूर्तिक लेल केहनो कुत्सित कर्म करबाक लेल उद्यत लोकक चित्रण सेहो बड़ नीक जकाँ कएल गेल अछि। एहने चरित्र थिकीहि मिसरिया झाक पितिआइन।

आधुनिक समाजमे प्रचलित एक बड़ पैघ समस्या दिस लेखिका इंगिते टा नहि कएल अपितु एहि समस्याक समाधानहुक बाट देखाओल अछि। ओ समस्या थिक कन्या–भ्रूण–हत्याक। जँ माता लोकनि अपराजिता दाइक अनुकरण करथि तँ डॉ० अपर्णा कैँ जन्म लेबासँ केओ रोकि नहि सकैत छैक। सत्साहित्य ओएह कहबैछ जे समाजकैँ आदर्शोन्मुख करए। दीदी माने अपराजिता जँ डॉक्टरक क्लिनिकसँ भागि नहि आइलि रहितथि तँ हुनक पुत्रीक ने जन्मे होइतैक, ने ओ शिक्षिते भए पबितए ओ ने डॉ० अपर्णा बनि समाजक एहन उपकारे कए सकितए। किन्तु दोसर दिस अपराजिता दाइक लेल सासुरक बाट रुद्ध भए गैलैन्हि, स्वामी दोसर विवाह कए लेलथिन्ह। कहि सकैत छी जे हुनक भाग्याकाश तिमिराच्छन्न भए उठल। हुनक पति अर्थ–पिशाच छलथिन्ह। कन्याक लालन–पालन ओ विवाहादिमे व्यय करए पड़ितैन्हि, तैँ ओ भ्रूणहिक हत्या करबए चाहैत छलाह। किन्तु अपराजिताक चारित्रिक दृढ़ताक कारणेँ पुत्रीक जन्म सम्भव भए सकल। तिमिराच्छन्न रजनीक अवसान भेल ओ कनकाभ भोरक आगमन। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' – स्मरण भए अबैछ। तैँ हमरा एहि उपन्यासक नामकरण 'इजोत' पूर्णतः सार्थक बुझना जाइछ।

उपन्यासक लेखिका डॉ० नीरजा रेणु लब्धप्रतिष्ठ, ख्यातनामा कथा–लेखिकाक सङ्गहि भावप्रवण कवयित्री सेहो छथि। एहू उपन्यासमे उपनिबद्ध दुहू गीत हमर एहि कथाकैँ सत्यापित करैछ। अन्तमे, हम लेखिका कैँ हृदय सँ आशीर्वाद दैत छिऐन्हि तथा माँ शारदा सँ विनती करैत छिऐन्हि जे हुनक लेखनी कैँ दिनादुदिन गत्वर बनओथिन्ह। इति–

नवटोल — विनयावनत

३–१०–२०१२ ई. — **जगदीश मिश्र**

डॉ० तेजनाथ मिश्र-स्मारक न्यास, दरभंगा (बिहार)
स्थापित जुलाई १९९१ ई०

पञ्जीकृत कार्यालय - राघोपुर हाउस, राजकुमारगंज, दरभंगा

संस्थापिका - श्रीमती कामिनी मिश्र, धर्मपत्नी स्व० डॉ० तेजनाथ मिश्र पाहीटोल, मधुबनी।

न्यासीवृन्द :

सर्वश्री महिनन्दन सिंह, श्री शशिधारी सिंह, डॉ० श्री श्रीदत्त सिंह, डॉ० धीरेन्द्र नाथ मिश्र, श्री सिन्धुनाथ झा, श्री कमल नाथ झा एवं प्रो० श्री पिनाक नाथ झा।

न्यासक लक्ष्य :

१. शिक्षाक लेल लेल एवं नैसर्गिक विपदाक कालमे दीन ओ दुःखीकेँ अनुदान देब।
२. कैन्सर वा एड्स सदृश रोगसँ पीड़ित व्यक्तिकेँ चिकित्सार्थ अनुदान प्रदान करब।
३. मेधावी किन्तु निर्धन छात्रकेँ छात्रवृत्ति ओ शोधवृत्ति प्रदान करब।
४. डॉ० तेजनाथ मिश्र-स्मृति-व्याख्यान-मालाक आयोजन करब।
५. डॉ० तेजनाथ मिश्र संस्मारकक निर्माण करब।
६. पुस्तक वा पत्रिकाक प्रकाशन हेतु आर्थिक साहाय्य प्रदान करब।
७. औद्योगिक एवं शैक्षणिक संस्थानक स्थापना करब।
८. क्रीड़ा, ललित कला एवं सांस्कृतिक समारोहक आयोजन करब ओ।
९. नगद पुरस्कार प्रदान करब, आदि-आदि।

न्यासक क्रिया कलाप :

१. लक्ष्मीश्वर एकेडमी, सरिसब-पाहीक मैट्रिक परीक्षामे सर्वाधिक अङ्क प्राप्त कएनिहार दू जन छात्रकेँ प्रतिवर्ष गोल्ड प्लेटेड मेडेल तथा एक हजार ओ नओ सए टाका देल जाए रहल अछि।
२. सरिसब-पाही परिसरमे समय-समय पर निःशुल्क नेत्रदान शिविरक आयोजन होइत रहल अछि।
३. सार्वजनिक जलाशय आदिक जीर्णोद्धार ओ निर्माण कराओल गेल अछि।
४. न्यासक अर्थ-साहाय्येँ 'परम शिव' महाकाव्य 'शाक्त दर्शन एवं दश महाविद्या' तथा 'राधानयन द्विशती'क अंग्रेजी अनुवाद नामक ग्रन्थक प्रकाशन कराओल गेल अछि।

इजोत

अकादारुण बोनक अन्हारमे दिन आ रातुक अन्तर नहि होइत छैक। ओही बोनमे एकटा हरिणी सिंहक भयावह गर्जन सुनलक आ हरिणक छातीमे मूड़ी गोंति नुकएबाक प्रयास कएलक।

हरिणीके हरिणक स्पर्श नीक लगलैक। ओ निश्चिन्त भए गेलि। कखन ने कखन, ओकरा निन्न भए गेलैक।

सिंहक गर्जन बोनक आन आन जानवर सेहो सुनलक। ओ सभ भयभीत होइत रहल मुदा हरिणी निश्चिन्त भए निन्ने भेर छलि।

हरिणीकेँ एकाएक अपन पीठपर कोनो गरम धार बहबाक आभास भेलैक। ओ उठिकए बैसि रहलि। हरिण निपत्ता छलैक। कोनो भितरघातसँ ओकर पीठ शोणिते शोणिताम भए गेल छलैक।

एतबा गप्प कहैत कहैत दीदी चुप्प भए जाइत रहथि। आ जखन हम ई पुछैत रहियनि– 'तखन......तखन......' तँ हुनकर उत्तर रहैत छलनि– 'की......की....... की–की ने भेलैक.......।' से कहैत कहैत हुनकर आँखि नोरा जाइत रहनि, देह थर–थर काँपए लगैत छलनि, बुझि पड़ए जे ओ स्वयं भितरघातसँ पीड़िता हरिणी होथि।

ओहि समयमे हमर वयस बड़ कम छल। खिस्सा सुनबाक सऽख छल। आ दीदी आवेशसँ हमरा खिस्सा सुनबैत रहथि।

दीदी छटपटाइत हरिणीक कथा कहैत कहैत चुप्प भए जाइत छलीह। 'तखन की भेलै?' हम पुनः पुछैत छलियनि।

'धुर जो, तहूँ तँ सभटा गप्प के ठीके मानि लैत छिही। जे जगक रीत, से भेलै। हरिणी छटपटाइत रहलि, हरिणक बाट तकैत रहलि आ.......आ.......

अन्तमे, बोनक पातमे पीठ ओरि देलकै, ओकर शोणित बहब बन्न भ' गेलै....'

"......तखन.........तखन की भेलै.........? हमर जिज्ञासा छल। 'धुर, जो बतही, खिस्साक कहियो अन्त होइ छै? काल्हि आगाँ कहबौ....... एखन सूति रह, बड़ी राति भ' गेलै।" दीदी कहैत कहैत हँसए लागथि। हुनकर हास अट्टहास मे बदलि जाइत रहनि। हम हताश भए डेराए जाइत रही।

दीदी....... माने खूब गोरि नारि, नाक ठाढ़, खूब सुन्नरि हमर पीसी, जे बेशीकाल आङनसँ बाहरे, बूलए भाङए लेल चलि जाइत रहथि। बेशीकाल करिया काकाक आङन। कहियो कहयो ओ आनो गाम चलि जाइत छलीह-कतए, से हमरा ने बुझबाक काज, ने केओ हमरा कहिते छलीह।

इलाहाबादसँ जे गाम अएलहुँ से यात्रा बुझू जे हकलक्खी नोर कनाए देलक। पूरेपूरी बहत्तरि घंटा लागि गेलैक। कतहु हड़तालक कारणे रेल लाइन बन्द तँ कतहु पेट्रोलक महगीक कारणें बस, टेम्पो ठप्प। हमर रिजर्वेशन बम्बई-पटनाक गाड़ीमे छल। बनारसक कोनो छात्रक पुलिसफायरिंग मे मृत्यु भए गेल रहैक। से, मोगलसराय रेलखंड पर स्टेशने -स्टेशन गाड़ी रोकल जाइत रहलै। तीस घंटा मे इलाहाबाद सँ पटना आबि सकलहुँ। भूखे पियासे देह टुटि गेल छल। हमर छोटि बहिन, मुनियाक विवाह रहैक। माए कहने रहए जे आबि कए कोबरा घर ओ देहरि-धुरखुर लिखि देबैक। दीदी आब असक्क भए गेलि छथि, तँ ओ बेशी काज नहि करतीह।

हमरा तँ पटने धरि पहुँचैत पहुँचैत दम्म टुटि रहल छल। अस्तु, कोनो होटल मे जे किछु भेटल, से भोजन कए विदा भेलहुँ गामक हेतु। बस स्टैण्ड धरि पहुँचैत पहुँचैत देखैत छी जे बस स्टैण्ड सुन्न पड़ल छैक। पता लागल जे सरकारी बस मात्र चलि रहल छैक। सेहो, कहबा लेल पाँच टा जाइत छैक गाम दिस, किन्तु यथार्थतः दुइए टा। एकटा दस बजे भिनसर आ दोसर छओ बजे साँझ। एगारह बाजि रहल छल। सँझुका बसक प्रतीक्षा करबाक छल। तँ बीच मे विनीताक घर जाए समय बिताए ली।

विनीता हमर स्कूलक संगी। वर एतए कतहु कॉलेज मे काज करैत छथिन। बैगसँ पता बहार कएलहुँ। आ टेम्पो ताकए लगलहुँ। टेम्पो सेहो निपत्ता। एकटा रिक्शा भेटल। रिक्शावलाकें गन्तव्य स्थानक विषय मे पुछलिऐक। ओ कहलक जे तीस टाका लागत। बाप रे, हम तँ पाँच टाकामे जाइत रही टेम्पोसँ।

रिक्शाबलासँ पता चलल जे पेट्रोल बड़ महग भए गेल छैक आ प्राइवेट बस बला वा टेम्पो बला भाड़ा नहि बढ़ाए सकैत अछि। तकरे विरोध मे प्राइवेट बस टेम्पो चालक हड़ताल पर अछि।

हमर मोन में हौंड़ैत छल पेट्रोल महगीक मादे गप्प। गाम पहुँचलो पर, थाकनिक कारणे हम मुनियाक वियाह मे उपस्थित मात्र भेलहुँ। ने तँ हम कोबर घर लिखलहुँ, ने देहरिये घुरखुर सजौलहुँ। भानस भातक तँ कथे कोन, कखनहुँ दू चारि कप चाह मात्र बना दैत रहियनि अपन मायक संग देबा लेल।

........आ, दिमागमे भूत जकाँ नचैत रहैत छल। पेट्रोलक महगी, यातायातक समस्या, यात्री सभक कष्ट। ....तँ किछु हँसियो ली आब.........बड़ भेलै.....चिन्ता बेगरता.......। हम दीदी संगे आमक गाछी मे घुमैत रही। चलैत चलैत की ने की फुरल, दीदी के पुछि देलियनि– 'दीदी, हक्कैल डाइन की होई छै?' "किएक?"– दीदी आश्चर्य-चकित होइत पुछलनि। "हमरा होइए जे हम डाइन बनी।" "से की?"– दीदी अचकचाए गेल रहथि।

"से ऐ दुआरे, जे सुनै छिऐ हक्कैल डाइन गाछ हँकै छै। हमरा यदि केओ डइनपन सिखाए दीते तँ हाँकि लितहुँ गाछ आ एतेक जे बस, टैम्पोक मालिक अपन मोल देखाए रहल छैक, तकरा बुझा दितिऐ जो बिना पेट्रोलक सेहो यातायातक व्यवस्था भए सकैत छैक।........ आ तखन....... तखन......दीदी देश-विदेश मे एकटा क्रान्तिकारी परिवर्तन आबि जेतैक। लड़ैत रहओ, चीन-विएतनाम....... इरान-इराक, लागओ तेलक टंकी मे आगि। हम पूरा दुनिया के देखा दितिऐ...... गाछ पर चढ़ू आ घुमि लिअऽ सौंसे दुनिया........ऐ गाम से ओइ गाम.......ऐ शहरसँ ओइ शहर...... हम अत्यधिक उत्साह मे आबि गेल रही।

हम दीदी दिस एहि आशासँ ताकए लागल रही जे ओ हँसए लगतीह, मुदा हुनकर मुँह कननसुक भए गेल रहनि। 'रेणु, तो बताहि तँ ने भए गेल छें?' 'नै दीदी, हम गंभीरता पूर्वक कहि रहल छी।'

दीदीक गोर मुँह लाल भए गेल रहनि। आँखिसँ असोधारा नोर जाए रहल छलनि। दीदी, आँखिसँ नोर पोछलनि। थोड़ेक आगाँ एकटा हरफाक गाछ छलैक। हमर अङुरी पकड़ि ओही गाछतर जाए बैसि रहलीह। हमरो बैसाए लेलनि। कहए लगलीह –

–'रेणु, तोँ गिरह बान्हि ले जे जतेक फुरओ ततेक नहि बाजी। कहलो गेल छैक– 'जत फुरे तत बाजी नहि, जत रुचे तत खाइ नहि।' ई समाज बड़ अधलाह। तोरेसँ हाँसू लेतौ आ तोरे काटि देतौ। तोहर वयसमे हमरो बड़ उत्साह छले। काज करबाक सऽख, गप्प करबाक सेहन्ता। लोकक नीक करबाक आवेश। ओ सभ जतेक भ' सकल, से केलिऐ। मुदा की भेटल? दू कऽर अन्नक लेल मुहतक्की।

'यै, गुलाब दाइ, बड़की दीदी..... कत' गेलिऐ? कुमार कहबाक बेर भेल जाइ छै, बड़की काकी अहाँ सभकें ताकि रहल छथि.....' गुलाब हमरा सभकें तकैत–तकैत हरफा गाछ धरि आबि गेल रहथि। दीदी ठोरपर अंगुरी रखैत चुप्पे रहि जएबाक संकेत देलनि आ आङन दिस डेग झारलनि।

हमरा दीदीक सभटा गप्प बुझौअलि लागि रहल छले। ओही करतेबताक आङनमे सुन्न पड़िते कखनहुँ हम अपन जिज्ञासा पुनः प्रकट केलिअनि। दीदी आश्वासन देलनि जे कहियो निचेनसँ तोरा आओर गप्प कहबौ।

हम समय तकैत रहलहुँ। नैहर अबैत जाइत रहलहुँ। एक दिन दीदी संयोगवश एकसरमे भेटि गेलीह। ओ कहए लगलीह– 'हमर विवाह जहिया भेल तहिया आठ बरखमे बेटीक विवाह कराएब बड़ धर्मक काज मानल जाइत छलैक। बेशीसँ बेशी दश वा एगारह वरखक अवस्था धरिक कुमारि कन्याके समाज सहि सकैत छल। ओहिसँ अधिक बयसक बेटीके कुमारि राखब निन्दा ओ तिरस्कारक कारण बनैत छल। कन्याकें 'अजगि' कहि उपहास कएल जाइत छलैक।

तैं हमरो विवाह आठे बरखक अवस्था मे भेल। बाबूजी प्रसन्नतासँ नेहाल रहथि– बड़का पाँजिवला घरक जमाए भेटल रहथिन। अहाँक पीसा ओहि समयमे देखबामे चाकर चौरस रहथि, रंगमे किछु दब। हुनकर दोस महीम जखन तखन हुनकासँ चौल कर' लगलनि– "इह देखियनु ने, यैह ओहेन सुन्नर कनियाँ डेबताह। मुँह ने कान......बीच मे दोकान......।" अपन सुनरताइ पर हमरो बड़ गुमान रहए। से, भेलै ई जे ने ओ हेमरा कहियो टोकथि, ने हमही कहियो...... आ, से ओहि दिनुक कनिया–मनिया अपनहि पुरुषकें नहि टोकैत रहैक। ई लाजक गप्प.....वर टोकओ तँ टोकओ...... मौगी कोना टोकतै वरके?......."

एमहर, नैहर मे हमरा दुलार मलार बड़ हुअए। छोटो सन काज होइक तँ मङा लिअनु बुच्चीकें। केओ दुखित पड़ए, साधारण ज्वरो होइक तँ हमर बिनु उपाये ने, एतएसँ सवारी जाइत छल, एकटा छोट सन बाबूजीक पत्र आ हमर ससुर हमरा विदा क' दैत रहथि।

पुनः के ल' जइते सासुर! हमर सासुर मे सभ अपनहि धुनमे मस्त रहनिहार। दूनू समधिमे, अर्थात् हमर बाबूजी आ ससुरमे बड़ दोस्तियारे। हमर बाबूजी के बेर-कुबेर मे बुच्चीक बिना उपाये ने आ ससुर के हमर काजे ने! बेटा बड़ सज्जन, आज्ञाकारी छलखिन। कोना कहितथिन जे हमर कनियाके आनि लिअनु! ....आ एही सभक कारणें हमरा सासुरसँ एको बेर पुछारी करबा लेल केओ ने आएल। माएके आनि लागि गेलैक। एतेक पैघ धरक बेटी बिनु ससुरक बजाहटिक, बिना दिन अएने सासुर चल जाएत? नहि। घरक मर्यादाक बात छलैक। हमर बाबूजी सेहो पुरुखाह। अपन अभिमान ओ भंग नहि क' सकैत छलाह। से, फल ई भेलै जे हम नैहरे मे रह' लगलहुँ।

.......'हे बुच्ची, कनी हमर ओढ़ना द' दिय, आइ पिरुकिया बना दिऔ....., फल्लाँ गामक कुटुम्बक भानस क' दिअनु, फल्लाँ जीक आङनक करतेबता सम्हारि दिऔ........ ई सभटा करैत-करैत कखन पाँच बरख बीति गेल से बुझबे ने केलिऐ।

किन्तु हम नैहर मे रहैत छलहुँ। नैहर, अर्थात् मायक घरमे, अपन घर हमर ई छल नहि। से, आइ-माइक मुँहसँ सुनल गप्पसँ बुझि पड़ल। तखन? हमर घर कोन छी? एतए हमर जन्म भेल, पालल पोसल गेलहुँ, एखनहुँ रहिते छी..... मुदा, अन्तर आएल छै। ई बाबूजीक, ओ मायक, ओ भाइक.....आ हम्मर कोन....... एहेन वस्तु जे केओ ने छुबए, एहेन स्थान जत' हम अपनहि मोने रहि सकी........से, से कत' अछि? आइ-माइ कहैत छथि जे अहाँक घर मलारपुर थिक। आ बाबूजी ओतयक चर्चा नहि सुन चाहैत छथि। हमर अपन घर सासुरे भेल तँ हमरा रोकल किऐक गेल अछि एत'?........

ई सभ प्रश्न मोनकें हौंड़ेत छल। किन्तु बाजि नहि सकैत छलहुँ। बाबूजीक अभिमानक, प्रतिष्ठाक हानि होइतनि। जेम्हरे ताकू, ई भैयाक......ई मायक......मोन कचकि कए रहि जाइत छल। बेर बेर ई प्रश्न हौंड़ए लगैत छल मोनकें........ 'हमर की?' .....आ, तखन एक दिन फुरल जे एतए बाड़ी लगाबी। एही, बुढ़बा

दादाबला डीह पर तीमन तरकारी लगब' लगलहुँ। बाबूजी जऽनसँ माटि कोड़बा देलनि, बेढ़ लगबा देलनि।

ओइ बरख पानि खूब बरसलै। हम अपन बाड़ी मे सजमनि, झुंगनी, सोहाँस, सभटा लगौलहुँ। मेरचाइ आ सागक बीया छिटलहुँ। किछु दिनक बाद हरियर देखि कतेक प्रसन्नता भेल से की कहू? खूब तीमन तरकारी फड़ल। अपनहुँ आङनमे रान्हल गेल आ आनो आङनमे विलहि अएलहुँ – एतए हमरा एको बेर केओ ने कहए, 'ई नहि छूबू, ओकरा नहि दिऔ।' बुझि पड़ल जे ई हमरे छी...... अप्पन। बस, काते काते नव गछुली सभ लगाएब आरंभ कएलहुँ। ई सभटा गाछ हमरे लगाओल अछि। ई देखि माय, बाबूजी, भैया..... सभ प्रसन्न भेलाह।

पाछाँ बीच मे नेवो करौना, दाड़िम सभटा लगौलहुँ। ई जतेक गाछ देखैत छिऐ, सभटा हमरे लगाओल अछि ....दीदीक आँखिक प्रसन्नता देखबा योग्य रहनि।

एक दिन हमर बहिना सासुरसँ अएलीह तँ कहलियनि – 'चलू, हमर घरारी पर, अपन गाछ सभ देखाबी।' ....अयँ, ई की मलारपुर छिऐ? हे दाइ, अहाँ नैहर मे छी, नैहरमे। एतए अहाँक घरारी.......आ घरबला के?'..... हमरा भौजी हँसी क' बैसलीह। हमर करेज काँपि गेल। 'घरारी......., घरबला के?..........' ई प्रश्न दिनराति मोनके हौंड़ैत रहल। चुप्प रहबाक अतिरिक्त कोनो रस्ते नै छलैक।'

'तखन.....।' हम दीदीसँ पुछलिअनि। '.......तखन, फेर........ तोहर तखनक उत्तर की दिऔक?' हम नीक जकाँ बुझऽ लगलिऐ जे ई हमर नैहर छी, घर नहि। मुदा कोना जैतहुँ अपन घर। ओइ दिनमे बेटी अपना लेल....... सासुर जएबा लेल...... घरबलाक मादे...... किछु ने बाजि सकैत छल। नैहरक इज्जतिक सवाल छलैक। हम किछु ने बाजि सकैत रही। ....दिन बितैत गेलैक, आ हम बुझैत रहलिऐ जे ई हमर घर नहि थिक। हम ओझराइत रहलहुँ.......किऐक.......एना हमरा छोड़ि देल गेल अछि? बाबूजी किऐक ने सोचैत छथिन जे बेटीके घरक काज छै?.......'

ई सभ सोच माथके खाए लगैत छल........। मुदा, बेशीकाल एकरा हम अपना पर, अपना माथपर उघैत नहि रही। मौगी भ' के सोचब? अरे बा! ई तँ

घोर कलियुगाहिक लच्छन भेलैक।

.......आ चलि जाइत रही रुपना मायक संग लगनी गएबा लेल। गीत गएबा मे कोनो बन्धन नहि छैक। रुपना माय लगनी गबैत छलि। बड़ नीक भास–

.......हम्मर की अछि...... हमर घर कोन भेल........ रातुक गहन अन्हार मे सोच बढ़ि रहल छल। .....सोचैत सोचैत निन्न भ' गेल। '.......बुच्ची .... आइ सुतले रहबै की?'..........शनेचरी हाथमे बाढ़नि लेने छलि। घर बहारि रहलि छलि।

'.......ऊँ.......हूँ........, उठैत छी।' हम अनिच्छापूर्वक उत्तर दैत ओछाओन छोड़ल।.......आइ हमर भौजीक अबैया छनि। जनमौटी बच्चा ल' के, पुत्ररत्न.... बाबाक वंश बढ़ौनिहार नेना आइ पहिले पहिल एहि घरमे औताह। आइ हमर भौजी नैहरसँ सासुर आबि रहलि छथि। चुम्मन मिश्रक बेटी, महादेव झा पाँजि, हमर भौजी देखबामे ओतबे सुन्नरि जतेक नीक हुनकर बात व्यवहार, से घरक इजोत ल' के, कुलदीप ल' के आबि रहलि छथि एहि घरमे।

सुनने छलिऐ, ओही बुनिया मायक मुँहे जे छठियारी ल' के गेलि छलि जे बच्चा एन मेन हमरे सन– अपन पीसी सन छैक। सूप सन छाती भ' गेल रहए। भौजीक घरके भोरे अपनहि हाथे निपलहुँ। गोबरसँ खोढ़ा काटि कमल आ माछक पाढ़ि देवालमे देने रहिऐ। गोसाउनि घरक देहरिपरक पुरइन, आरत के रंगसँ चकचका देलिऐक। आइ–माइ औती ने। गाम भरि अङने अङने जाए अपनहि हकार देलिऐ– 'हमर भातिज आओत, दूर्वाक्षत दिऔ......।' कजरौटी मे काजर पारलहुँ। नऽव गेंठा–गेंठी मे हींग जमाइन बन्हलहुँ।

.........आ, तइ दिन माए की कएलक से बुझलिऐ? हमर जे नेनाक कनिया पुतरा खेलएबाक बड़का पौती छल, तकरा झारि पोछि कए अपन पोताक उकटन, बाती, हरदि जाफर, तेलक शीशी–ई सभटा बच्चाक आङ ओङारबाक सामग्री राखि देलक। हमर कनिया पुताराके एकटा चेथरामे नुरिया कए कतहु कात लगाए देलक। अधलाह लागल छल। पुछलिऐ तँ कहलक जे ई अहाँ ल' के की करब? पैघ भ' गेल छी।

तत्काल तँ हमरो हँसी लागि गेल छल। ओइ पौतीपर कीड़ा मकड़ा सेहो लागि गेल छलैक। हमरा सिबियामे आ बाड़ी झाड़ी करबामे बेशी मोन लगैत

गेल– कनियाँ पुतरा खेलाएब सत्ते छूटि गेल रहए।

आ, से........ओइ दिन जहिया वएह कनिया पुतरा नुरिया कए कात लगा देल गेल तँ बुझि पड़ल जे कोनो अमोल वस्तु छूटि रहल हुअए। कछमछी लागि गेल छल। कोंढ़ फाटि रहल छल। बेर बेर मायक कहल बात मोनकें हौंड़ैत छल – 'आब ई अहाँ ल' के की करब?'

हमरा बुझि पड़ल जेना कतहुसँ केओ पूछि रहल हुअए– 'आब अहाँ की भ' गेल छी? कनिया पुतरा खेलएबाक वयस नै अछि आब। तखन......तखन.....अहाँ की भ' गेल छी?'

बेर बेर झप्पापर नजरि जा कए अटकि जाए। झप्पा आब अपना मे मगन छल। ओहि पर राखल पौती भौजीक घर चल गेल छलैक। ओहि झप्पा पर एखन चिल्हकाक समान राखल छलैक– आङी, टोपी, तुरौरा, सुजनी, कप्पा आदि। पीयर–पीयर किछु नव आ किछु पुरान। बच्चा औतैक तँ लगले सँ ओकर सभक प्रयोजन हेतैक। पहिने मोनमे एकटा आवेश......किछु गुदगुदी सन भेल......।' से, बेशी–काल नहि रहि सकल। ओ गुदगुदी तिरोहित होइत गेल, मेघाच्छन्न आकाशक मेघक टुकड़ी जकाँ आ कोढ़मे कनिएँ–कनिएँ दर्द बुझाए लागल छल। तकियासँ छाती दाबि सूति रहलहुँ।

हमरा कोनादन लागि रहल छल। किछु सोहनगर नहि – सभटा उदास–उदास। भातिजक आएब, आङनमे सोहर होएब, आइ–माइक संग उपचार–वार्ता, सभटा यन्त्र जकाँ चलैत रहल। तैयो....... तैयो........, हमरा सभटा कोना दन लागि रहल छल। किछु नीक नहि लगैत छल.......किएक....... किऐक........' हम अपनहि मे, तबाह भए गेल रही। बेश दिन धरि, निन्न निपत्ता भए गेल। आँखि खुजलक खुजले रहि जाए- भरि राति, तराटक लागल। देह बिमरियाह हुअ' लागल छल। मुदा धन्न कुमरजीक पुरिया, जे चारिए खोराकमे निके हुअ' लागल रही।

ओ कहलनि जे बाड़ी–झाड़ी करबामे नीक लगैए ने...... जतेक करब, ततेक निके रहब।......आ......तैं........ ई गाछ–बिरिछ........, हमरे लगाओल थिक।

कुमर जी बैदेटा नहि, साक्षात भगवान रहथि। हमरा निके क' देलनि, बुझि पड़ल जे पातालसँ केओ धरतीपर आनि देने हुअए।

........आ से, ओ पातालमे समएबाक आतंक कहियो कहियो पुनः घेरि लैत छल।

से ओही दिन, जे भौजी हँसी क' देने रहथि, 'ई अहाँक कत' सँ आएल? ई की मलारपुरक गाछी छिऐक?' एतबा बजैत बजैत दीदीक कंठ बाझि गेल रहनि। आँखिसँ असोधारा नोर जाए रहल छलनि।

एखनहुँ, दीदीक आँखिसँ नोर जाइए रहल छलनि। साँझ भ' गेल छलैक। पच्छिम दिस मेघ लाल हुअ' लागल छलैक। सूर्य क्षितिजके छूबए लागल रहथि। ओम्हर ताकब कष्टकर छलैक, तैयो आँखि ओतहि अँटकि गेल। आकाश, शोणिते शोणिताम भ' गेल छलैक। पच्छिम लाल भ' गेल रहैक, गरम-गरम।

पछबा बसात सेहो गरम भ' गेल रहैक। ठोर सुखाए रहल छल। पियास सेहो बड़ जोरसँ लागल छल। ....'आब........आङन चल........' दीदी उठि कए विदा भेलीह। बजैत बजैत ओ अन्तमे कहलनि– "अप्पन घर, अप्पन कैञ्चा, बनाकें राखिहें रेणु। अपन घर नहि रहने लोककें कुकुरक गति भ' जाइत छैक।

x x x x x x

परोपट्टाक ई पहिल बेर एहन भेल छलैक जे कनहू ठाकुर ककरहुसँ हारि गेल रहथि। आ सेहो मिसरीसँ जे अबल दुबल कहबैत छल।

वएह, तेलियाक सटले गामक पूब भऽर, पंचगछिया छैक, तकरे आइ नीलामी छलैक। पंचगछिया कोनो गाछी नहि छिऐक। पांच टा आमक गाछ, मिसरिया झाक प्रपितामह ओहि स्थान पर लगौने छलाह। ओ अपनहि हाथें गाछी लगौने रहथि अपन जमीन पर। ताहि दिन में बाबू भैया अपन जमीन पर नहि जाइत रहथि। जमीन जोतब कोरब छोटका लोकक काज होइत छलैक।..... आ से, झूलन झा अपनहि हाथे गाछ रोपने छलाह।

मिसरिया झाक पितामह, दुकौड़ी झा, राजमे भनसिया भ' गेल रहथिन। से, हुनका कोनो वस्तुक अभाव नहि रहनि। संगहि कुटुम्बके, चौअन्नी रोज से भुलकुन झा राजदिससँ सभ सोतिकें बँटैत रहथिन। एना के, तीस दिनुक साढ़े सात टाका महीना भइए जाइत रहनि। एहिमेसँ, ओ चारि टाका धरक मौगीक वास्ते खर्च करैत रहथि– दू टाका अपन घरवालीकें आ एक-एक टाका दूनू भावहुकें। घरक महिला सभ अपनाकें भागमन्त बुझथि। एतेक एतेक पाइ आन

आङनक मौगीकें सेहन्ते रहै छलनि– एक टाका मास। एतेक मे दुकौड़ी झाक घरक लोकवेदके धोबिया, नूआ रंगबाक, सुपारी, गामगामसँ अएनिहारि खवासिनीक विदाइ सभटाक खर्च ऊपर भ' जाइत रहनि। चाउरक मुठिया जे रखैत छलीह से काज करतेबता मे रंगरंगक नूआ कीनि पहिरैत जाइत छलीह। दुकौड़ी झाक घरक महिला लोकनि सुखी सम्पन्न कहबथि।

.... से, मिसरिया झा सुखी सम्पन्न रहथि। अहुना, राजक भनसिया भ' के खेत पर जाएब इज्जतिक प्रश्न रहैक। महाराजक प्रतिष्ठाकें ध्यानमे राख' पड़ैत छलैक। ई बात जे दुकौड़ी खेत पर जाइत छथि अपनहि, जऽन बोनिहारक पीठपर रहैत छथि, से यदि महाराजक कानमे पड़ि जैतनि तँ ओ खिसिया जैतथिन, नोकरियोसँ हटा सकैत छलखिन। दुकौड़ी महाराजक कृपापात्र छलाह। भनसिया होइतो ओ सभामे बैसैत छलाह। ततबे नहि, एक ने एक बेर महाराज हुनका दिस ताकिकए अवस्से मुस्किया दैत छलखिन। आन आन दरवारीकें तँ एकर सेहन्ते लागल रहि जाइत छलैक। दुकौड़ी दोसर दरबारी सभक आँखिक किरकिरी बनल रहथि।

.... से, दुकौड़ी झा खेत पर कहियो ने जाइत रहथि। जखन देशसँ अंगरेजक राज समाप्त भ' गेलैक, जमीन्दाररी सेहो चल गेलैक, जमीन्दार सभ अपन अपन नोकरक छटनी कर' लगलाह, दुकौड़ी झा सेहो छाँटल गेलाह। हुनकर नोकरी चल गेलनि।

खाएल पीअल देह, रइसी शानमे रहल लोक दुकौड़ी झा कहुना, किछु खा लिअ', किछु पहिरि लिअ', से दुकौड़ीक स्वभावमे नहि रहनि। फोड़नमे जावत हींग, जीर आ तेजपात नहि पड़ैक, सिलौट पर पीसल धन्नी, जीर, मरीच, सोंठि, दालि-चीनी, दूनू तरहक अणाची नहि पड़ैक रामरुचमे, माछमे जावत मेही क' पीसल सरिसो मेरचाइ आ ऊपरसँ आमिल नहि पड़ैक तावत भोजन की कोनो भोजन भेलैक? भोजन में एक्कोबेर माछ हेबैक चाही, दू टा लटपट आ एकटा तरुआ कमसँ कम आवश्यके होइ, तुलसी फूल वा सतरिया धानक चाउर नीक होइत छैक। राहरिक दालि घीसँ छौंकल रहबे करए - आ सभसँ आवश्यक होइत छैक अँचार आ सरइकट्टा दही - एहि सभक बिनु भोजन की कोनो भोजन भेलैक? दुकौड़ी झाक भोजनक नियम मे दू प्रकारक अचार-आमक फाड़ावला आ नेबोक कटुआ, तइ संग नेबोक कटुआ, तइ संग दोलंगी

नेबोक फाँक, लौंगिया मेरचाइ आवश्यक रहनि। खेरहीक दालि जँ होइ तँ ओहिमे करौना आवश्यके रहैक। एहि नियममे जँ उन्टा पुन्टा होइक तँ दुकौड़ी झट थारी उनटाए, पएर पटकैत भनसा घरक ओसारासँ दलान पर चल जाइत रहथि। पास पड़ोसक लोकके़ं बुझबामे कनेको भाङठ नहि होइक जे आइ दुकौड़ीक थारी परसबामे अनट विनट भेल छैक। ओ पएर पटकैत महुआ गामक तेरहो पुरुखाक उद्धार कर' लागथि। एकाध घंटाक बाद हुनकर मोन थोड़ेक ठंढ़ा होइत रहनि तँ सरकी लगसँ महुआवाली, अर्थात हुनकर पत्नी थपड़ी दैत रहथिन। थपड़ीक शब्द एकर सूचक छलैक जे आब दोसर बेर थारी साँठल गेल अछि, उचित संशोधन क' देलिऐक, कृपया पीढ़ी पर पुनः आबी आ भोजन करी। दुकौड़ी झा के एहि थपड़ीक स्वरक प्रतीक्षा तीव्र रहैत छलनि। पेटमे बिलाइ जे कूदि रहल छलनि। ओ अपन पुरुषार्थक प्रदर्शन करैत, अर्थात् भनभनाइत महुआ गामक उद्धार करैत द्रुतगतिएँ आङन आबि पीढ़ी पर बैसि रहैत छलाह। दुकौड़ी झा पत्नीक एही थपड़ी वला ध्वनिक अतिरिक्त किछु ने सूनि सकैत रहथि, देखबा वा बुझबाक तँ कथे कोन। हुनका एहिसँ कोनो मतलब नहि रहनि जे दोबारा चूल्हि जरएबा जोग सुखाएल चेरा वा पतरका खुघरी अछि वा नहि। बेशी काल महुआवाली सनेचरी सँ पतलोइ मङा लैत रहथि आ तकर बदलामे दू कऽर भात राखि दैत रहथिन। आब, हुनका तीनू देयादिनीकें हाथ खर्चवला टाका नहि भेटनि। राजसँ सोति सभके चौअन्नी देवापर रोक लागि गेल रहैक- जमीन्दारी चल गेल रहैक तँ आमदनी सेहो बन्न भ' गेल रहैक। दुकौड़ी झाक आङनसँ लछमी पड़ाए लागल रहथिन। बस, बाँचि गेल रहैक तँ दुकौड़ीक जमीन्दारी हिस्सक। मौगी सभ तँ एक बेर बुझि गेलीह तँ कपार पर हाथ दए अपनाकें संयत कए लेलनि मुदा पुरुख मानुख के के बुझाबओ- जमीन्दारीक ठाठमे रहनिहार लोक.....।

एहेन बात नहि छैक जे दुकौड़ी झा दरभंगा राज छोड़ैत काल किछु नहि पौलनि। किछु ने किछु विदाई हुनका भेटले छलनि, ओ से बात गुप्त रखलनि। किन्तु, से बड़ जल्दी सधि गेलनि। नहि सधलनि, तँ अपन बहसल हिस्सक-नीक निकुत खएबाक इच्छा। हुनकर हाथ जमीनपर लागि गेलनि। ओ जमीन बेच' लगलाह। अपन आदति पर हुनका अपनो वश नहि रहनि। जमीने बेचबाक क्रम मे, जे गाछी रहनि से एकटा बजाज सए टाका मे कीनि लेलखिन। दड़िभंगाक गुदड़ी बजार लग ओहि बजाजक दोकान रहनि। ओ बजाज प्रत्येक दशमी मे

महाराजक हेतु अपना दोकानक कपड़ा पठबैत रहथिन। महाराजके छेदीलाल बजाजक दोकानक कपड़ा बड़ पसिन्न पड़ैत रहनि। दुकौड़ी झा तहीमे दरचौठ करैत रहथि – से, बजाज बूझितो अनठा दैत छलाह। दुकौड़ी झा आ बजाजमे तही ल' के दोस्ती रहनि।

दुकौड़ी झाकें, पंचगछिया बेचलासँ सए टाकाक आमदनी भेलनि। ओ, ओही दिन, कुलदेवी के छागर बलि देलखिन। दुकौड़ी झाकें हाथ पर सए टाका आएल रहनि। भरि गौंआके भोज खुऔलखिन – सादा सादी। बस, मांस भात।

तावत मिसरिया झा पाँचे बरखक रहथि। माए भुनभुनाइत–भुनभुनाइत भोजन बनौने रहथिन। पितामही गुमकी लधने रहथिन, एकदम्म सर्द – जाड़क कुहेस सन।

'........ खेत बेचि बेचि भोज करब आ तखन कहबै छथि बड़का लोक' सोति। एहिसँ तँ हरबाह चरबाह नीक, जे जोति कोड़ि खाइत अछि– अपन कमाएल बोनि तँ हाथमे रहैत छै......। .....'की बजलहुँ....की बजलहुँ.....' बाबू लेल ई सभ बाजि रहल छी.......हमरे बापक कमाइ आ.....। मिसरिया झाक पिता, भोला झा पत्नी पर गरज' लगलाह।

......'हँ......हँ बाजब..... काल्हि की खाएब तकर ठेकाने ने आ आइ भोज करै छी। पत्नी सेहो जोरसँ बजलखिन।

बाता–बाती आगाँ बढ़लैक। मिसरिया झा कें मोन छनि, हुनकर पिता माएकें कसिकए धुमुक्का देने रहथिन, भरि टोलक लोक एकट्ठा भ' गेल रहैक।

टोलक लोक सभ दू गोलमे बँटि गेल रहैक। खूब घोंघाउज भेल रहैक।...... आ मिसरिया झाक मायक खूब निन्दा हुअ' लगलनि 'पुरुखसँ मुँह लगौतीह तँ एहिना हेतनि......।'

देखैत देखैत दश वरख बीति गेलैक। मिसरिया झाकें मोछक पम्ह दिअ' लागल रहनि। हुनकर मायसँ आइ माइ लोकनि हँसियो करथिन– 'आब तँ मिसरीक वियाहो हेतै कि ने.....?'

माय विरोधे जकाँ करैत बाजथि– "कथी पर?" .....'एना किऐक बजैत छी। बेटा थिक बेटा। कोनो कि ओ बेटी थिक अहाँक, जे एतेक चिन्ता करैत छी....., 'आइ–माइ सभ बुझबथिन। मिसरिया झा चुपचाप सुनैत रहैत छलाह।

पिता सदिखन पढ़बा लेल कहैत छलथिन। हुनकर पोथीक, स्कूलक फीसक जोगार ओ कइए दैत रहथिन। देखैत देखैत मिसरिया नवम वर्गक छात्र बनि गेल रहथि। पढ़बा मे मन लगनि, नीक अंकसँ पासो होथि– आ ताहू सँ बेशी मोन लगनि चारि गोटएक गप्पमे।

बात जमीने टाक नहि छलैक। परोपट्टाक इज्जतिक सवाल रहैक। जखन कनहू ठाकुर बोली जीति गेल रहथि, तखन बजबाक बेर बीति गेल रहैक। हुनका सोझाँमे मिसरिया झा के? ककर ककर ने बेर विपत्ति सम्हारनिहार कनहू ठाकुर, ओ जखने टाका निकाल' लगलाह तँ सभकें चुप्प भ' जएबाक चाही– से मिसरिया झा पाँच सएक बदला मे हजार टाकाक बोली लगा देलनि। सभ एक दोसरक मुँह तकिते रहि गेल। केओ आश्चर्य मे रहए तँ केओ ईर्ष्यामे। किन्तु एहिसँ आगाँ बढ़बाक साहस ककरहु ने रहैक। सभ एक दोसरक मुँह ताकए लागल।

बात जे हुअए, जमीन मिसरिया झाक नामे भ' गेल रहैक। मिसरिया झा अपन पुरुखाक गमाओल वस्तु अरजि लेने रहथि। लोक सभकें नीक नहि लागल रहैक।

गाममे घोंघाउज, गोलैसी आरंभ भ' गेल छल। कनहू ठाकुरसँ घरे–घर उपकृत छल। तैं हुनकर हीनताइ गामक लोक बर्दास्त नहि क' रहल छल।

कनहू ठाकुर ककर ककर ने श्राद्ध करबौलनि, उपनयनक अवसर पर बाँस देलखिन, वियाहक अवसर पर टाका, आ कतिकहरिमे, जखन घरे घर चूल्हि पजारब बन्न हुअ' लगैत छलैक तँ सवैया धान वएह दैत छलखिन। बेशी घरमे कनहू ठाकुरक ऋण पैंच लगले रहैत छलनि। लोक कनहू ठाकुरसँ डेराइतो छल। .... से, आइ मिसरिया झाकें कनियो डर नहि भेलनि कनहू ठाकुर सँ उपरौंझ करबामे।

"ऐं रौ, मिसरियाकें एतेक टाका अएलै कतऽसँ? यैह, बरख दिनसँ कलकत्ता जाइए, अबैए। आ, तही मे ई हजार टाका अरजि लेलक ..... ए?"– मोहन ठाकुर आश्चर्यित होइत बजलाह।

"सएह......देखू ने...... ई नोकरी तोकरी नहि करैत हैत। कतहु हाथ साफ कएलक अछि"......रामनाथ एक डेग आगाँ बढ़लाह। दलान पर गप्प सरक्का जोर पकड़ने छल, जकर आशय ई छलैक जे मिसरिया झा चोरि कएके

कलकत्तासँ आएल अछि आ ताही कैञ्चा ल' के पँचगछिया पर बोली जीति लेलक।

........बसातक वेग जकाँ हू......हू करैत कतऽ सँ ने कतऽसँ मिसरिया झा आबि जुमलाह आ कसिकए कनपट्टी लगा दू थापर रामनाथकें दए जहिना आएल रहथि तहिना चल गेलाह। बजलाह किछु नहि।

रामनाथ खसैत खसैत बाँचि गेल रहथि। ई गप्प जंगलक आगि जकाँ पूरा गाम पसरि गेलैक।

मारि मोकदमा जमीनक खातिर होइते छैक। से, हमर दादाजी, अर्थात् दीदीक पिता नामी गिरामी धनिक आ प्रतिष्ठित व्यक्ति। ओ एहेन एहेन कतेको मामिला के सपटियौने रहथि। रामपुरक सत्यनारायण ठाकुर हुनकर बड़का दोस्त आ परोपट्टाक नामी वकील।

दुकौड़ी झा पहिनहुँ हुनकर सभक चर्चा करैत रहथि। जे भोला झाक ओतए सन्हौलीसँ कथा आएल रहनि। सोमेश्वर ठाकुरक कन्यासँ........। सोमेश्वर ठाकुर पैघ जमीन्दार। किछुए दिन पहिने धरि, दरबज्जा पर हाथी रहैत छलनि। भोला झा अपन पुत्रक अड़ारिसँ चिन्तित रहैत छलाह। मानल जे हुनकर पिता खेत पथार बेचि बिकनि देलखिन, तँ जकरा ओकर लोभ छैक से भोगओ। हमर भागमे नहि अछि......। मुदा, पुत्र एहि मतक नहि छलखिन्ह। हुनका मन छनि जे माएकें ओहि जमीनक खातिर कतेक नोर बहल छै......। मिसरिया झा पितामहक गमाओल धनकें हासिल करबा मे जी जान लगा देताह।

सोमेश्वर ठाकुरक कन्या मे बेटाक कथा आएल अछि, से बुझि भोला झा प्रसन्न भए गेलाह। मासक भीतरे स्वस्ति दए देलखिन्ह। ....से, दीदीक विवाह मिसरिया झासँ भए गेलनि – खूब धूमधाम सँ। दूनू घरक कुटमैतीसँ कनहू ठाकुरक पार्टी कमजोर पड़ए लगलनि।

........जाड़क अन्त। वसन्तक आगमन। वसन्तक हवाक झोंक धूरा आ गरदा लेने सोमेश्वर ठाकुरक हवेलीकें जगजियारक' रहल छलनि। जगजियार एहि अर्थमे जे लोक सभ चूरा, दही, लड्डू जलखइ क' रहल छल। आइ परोपट्टाक नामी गिरामी व्यक्तिक पुत्रक उपनयनक तैयारी अर्थात् बच्चा लालक कुमरम छियनि। मास दिन पहिनेसँ घरहट मे लागल जन आ खबास लाल पीयर धोती सभ रंगि रहल अछि। भगवतीकें आँचर, आरत आइए पड़तनि। कुमारि

भोजन आइए छिऐक। ....आ, तखन आइ माइ लागि गेलीह बरुआक आङ ओङारबामे '.......कओने बाबा हे.......सुनहर गढ़ाओल........ मेथी.......सरि हे उपजाओल' कओने अमा पीसथि कसाय कि......बरुआ ओङारब ....' मडबापर गीत टोपटहंकारसँ गाओल जाए रहल अछि। कुमारि भोजन, गौंआ सभकें नोत, गाम गाम लिआओन। विशेषतः सुआसिनकें। सभटा पूरा भ' गेल छैक।

बरुआक मौसी, पीसी, नानी, दादी, सभ नऽवे नूआ पहिरि आह्लादित छथि। 'पीअर-पीअर नेबुआ, ओकर हरियर हरियर डारि छैक हे.......हरियर पात छैक........' गीतक धुनि टोपटहंकारसँ गबैत रहैत छथि।

एही उत्सवमे बहुत दिनपर आबि रहल छथि मिसरिया झा - बरुआक बहिनो, अपन बहिनो।

अपरादाइकें संगी सहेली सजाए रहल छथिन गोरि-नारि, सुन्नरि अपरादाइकें। 'अपरा दाइ गोरि सुन्नरि, मिसरियाकारी खट-खट्......' अपरा दाइकें भाइ कचकचाए रहल छथिन। अपरा दाइ कचकचाए लगैत छथिन। छोट भाइ दौड़ि कए बहरी पड़ाए जाइत छथिन। अपरा दाइ खेहार' लगैत छथि, किन्तु भाइ भागि जाइत छथिन, बहरी दिस। आङनक दुरुक्खा लगसँ अपरा दाइ घुरि गेलीह। बहरीमे कुटुम्ब लोकनि आएल छलखिन्ह। आइ कुमरम छिऐक।

बहारमे कुटुम्ब सभ बैसल छथिन। अपरा दाइकें बहरी जाएब मना छनि। आइए ओझा सेहो औताह।

........साँझमे, जुटिका बन्धन लेल करिया काका आङन अएलाह। स्त्रीगण लोकनि घर गेलीह। जुटिका बन्धनक गीत आरंभ भेल......... कि तखने अपरा दाइक अट्टहाससँ गीत गाइनि लोकनिक स्वर दबा गेल...... हिनका ....हिनका .... देखियनु ....अपरा दाइ एकटा लालटेनक इजोत बोकरैत कोनो महिलाक मुँह पर देलखिन। ओ के छलीह, ताहिसँ पहिने लोक सभ अवाक् भए गेल - आतंके। अगबे शोणित बोकरि रहलि छली ओ महिला। आ ई....... छौंड़ी एहेन जे हँसने जा रहलि छलि। 'ई....... ई........ अहाँ सभकें शोणित देखाइए.......... देखियौ तँ ओरियाके........।' अपरा दाइकें हँसैत-हँसैत पेटमे बगहा लागि रहल छलनि।

'अँय, शोणित गुलाबी रंगक........?' आइ-माइ चिकरलीह। 'हँ यै,

आब जे सभ कोहा बला चीनी खाइए तकर शोणित गुलाबी भ' जाइ 'छै........' अपरा दाइ स्पष्टीकरण देलनि।

तैयो, केओ ने बुझि सकल। ....'हे देखियौ........ भड़ार। एतए एकटा कोहामे चीनी राखल छै आ दोसरमे गुलाबी रंग.......। से एकटा बिलाइ फक्के फक्का चीनी बड़ी कालसँ पार कएने जा रहलि छलि। हम इजोत कात कऽ देलियै। आ हाथ आबि गेलै गुलाबी रंगपर।'

सभक आतंक तँ दूर भइए गेलैक, संगहि ठहक्का पर ठहक्का होइत गेलैक। रंगबाली दाइ लोकक जुटानसँ पहिनहि केमहर गेलीह, कत' पतनुकान लेलनि से केओ ने बुझि सकल।

परात भने उपनयन आरंभ भेलैक। लताम वाली काकीकें अएबामे देरी भ' रहल छलनि। हुनका बिनु गणेशक गीत, अबिरदय (अभ्युदय)क गीत कोना आरंभ हेतैक। ओ सभसँ नीक गीतगाइनि, आ जओं केओ पहिने गीत आरंभ क' दितै तँ हुनका तामस उठि जाइत रहनि, भरि दिन कचकचा कचकचा कए गारि कथा कहैत रहि जइतथि। तै डरे केओ गणपतिक गीत आरंभ नहि क' रहल छल। बुलनी माए कें बरुआ माए हुनकर आङन पठौलखिन। लतामवाली काकी मुँह झँपने कुहरि रहलि छलीह। ओढ़ने तरसँ बजलीह– 'जाउ यै बुलनी माए, भरि राति ज्वरे तबाह छी। आइ माइ लोकनिकें कहि दिअनु जे हम नहि आबि सकब, जेहने तेहने गीत गाबि लेथि.......।'

.... बुलनी माए आओर लग चलि गेलनि। ओढ़ना मुँहपरसँ उठाए माथपर हाथ देमए लगलनि– 'ऐँ यै बौआसिन, मुँह तँ लाल टरेस भऽ गेले।' ....'हँ यै, बड़ जोर माथो दुखाइए........' लताम वाली अपन आँचरसँ मुँह पुनः झाँपि लेलनि.........। तैं ने कहलहुँ जे हम नहि आबि सकब.......' बुलनी माए बात बुझि गेलि। साँझुक घोल फचक्का ओहो देखने छलि। ओ आँचरसँ अपन ठोर दाबि लेलक। समाद सभकें कहि देलकनि। ....उपनयन काल साँझ मे लतामवाली मिसरिया झा कें बजबौने रहथिन– 'एतेक दुखित छी, आ हम सभ एके परपितामहक सन्तान छी, हमर जिगेसा नहि करताह ओझा?' मिसरिया झाक स्वागत सत्कार सेहो भेल रहनि। उपनयनक तेसरा दिन हरबिर्रो उठि गेलैक। ओझा निपत्ता छथि। ओझा, अर्थात् मिसरिया झा। मिसरिया झा अर्थात् दीदीक वर-हमर पीसा। ई गप्प दीदी दिना दिनी हमरा सुनौने रहथि।

'ओझा किएक चल गेलाह?'.........सभ एक दोसराकें पुछैत छल।

'हमरा तँ बुझि पड़ैए जे कनियासँ भेंट नहि भेलनि तेँ चल गेलाह' चएनपुर वाली काकी अनुमान लगौलनि– एतेक दिनपर आएल रहथि आ कनियाँक मुँहो ने देखलनि तँ.......।

'ऐँ........भेंट कोना होइतनि– बाबीके अपना घरक खोध बेध पसिन्न नहि होइन। जानिए कए, करतेबतामे अएलाह। आङन दसलोकी छल, हम एतेक घर कत'सँ आनू? लोक वेदसँ हुनका मतलबे कोन छनि?'

'हुनका नै मतलब रहनु मुदा हिनका वा हमरा सभके तँ जमाएसँ मतलब अछि.......' चएनपुर वाली हारि माननिहारि नहि रहथि।

........'जवान जहान बेटी तँ हिनके माथपर छनि।'

'हे यै कनिया, हम कोनो बाँझ बाँझिल नहि छी। दू कऽर हमर बेटी खाइए तै लेल दोसराके एते.......तेल जरए तेलीकें आ किदन फाटए मसालचीके........'

'अधलाह मानि लेथु मुदा हम कहबनि उचिते बात। आइ धरि केओ अपन बेटीके राखि सकल ए.........'

'आउ.....जाउ सम्हारू अपन धीया के........' दादी बेशी उत्तेजित भ' गेल रहथि। चएनपुर बाली काकी डेराकए चुप्प भए गेलीह। अपना आङन चलि गेलीह।

मुदा, गप्प एतबेसँ सोझरेलै नहि। ओझा जे पड़ाकए चल गेलाह से कोनो नीक गप्प नहि कएलनि। चिन्ता सभकें छलैक – ओझा किएक पड़एलाह, कतऽ गेलाह आदिक। किन्तु खुलिकए गामक लोक लग ई स्वीकार करब जे ओझा सत्ते रूसल छथि, घरक मर्यादाक गप्प रहैक।

'नहि........नहि, हमरा तँ ओझा कहनहि रहथि साँझखन जे हमरा बड़ जरूरी काज अछि, गाम जएबाक अछि........' दादा बाजल रहथि।

किन्तु, दीदीक मोन खूब उदास छलनि। कालक्रमे ओ दुखिताहि भए गेलीह। दीदी ज्वरसँ तबाह रहथि। बैदजी, हुनका चारि पुरिया दवाइ देलखिन आ कमसँ कम चारि दिन धरि उपवासमे रहथि, जल मात्र, सेहो जँ बड़ माङथि, तँ दिअनु, से कहलखिन।

वैदजी के यश भेटलनि। दीदीकें ठीक पन्द्रहम दिन ज्वर छोड़लकनि।

सुखाकए काँट भए गेल रहथि। हुनका बजबा मे बेशी कष्ट भए रहल छलनि।

........आ हुनकर पिता अपन मान सम्मान रखैत पुत्रीक रक्षा लेल साकांक्ष छलाह। दीदी के अन्न वस्त्रक कष्ट नहि हेतनि। दवाइ दारुक सेहो नहि। जमाए झोंकाह भेलखिन। भगलाह तँ भोगताह। करमघट्टू लोक एहने होइत छैक। अपना सँ वरियासँ राढ़ि करत। बिनु ककरहु कहने गाम छोड़ि देलनि ओझा।

x x x x x x

गामक लोक डेराए गेल छल – आतंकसँ, की हेतै की ने। पँचगछिया मे मारि मरब्बैल भऽ गेल रहैक। कनहू ठाकुरक हँसेरी गराँस चला देने रहैक। शिबू शोणिते शोणिताम – लहास टाङिकए आनल गेल रहैक हवेलीपर।

परोपट्टामे गप्प पसरि गेलैक मिसरिया तँ नोकरी करबा लेल कलकत्ता चल गेल रहथि से माएके बिनु टेल्हक कोनादन लाग' लगलनि। अपन दुलारू भातिज शिबूके बजा लेलनि। एहि ठाम सँ शिबूक स्कूलो लऽग पड़ैक। आ समय समयपर खेत खरिहान देखबा लेल सेहो ओ तैयारे रहैत छल। भोला झा भोले रहथि। हुनका जमीन जथासँ कमे मतलब रहनि। पूजा पाठ आ घटकैती कुटुमैतीमे बेशी समय जाइन – तँ शिबू एहि घरक हेतु बड़ आवश्यक समाङ भए गेल छल।

.... से, आइ बड़ उत्साहसँ शिबू खेत पर गेल छलाह। हुनकर पिसियौत, मिसरिया झा गेल लछमीकें घुराए आपस आनि नेने छलाह। दुकौड़ी झाक बेचल जमीन पुनः अरजि नेने छलाह। शिबू अपन पिसियौतक पत्र पहिनहि पाबि चुकल छल– "एहि खेतक जे पहिल उपजा होइ ताहिसँ कुलदेवीके पातरि दए देबनि।" मुदा कनहू ठाकुरक हँसेरी पहिनहिसँ तैयार छल। कीनि लेलनि तँ किनैत रहथु, उपजा धरि हम मिसरियाक घर पर किन्नहु ने जाए देबैक'– कनहू ठाकुरक स्पष्ट आदेश छल। शिबू अड़ि गेल। खेतक आरिपर पड़ि रहल। उपजा हम अपनहि घरपर लए जाएब – नहि तँ हमर लाशे जाएत। शिबूक लाशे टाङिकए घर पर अएलैक– कनी–कनी हुकहुकी धरि रहैक। लोक सभ पहिने दवाइ बिर्रो मे लागि गेल। पानि ढारल गेलैक, पट्टी बान्हल गेलैक, वैदजी मकरध्वज चटौलखिन, दारू ताकि कए आनल गेल........आ सुजन डाक्टर संयोग सँ भेटि गेलखिन, अपन दवाइक बक्सा साइकिले पर लादिकए आबि गेलाह।

शिबू आँखि मुनने मुनने बड़बड़ा रहल छलाह– 'धान........हम्मर

छी...... नहि........दि........यौ........'

"नहि बौआ, अहींक रहत........, एखन होशमे आउ पहिने......" पीसी विह्वल होइत बजलीह आ दौड़िकए भगवतीक चिनवार लग दीप नेसबा लेल चल गेलीह। दीप झकझका गेल छल, इजोत पसरि गेल छल। शिबूक प्राण बाँचि गेल छलैक। ई खबरि हमर दादाकें सेहो लगलनि। हमर दादा, अर्थात सोमेश्वर ठाकुर अर्थात् मिसरिया झाक ससुर। ओ मलारपुर आबि जुमलाह। जमाए रूसल छथिन तँ रहथु, कुटुम्बक घर ओ डूबऽ नहि देथिन। हुनका अबितहि गौंआक मुँहक लाइ बदलि गेलैक।

काल्हुक गप्पमे आ आजुक गप्पमे आकाश पातालक अन्तर आबि गेल रहैक। जे लछुमन काका काल्हि ई बजैत रहथि जे अपनासँ बरियासँ रारि ठनने एहिना हेतनि, सएह आइ समधिकें कहि रहल छलखिन्ह– 'ई तँ सरासर अन्याय भेल। भला, ओहि बच्चाक कोन दोष? मिसरी जमीन किनलक। आ ई बच्चा धान कटएबा लेल गेल छल, तखन..........?'

'सएह कहू ने, अपन अपन टेढ़ी। बुझाए पड़ल रहनि जे पूरा गामेके हम कीनि लेने छी,' बच्चन बाजि उठलाह।

ई गप्प सप्प भइए रहल छल ता' कनहू ठाकूर एकटा बही वस्ता लेने आबि जुमलाह। हुनका देखितहिं सभ चुप्प भए गेल। '.......हे....ऽ....ऽ' समधि, देखू एहि जमीनक हाल.....खखसैत सन कनहू बाजब आरंभ कएलनि। '.......दुर्र जी........ ठाकुर, बच्चाके अधमिरुत कऽ देलौहें आ देखब' अएलहुँ हें.......बही खाता........ऍं........दादा गरजऽ लगलाह।

'.......खिसिआउ जुनि....... ठाकुर घिघिआइत सन बजलाह।' 'चल जाऊ हमर सोझाँ सँ.......। भोला झा, मिसरिया झाक पिता गरजए लगलाह। हुनकर गणना सज्जन लोकमे रहनि, किन्तु आइ ओ गरजि रहल छलाह। हुनकर घरक नेनाकें शोणिते शोणिताम क' देने रहनि कनहूक हँसेरी से ओ नीक जकाँ जनैत छलाह। '.......कनी सुनू तँ........' कनहू ठाकुर सफाइ देबाक मुद्रा मे छलाह। मुदा बिच्चे मे दादा बाजि उठलाह– 'ई सुनवाइ आब कोर्टेमे होएत।'

कनहू ठाकुर उद्वेलित भ' उठलाह। मुखमुद्रा गंभीर भए गेलनि। आँखि विस्फारित होइत होइत झुकि गेलनि, कपार परक नस तनाए गेलनि आ थरथराइत

सन उठि कए ठाढ़ भए गेलाह। औपचारिकताक नमस्कार पाती सेहो बिसरि अपन घर दिस बढ़ि गेलाह। डेग किछु तेजे सन छलनि।

मिसरिया झा कें कलकत्ता तार गेलनि – गाम मे खून-खुनामे होइए, जल्दी आउ......' आ तकर बाद पत्र। तार आ पत्र, दूनू टा हुनकर ससुर देने रहथिन। एहि बिन्दु पर ससुर जमाएमे बड़ मेल छलनि। दूनू पुरखाह छलाह, कर्मठ सेहो।

तार पबितहिं मिसरिया झा कलकत्तासँ विदा भए गेलाह। पहिने सासुरे अएलाह। एहि खेप हुनकर खूब स्वागत सत्कार भेल। एक दिन रहि ओ दिन सेहो मना लेलनि। परात भेने अपन घर, मलारपुर लेल ओ विदा भए गेलाह। साँझ खन दीदीक सवारी अएलनि।

एहि खेप एकटा एहेन अनसोहाँत घटना भेलैक जे सभ दाँते अङुरी काट लागल– गामक महिला लोकनि वेशी मुखर रहथि। दीदी सासुर जएबा काल कनलीह नहि। एक्को ठोप नोर आँखिसँ नहि खसलनि। आइ माइ लोकनि जमा भेल रहथि जे आँचरसँ हुनकर नोर पोछबनि, से सभक आँचर सुखाएले रहि गेलनि। खूब कुचेष्टा हुअ' लगलनि।

एहि यात्रा मे दीदीकें मलारपुरमे बड़ आवेश पाइत होइन। हुनकर पिता बड़का जमीन्दार – सत्यनारायण वकीलक दोस्त। ओ एहि मामिलामे रुचि लेलनि तँ मिसरिया झा जितिए जएताह। ....आ, तखन सड़ैत रहथु कनहू ठाकुर जेलमे – शिबूकें खून-खूनामे करब' लगलाह। ई छलनि मिसरिया झाक परिवार, अर्थात दीदीक। दीदीकें पन्द्रहम दिन किछु सन्देह भेलनि। चैता मरड़ बहरिएसँ चिकरऽ लगलाह– 'एहि घरमे ककरहु किछु भेलैए की?' सड़के परसँ हुनकर चाटी चल' लागल रहनि आ ओ एहि घरक दुरुक्खा लग धरि आबि कए चिकरऽ लगलाह।

दीदी मुँह झपनहिँ सासुकें कहलखिन्ह– 'भड़ारमे जे कोहासँ दालि बहार कर' लगलिऐ ओहिमे सँ किछु चुट्ट द' काटि लेलक आ' खरऽ खरऽ कए बहार भए के चलो गेलैक मुदा की छलैक से हम नहि बूझि सकलिऐ...... तखन सँ हाथ भारी भ' रहलए'।

मरड़क चाटी बड़ी काल धरि हुनकर बाँहि धरि चलैत रहल। बाँहिसँ ऊपर विक्ख चल जइतैक तँ जुलुम भ' जइतैक। दीदीक बाँहि फूलि कए तुम्मा

भ' गेल छलनि– चाटीक चोट बड़ मारुक होइत छैक। भगता साफे कहि देलखिन 'ककरहु पठाओल पोआ रहैक – असली।' भाग्येसँ बाँचि गेलीह – माए खरजितिया कएने हेथिन।

ई खबरि दीदीक नैहरमे चल गेलैक। हुनकर पिता दिन तकाके पठा देलखिन। भातिज भतीजी सभ सेहो 'इल्लो–विल्लो' भ' रहल छलनि – भाउज तङो तरीज होइत रहथिन। मिसरिया झाकें पत्नी विरह पसिन्न नहि रहनि। किन्तु माए–बाप कहलखिन्ह – एखन दमगर कुटुम्बक काज अछि। हुनकर मोन राखी। मोन टुटि जएतनि तँ..........। दोसर जे दिन फेरि देब कुटुम्बक इज्जतिक विरुद्ध हेतैक। कुटुम्बक इज्जति बँचाबी।

मिसरिया झा के सासुरक रोच रखबाक छलनि। अपनाकें मनौलनि। दीदी तँ ओहि घरक बेटी छलखिन्ह। कोना बाजथु जे हमरा घरक काज अछि। सभ कलयुगाहि कहितनि ने...... मिसरिया झाकेँ पत्नीक विरह नहि सहल गेलनि। ठीक सातम दिन ओ स्वयं आबि जुमलाह। ई बात सोमेश्वर ठाकुरकें पसिन्न नहि। घरमे करतेवता लगिचाएल छलैक। दोसर बेटीक विवाह। पोताक मूड़न। दूनू जँ एके लगातिमे भए जइतैक तँ एके खर्चे बर्चे निमहि जइतैक।

गामक नामी गिरामी जमीन्दारक ओतए बरियाती अबितैक। छबो मास ने बाँचल छैक समय। दिन बितैत देरी होइत छैक? तँ अँचार, कुम्हरौड़ी, मुड़ौरी, अदौरी........ई सब बनएबाक छलैक। लिखिया सेहो उत्कृष्ट होएबाक चाही। कोबरा घरक बाँस पुरैइनि, चान–डाला हाथी आदि–सुव्यवस्थित, सुन्दर होइ।.........एहि सभक तैयारी दीदी छोड़ि आओर के कए सकैत छल? नहि, दीदी अर्थात् पिताक दुलारू अपरा दाइ एखन सासुर किन्नहु ने जएतीह।

.........'सुनथु ओझा, हमरा घरमे एखन लोकक काज अछि, दोसर जे हमर बेटीक हेतु हिनकर घर सुरक्षित नहि छनि। एतबे दिनमे गहुमनक पोआ आबि गेलनि। आइ–माइक नजरि गुजरिसँ बाँचथि से हिनको हेतु आवश्यक। से........, एखन बरख दिन हमर बेटी मलारपुर नहि जाए सकैत छथि। ई अपन घरकें पहिने सम्हारथु तखन हमर बेटीकेँ लए जएताह।'

एहि खेप मिसरिया झाकें पत्नीसँ भेटो करबाक अवसर नहि देल गेलनि। दीदी दाँत पर दाँत बैसौने रहलीह। सोमेश्वर ठाकुरक बेटीकें नैहरक मान राखब कर्तव्य कोटिमे अबैत छलैक।

मिसरिया झा दुखी भए कलकता आबि गेलाह। हाइस्कूलक शिक्षककें पाँच सए मात्र दरमाहा छलैक। चालीस टाका अपन 'बस हेतु, डेढ़ सए– 'भोजन खर्च, सयटाका आन आन अपन व्यक्तिगत खर्च कएला पर गाम पठएबा लेल बाँचि जाइत छल केवल दूसय टाका। एहि सँ गामक आश्रमक खर्च तँ चलि जाइत छल मुदा मोकदमाक खर्च कत' सँ आबओ। अपन सहकर्मी सभकें समस्याक मादे मिसरिया झा कहलखिन्ह।..... तँ सुधांशु चटर्जी किछु सेठ सभ सँ हुनका परिचय कराए देलखिन्ह। सेठजी अपन बालक सभकें पढ़एबाक हेतु मिसरिया झाकें राखि लेलखिन।

हुनका पढ़एबाक यश बड़ भेटलनि। आ ट्यूशनक कमाइ बढ़' लगलनि। जहियासँ कनहू ठाकुरसँ मोकदमा आरंभ भेलनि, तहियासँ मिसरिया झा दूटा बातक संकल्प लए लेने रहथि– एकटा तँ गामक गमाओल सम्पत्ति पुनः अर्जित करब आ दोसर अधिकसँ अधिक लोककें अपनाएब। लोककें अपनएबामे हिनका ईहो तात्पर्य रहनि जे मारि मोकदमाक समयमे संग देत। मिसरिया झा एहि हेतु अधिकसँ अधिक टाकाक संग्रहमे लागि गेलाह।

ट्यूशन एकसँ दू आ दूसँ चारि बढ़ौने गेलाह। ओ कनहू ठाकुरसँ गामोक लोककें त्राण दिआएब सोचि रहल छलाह। कनहू ठाकुर गाममे लोककें एक दऽके दूना ओसूल करैत छलखिन्ह आ गामक लोक उन्टे हुनका नामे डेराइतो छल। 'समय पर ठाकुरे ने ठाढ़ होइत छथि' – सभ बजैत छल। आ से कनहू ठाकुर हुनकर ममियौतकें खून खुनामे कए देलक। गामक लोक देखैत रहल। ओ तँ धन्य हुनकर ससुर जे आबिकए बलगर बनौलखिन।

मिसरिया झा ठीके सोचैत रहथि। कीनल खेतक उपजा लेबासँ रोकलखिन कनहू ठाकुर आ तखन ओ माथ झुकौताह, किन्नहु नहि। ओ मोकदमा ठनलनि। आ दृढ़-प्रतिज्ञ छथि-खाहे कतबो खर्च भए जाए। हारि मानि बैसब नहि।

मोकदमा लेल खर्च चाही। एहि हेतु मिसरिया झा दिन राति एक कएने छथि – खन स्कूल खन ट्यूशन। खन एहि मोहल्ला, खन ओहि मोहल्ला।

कलकत्ताक मेघौन समय। पानि बरिसतैक तँ नीक होइतै। से नहि। आकाशकें मेघ छपने, जेना कुलीन व्यक्तिक मनोरथकें कर्तव्यक भार छापि लेने हो। गरमी आइ छोड़ि काल्हि नहि हेतैक। घामे पसेने लोकक देह तर-बतर। सँझुका समयमे टहलबा लेल लोक सभ पार्कमे चलो जाइत रहए, मुदा से कते

काल धरि। आ.....मिसरिया झा कें तँ सेहो भाग्यमे नहि लिखल छलनि। मोहल्ले मोहल्ला जे ट्यूशनिया छात्र सभ छलनि, ताहि लेल बस वा ट्रामक धक्का हुनकर भाग्यमे रहनि।

मिसरिया झा मोहल्लाक कोनपर एकटा कोठली भाड़ा पर लेने रहथि - तीस टाका भाड़ा प्रतिमास। एक्के कोठलीमे रहनाइ आ भोजन बनौनाइ। म्युनिसिपैलिटीक नल आ शौचालय आम जनताक उपयोगक हेतु बनाए देल गेल छलैक। हिनकर कोठलीक ठीक सोझा ओ नल छलैक आ कात लागल शौचालय। मिसरिया झा ओकरे उपयोग करैत रहथि। सड़क टपिकए जाए पड़ैत छलैक आ सदिखन ओतए भीड़ लागल रहैत छलैक। मिसरिया झा कनेक जागरूक लोक रहथि। भोरे चारि बजे सँ सावधान रहैत छलाह। तँ पाँच बजे धरि चारि बाल्टी जल अवश्ये भरि लैत छलाह। स्नान आदिक हेतु दोसर दिस टोंटी रहैक।

......से, ओहि दिन मिसरिया झा कें भरि राति निन्ने ने भेलनि। कछमछी छूटि गेल रहनि।

भोरबामे, कखन ने कखन निन्न भए गेलनि। जखन निन्न टुटलनि तँ झमाझम पानि बरसि रहल छलैक। पीबाक, भोजन बनएबाक जल जमा करबाक ओ विद्यालय जएबाक बेर बीति चुकल छलैक। घड़ी दिस ध्यान गेलनि। सवा आठ बाजि गेल रहैक। अहुना एहेन विकालमे ओ घरसँ नहिए बहराए चाहैत रहथि।

उठिकए मुँह धोलनि। सड़क पार कए पैखाना दिस गेलाह तँ ठेहुनसँ ऊपर धरि पानि चल अएलनि। बुन्नीक झटक एतेक तेज रहैक जे छाता रहितो भीजि गेलाह।

अपन कोठली आपस आबि कपड़ा बदललनि। एक कप चाह पीलनि। नजरि एकबेर आकाश दिस गेलनि। मेघ घनगर छलैक। अन्हार पसरले जाए रहल छलैक। एकटा कागतक पृष्ठ आ कलम लए बैसि गेलाह।

'प्रिय मीत, हमरा गामसँ एना आइ डेढ़ बरख भ' गेल अछि। एहि बीच लोक सभक कुशल समाचार बड़ कम बुझैत रहलिऐए। आइ विद्यालय नहि जाए सकलहुँ। भरि राति निन्ने ने भेल।....... आ एखन झमाझम पानि बरिसि रहल छैक।

तोरा संग नेन्नामे जे कागतक नाओ बनाए पानिमे बहा दैत रहिऐक तखनुक प्रसन्नता मोन पड़ि रहल अछि। कहाँ सोचैत रहिऐक जे ओ नाओ केमहर जेतैक, ओकर की हेतैक? कहियो ओकरा मादे सोचलिऐक.....हमरा एखन बुझि पड़ैत अछि जे भगवान हमरा ओहने कागतक नाओ बुझि एहि महानगरमे पठा देलनि। कत' जाएब, की करब तकर कोनो ठेकान नहि। हमर एखनुक जिनगी बरखाक धारमे भसिआइत, ओही कागतक नाओ जकाँ भ' गेल अछि। तीव्र आ दिशाहीन।

भोरे पाँच बजे धरि पानि जमा क' लैत छी। नहा धो कऽ तैयार भए जाइत छी। तखन सँ भोजन, पूजा आदि होइत सात बजैत अछि आ सवा सात धरि मुख्य सड़क धरि पहुँचि जाइत छी, बस पकड़बाक हेतु। कालीघाटक ई सड़क कलकत्ताक सर्वाधिक व्यस्त सड़क छैक। एक घंटामे विद्यालय पहुँचि जाइत छी। नओसँ तीन बजे धरि पढ़ाइ होइत छैक। बीचमे आधा घंटा भोजनक छुट्टी – डेढ़सँ दू धरि।

तीन बजे धरि थाकि कए चकनाचूर भए जाइत छी। मुदा दूटा ट्यूशन चारिसँ पाँच आ साढ़े पाँचसँ सात धरिक पकड़ने छी। दमगर, पार्टी छैक। मोकदमा जा' रहत ता' धरि ई परिश्रम रहत।

हँ, एकबेर अपन भाउजक खोज खबरि, लऽ लिहें, हमर सासुर जा कए। हम एहि अंशमे भागमन्त छी जे पत्नीक भरण पोषणक चिन्ता नहि रहैत अछि। हमर सासुर सुखी सम्पन्न अछि। तैयो,एकसरमे कखनहु पत्नीक स्मरण भइए जाइए। विशेष कऽ जेहेन दिन आइ अछि– विकराल, मेघौन आ सौंसे सुन्न।

किन्तु, काली माइक पूजा करैत छी। कहुना मोकदमा जीती आ घर सम्हारि ली। आब पत्र बड़की टा भेल जाइए। माफ करिहें, किदन कहाँ दन लिखि देलिऔ, ... तोरे मीता।

x x x x x x

दीदी, एकटा आङन में मधुश्रावणीक कथा बाँचि रहल छलीह ......सिरिकर सिरहि चढ़ाओल, चन्द्रकर देल वनवास, राजा सुवर्ण बियाहल लिखलो नहि परकार.......। से सोनदाइ आ सखी बहिनपा बड़ मोनसँ सुनि रहल छलीह।

एतबेमे, दादाक गरजन सभ सुनलक आ स्तब्ध भ' गेल.......'जा......

जा........’ बुझलहुँ, अपना तँ छुट्टी नहि छनि जे औताह आ दोस महीमकें पठबै छथिन........., हे .... बौआ, ई आवारागर्दी आनठाम देखएबै..... हमरा लग अओने पओने नहि चलत! हमर बेटी ससुरवयस आ से जकरा-तकरासँ, भेंट कर’ लागत.......’

उधो जाए लागल तँ ओ पत्र दादाक हाथमे दए बाजल – अपन बेटीक हाथमे दए देबनि। हाथक अक्षर चिन्हलनि तँ किछु नरम पड़लाह...... तावत धरि उधो डेग झटकारैत दुमुहान धरि पहुँचि चुकल छल। पाछाँ ओ पत्र दादा अपन पुत्रीक हाथमे दए बजलाह– ‘ई के ने के छल, ढीठ भए बजैत छल जे अहाँक बेटीक हम भेंट करबनि। सऽख ने देखू।’

दीदी बहुत ओरियाकए साहस कएलनि। बजलीह– ‘‘बाबूजी, ई बहुत चिन्हल जानल लोक छथि। नीक व्यक्ति, दादा चुप्प भए गेलाह आ दीदी उदास।

x x x x

दिन राति पानि जकाँ बहि रहल छल। मिसरिया झा कलकतामे अपना धुनिमे मग्न छलाह। अपना धुनिमे, अर्थात् टाकाक धुनिमे....... अर्थात् पुरुखाक बहाओल सम्पत्ति कें आपस अनबाक धुनिमे। आ दिन राति पहाड़ भेल छल, दीदी अपन सखी, पहिनपाकेँ वरक संग जाइत देखैत रहथि, वरक देल गहना, कपड़ासँ सजैत देखैत रहथि, ओकर सभक माथक टुकली ब्लाउजमे सटल देखैत रहथि आ देखैत रहथि सँझुका क्षितिजक कारिखक पहिल गुलाबी आँखि काजरसँ मिलि मुस्कुराइत रहए। देखैत देखैत चान तरेगन उगि जाइत छल, अन्हारकें अपन बिहुँसीसँ इजोत करबा लेल। किन्तु, दीदी लेल दिन राति पहाड़ भेल छल।

x x x x

दिन राति आगि उगिलि रहल छल। मोकदमा, कनहू ठाकुर आ शिबू अर्थात् मिसरिया झाक ममियौतमे जोरसँ चलि रहल छल। गाममे गोलैसी पर गोलैसी चलि रहल छल।

एक दिस गाममे तथाकथित प्रतिष्ठितक दल आ दोसर दिस न्यायप्रिय सज्जन व्यक्ति विचारवानक दल। एक दिस पैरवी लेल दौड़निहार लोकक बाढ़ि तँ दोसर दिस सत्यनारायण झा सन बेसी फीस गनौनिहार प्रसिद्ध वकील।

मुदा दिन राति पानि रहओ वा पहाड़ रहओ वा आगि रहओ, बीति रहल

छल अवश्ये, आ बीति गेल साढ़े चारि बरखक अवधि। मिसरिया झा जितलाह। पंचगछियाक जमीन हुनके छियनि से सिद्ध भेल । संगहि कनहू ठाकुर छओ मासक हेतु जेलमे बान्हल गेलाह। जीतक, उचित अनुचितक गप्प चलैत रहल।

मिसरिया झा गाम अएलाह। भगवतीकेँ पातरि देल गेलनि। दीदी केँ सासुर बजाओल गेलनि। मलारपुर आबि दीदी सन्तुष्ट छलीह।

एहि अवधिमे दीदीक सासु वेश दुखिताहि भए गेल रहथिन। घरक काज सम्हारबा लेल गुलाब काकी आबि जाइत रहथिन। दीदीक सासुकेँ हुनकासँ गुलाब लागल रहनि। तेँ सभ हुनका गुलाब काकी कहैत रहनि।

गुलाब काकी बुधियारि आ काजुल रहथि। मिसरिया झा अपना गामपर माता पिताकेँ नियमित टाका पठबैत रहथिन। खेत पथार मुनमा देखैत रहनि। हुनका अहुना खेतक अधे उपजा होइतनि। ताहि परसँ केओ देखनिहार नहि, तखन बूढ़ लोककेँ के टेरैए। से, यदि कठमन उपजा होइक, तँ एक पसेरी मिसरिया झाक माक हाथमे आबि जानि। यदि एहि दिस केओ ध्यान दिआबथि तँ ओ उदास होइत बाजि उठितथि– 'बाउ, एही उपजा बाड़ी लेल तँ ओहेन सुन्नर बउआक मुँह छुटल, आब तही खातिर फेर मुँह खोलू?' बड़की काकी किछु विरक्त सन भए गेल रहथि।

.......से, गुलाब काकी जखन ई सुनलनि जे मिसरीक कनियाँ आबि रहल छैक तँ बजलीह– "बड़ बेश। औतीह तँ आबथु। एतए कोनो जमीन्दारी ठाठ तँ छैक नहि! रहि सकथि तँ रहथु....."

'किऐक यै गुलाब। एहेन बात किऐक बजैत छिऐक?' ....अपन पुतहुक अएबाक अवसर पर ओ स्वयं उत्साहित छलीह आ ईहो आशा रखैत छलीह जे दोसरकेँ सेहो एहिसँ हर्ष होइक।..... 'एखन तँ कनियाँ आयलो ने छथि, आ पहिनहिसँ अहाँ कहैत छी जे नहि रहि सकतीह?' गुलाब काकी अपन कोसलिया देयादिनीक मुँहसँ ई सुनि चुप्प भए गेलीह।'

वसन्त आबि गेल छलैक। आमक ठुट्ठ डारिपर नवीन कोमल किसलय बसातक नहुए झोंकसँ सुगबुगाए लगैत छलैक, जेना बहुत दिनसँ प्रतीक्षित मनोरथके गुदगुदी लागि रहल होअए।

........से, दीदीक दिन रातिमे वसन्त सिहकि रहल छलनि। .....कि

एक दिन, ...'हे देखथुन बहिनदाइ, ऐ कनियाक छुतहरपना, जाही हाथे तौला छूने रहए ताही हाथे जारनि सेहो छूबि लेलक। अँइठ उपहतकेँ तँ, कोनो विचारे ने छैक एकरा......., गुलाब काकी लोहछैत बाजि रहल छलीह।

दीदीक सासुकेँ हुनकर ई लोहछब नीक नहि लगलनि। ओ नहुएसँ दियादिनीकेँ बुझौलनि– 'की करबै, नेन्ना छैक। एतेक लोहछिकए किछु ने कहियौ, ओरियाकए बुझा दिऔ।'

"हे यै बहिन दाइ, ई हमरो तँ पुतहुए भेली। हमरा कखनहुँ एकर भाने ने होइए जे–ओ आन छथि। अपन आनक भेद हम नै करैत छिऐक।" गुलाब काकीक अपनत्व बोध एतेक रहनि जे डेग डेग पर पुतहुकेँ उपदेशे पड़नि। दीदी उदास भ' जाइत छलीह।

गुलाब काकीक दिनचर्यामे अपन पुतहु अर्थात् हमर दीदी केँ फज्झति करब आवश्यक अंग बनि गेल रहनि।

मिसरिया झा कलकत्तासँ कमाकए आएल रहथि। गुलाबकाकी एहि अवसर पर अपन सुधंग दियादिनीक डेन पुरबाक लाथ बनौलनि ई जे ओ दुखिताहि छथिन। एकसरे घरक काज आ उपजा बाड़ी कोना सम्हरतनि।...... आ, बिच्चे मे आबि गेलखिन ई पुतहु अर्थात् हमर दीदी। हुनका बकलेल नहि कहितथिन तँ सभ टाका, धान पानक मलिकाइन बनि जैतथि दीदी.....से, गुलाब काकी पहिनहिसँ विचारि लेने रहथि जे एहि कनियाँके बकलेल सिद्ध क' के रहब। एकरा एहि तरहेँ कही जे दीदीकेँ एकटा दुश्मन मानि गुलाब काकी हुनका जड़िएसँ नाश करए चाहैत छलीह।

मलारपुरमे मिसरिया झाक घर कच्चा पजेबासँ बनल रहनि। एकटा पुबरिया घर रहैक। दच्छिन भर शीशोक खाम्ह आ उत्तर भर सेहो। घरक बीचमे शीशोक धरैन आ ओसाराक दूनू भर, बहरी आ आङन दिस तारक पाढ़ि, बाँसक कोरो। खऽर सँ छारल खूब निस्सन घर। पूब, पच्छिम, ओसारा, बीचमे दू टा कोठली छलैक। एकटा पुरखाही, एकटा मौगियाही। अर्थात् घरक जे पुरुष सदस्य भेलाह से उतरबारी कातक कोठलीमे आ मौगी मेहरि दछिनबारी कातक कोठलीमे रहथु। से, मिसरिया झा उत्तर भऽर क कोठलीमे रहथि आ माता दक्षिण दिस, सटले, उत्तर दिस टाट लागल रहैक। आङनक उतरबारी कात भीत छलैक, ढहल ढनमनाएल। ओकर नीचा भुटका, वन गेनहारी घास पातक संग

जनमि गेल रहैक। जखन काज करतेबता होइक तँ ओकरा साफ कए एकचारी द देल जाइत छलैक, जाफरी लगा देल जाइत रहैक आ बाँसेक फटक दए भड़ार बनादेल जाइक। एहि बीचमे एकटा पोरोक लत्ती सेहो लतरि गेल छलैक। आङनक पछबारी कात एकटा टटघर छलैक। ओकर दछिनबाड़ी भाग गोसाउनिक सिर- चिनबार रहैक। चिनवार परक नीचा दिस एक चुल्हिया रहैक, पातरि रन्हबाक हेतु। शेष स्थान पर एकटा एकचुल्हिया दूध औंटबा लेल आ एकटा दुचुल्हिया भानस करबा लेल, गोसाउनिक पीरीक उत्तर भागमे। बीचमे पैघ सन स्थान छूटल रहैक, जतए छओ, सात टा पीढ़ी पर लोक सभ भोजन क' सकैत छल। मुदा ई घर खूब चुबैत रहैक। कनिए पानि बरिसैत छल तँ घरमे ठाठरि बहए लगैत छल। ई घर पछिला तीन बरखसँ छारल नहि गेल रहैक। खढ़ खरही महग भए गेल रहैक, जनक बोनि बढ़ि गेल रहैक तँ मिसरिया झाक मायक विचार भेलनि जे बौआ बाहरसँ औताह तँ छराए देबैक।

से, जखन मिसरिया झा आबि गेलाह तँ सभसँ पहिल काज हुनका ई करबा लेल माय कहलखिन जे भगवतीक घर छरबा दिऔक। जहिया दीदी सासुर अएलीह तहिया पछबरिया घर छारल जाइत रहैक।

कोठली दुइएटा रहैक। मिसरिया झा माएकेँ घरसँ बहराए नहि देलखिन। ओ स्वयं बहरी बरण्डा पर सुतैत रहथि। सासु पुतोहु कोठली मे एक ठाम। पछुआरमे नीमक गाछ रहैक। निबौरी झरि झरिकए वातावरणके तिताइन गन्धसँ भरि देने रहैक।

एहि ठामक चर्चा करैत दीदी अन्यमनस्क भए जाइत रहथि। किछु कह' चाहैत रहथि मुदा बुझि पड़ैत छल जेना मुँह सीयल होनि। ठोरकेँ कसिकए दाँतसँ दबाए लेथि। दीदीक ऐहेन व्यवहार हमरा नीक नहि लगैत रहए। आधा कहलहुँ आ आधा छोड़लहुँ। कोनो गप्प कहैत बिच्चहिमे रुकि जाइत रहथि। बुझि पड़ए जे दीदी कतहु चल गेलि छथि - दूर .....बहुत दूर।

ओना, एकटा पत्र ओ अपन बहिना, हमर लाल पीसीकें लिखने छलखिन्ह, से हमरा हाथ लागि गेल छल। पत्र एना छलैक–

श्रीमती बहिना,

प्रणाम।

........हम अपन गप्प की लिखू। एतए कोना रहैत छी से बुझि अहाँ दुखी भ' जाएब। काल्हि बिहरौन समय रहैक। गोसाउनिक घर छारल जा रहल-ए। से, जन बोनिहार किछु देरी सँ एलैक। अहाँक ओझा ओकरा सभकें खिसिअएलखिन, मुदा काज आरंभ भ' गेलैक। ओही घरमे भानस सेहो होइत छैक। छारैत काल बहुत रास झोल गरदा नीचा खसि पड़ल रहैक। गदौसक ढेरी जकाँ लागि गेल रहैक। हम ओकरा बाढ़नि लए साफ कर' लगलिऐक, नीपि कए भानस करितहुँ ता' बड़ी जोरसँ बिहाड़ि उठि गेलैक। जन सभ डेरा कए चार परसँ नीचा उतरि गेलैक। चिड़ै चुनमुनी व्याकुल भए चिचिआए लागल छल, अपन अपन खोता दिस आपस जाए रहल छल। बिहाड़िक झोंक बढ़ैत देखि अहाँक ओझा जन सभके विदा क' देलखिन। हवाक झोंक बढ़ि गेलैक। हम घरमे रही। भानसक हेतु जे आँच पजारने रही तकर धधरा लहक' लागल छलैक। आगि ने लागि जाइक ताहि डरे पानि हाथ मे लए मिझाब' चाहलहुँ। अहाँक ओझा घर आबि केवाड़ बन्न क' देलनि।

......की लिखू की नहि। आगि खऽढ़ एक ठाम रहैत छैक तँ पजरबे करतैक। धधरा अनका किऐक बरदास्त हेतैक? ......ओना, हम एतेक दिनमे पहिले पहिल एकठाम रही। हमर बाजब केओ ने सुनए तकर एत' बड़ धेयान राखल जाइत छैक। दूटा कोठली जे छैक, ताहिमे एकटा मौगियाही आ एकटा पुरखाही कोठली छैक। जहिया अहाँक ओझा गाम अएलाह तहिया माए अपन ओछाओन ओसारापर आनि लेने रहथि आ बाजल रहथि– 'बौआ, एहि घरमे, अहाँ आ कनियाँ रहू।'

......से, अहाँक ओझाकें उचित नहि बुझि पड़लनि। ओ अपनहु ओछा-ओन बाहरे लए गेलाह। हम घरमे बेशी काल एकसरे रहैत छी। डरो होइत रहैए– भूत, प्रेत वा जानि नहि आओर कथी-कथीक। एकाध राति अहाँक ओझा कैं मच्छर कटलकनि बहारमे तँ घर आबि गेल रहथि– वा ई कहू जे हमरा 'लाज करू' कहि कए कात क' दैत छथि से मच्छरक लाथ बनाए किएक हमरा लग आबि जाइत छथि– की उचित छैक की नहि, एना किऐक होइत छैक से सभ मोनमे घुरिआइत रहैए, ककरा पुछबै, आ जँ......हमरा' लोक बताहि कहि दिए तँ, हम हुनका लग किछु बाज' चाहैत छी तँ चुप्प रहबाक संकेत करैत कहैत छथि– 'जेठ श्रेष्ठ लग लाज करी। चारूकात लोक, भरल छै, से ध्यान अछि की?.

.......से, काल्हि बाहर जखन बिहाड़िक झोंक तेज छलैक तखन हम ओहि बन्न घरमे खूब बाज' लगलहुँ। बहारमे हवा ततेक जोरसँ बहि रहल छलैक जे केओ किछु सुनए तकर शंका नहि छल। हम बजैत रहि गेलहु...... मुदा, विहाड़ि शान्त भेलैक। किछु आलसक संग अपनाकें हम बान्हल अनुभव क' रहल छलहुँ, निन्न हमरा जँतने जा रहल छल। ता....... 'गे दाइ गे दाइ, आजुक छौड़ी सभक अगिलहपनी तँ देखू........। अतत्तह करैए..........एना कतौ दिन देखार भगवती घरमे वर-कनिया....... होइ। .... हे भगवती, दया करियौ। गुलाब काकी हाथ नचा नचा कए चिकरैत रहथि। हमर भक्क टुटि गेल। कलेजा धक्धक् कए रहल छल। अहाँक ओझा तँ कखन ने हमरा छोड़ि अपराधीक मुद्रामे बीच घरमे ठाढ़ भ' गेल रहथि। गुलाब काकी माय बाबूजी आ आस पड़ोसक कतेक लोककेँ जमा क' लेने रहथि।...... आ एहि बीच ओ हमर देहक वर्णन, तेना कए रहलि छलीह...... बहिना, सत्त मानू जे हम केबाड़ तँ बन्न क' देने रहिऐक, मुदा हमरा दूनू गोटाकें ओ कोन दोग देने देखैत रहथि से किऐक ने गेलिऐ.........।'

गुलाब काकीक एहेन बाजब, ई रूप देखि माए-बाबूजी लाजे गड़ि गेलाह। माए कहबो कहलखिन- 'एना किऐक करैत छी यै गुलाब, धीया पुता लेल एकटा आँखि दाबिए कए चली।'

.........हे लिअऽ यै फल्लौं माय, हम तँ दोसरक दोसरे भेलहुँ ने! कहियो ने बुझलिऐ जे ई अप्पन, ई आन। आ तकरे फल आइ भेल जे भरल घर गिरहस्ती छोड़ि अहाँक आङन धएल तँ यैह अपमान..........हे दीनानाथ...... हमरा पर जे केओ दोष दैत छथि तिनका देखियनु........हे लिअऽ अपन बेटा पुतोहुँ........जकरे, बनरी सएह नचाबए....... ई सभ बजैत गुलाब काकी अपन आङन दिस चलि गेलीह।

गुलाब काकी रूसि कए चल गेल छथि। अहाँक ओझा काल्हि सँ भोजन छोड़ि देने छथि। आ हमरा आब बड़ भूख लागि गेल अछि - की करु, से बुझिते ने छिऐ। भोजन क' लेब मर्यादाक विरुद्ध हेतैक- वरकैं भुखले छोड़ि खाए लेब........। ओ खाइत नहि छथि। हमरा टोकितो ने छथि........भगवती घर मे ....नहि रोकलिअनि, से अपराध।

माए बाबूजी चुप्प छथि। बेटाकैं ओ सभ किछु नहि कहथिन। दुलारू.......

कमासुत.........। मुदा हमर देह जेना खसल आएल हुअए। भूखे दम्म खतम भ', गेल अछि। आब लिखलो नहि भ' रहल अछि। अहीं कहू बहिना, हमर कोन दोख।

एतबे दिनमे अहाँक ओझा कतेक बेर ने सुना देने छथि......... 'बड़ सुन्नर रहने किछु ने होइ, छै....... जमीन्दारक बेटी भ' गेने बुद्धि सभटा नहि, होइत छैक........।' हम सुन्दर छी वा बुधियारि छी, तकर हुनका, गौरव किऐक ने होइत छनि........उन्टे ओकर दुःख.........ओकर डर.........किऐक ....एना किएक होइ छै? पत्नीक बुद्धि, सुन्दरता पतिक डरक कारण? ई सभ की छिऐ.......' मनुक्ख कत्ते तरहक होइत छैक वा भाग्य की छिऐक......... किछु ने बुझैत छिऐक। बहिना, पत्र पढ़िकए फाड़ि देबैक.........हमरा डर होइए जे ककरहु हाथ ई चिट्ठी लागि जेतैक तँ हमरा बताहि कहत........घर मे बन्नक' देत, हाथ पएर बान्हि देत आ अन्न पानि बिनु छटपटाकए मरि जाएब........ ई गप्प ककरहु कहबो ने करबैक..........बेश, तँ आब........इति अहींक बहिना।

हमरा हाथमे कोना ने कोना ई पत्र आबि गेल छल। हमरा दीदीक भिन्ने स्वरूपक परिचय भेल छल। मुहदुब्बरि, लजकोटरि आ डेरबुक दीदी। कखनो के, दीदी पर तामसो उठि जाइए – अपना घरमे, अपना घरवला संगे जेना रहथि एहिमे दोसरकें बजबाक साहस कोना भेलैक, मुदा हुनकर पत्रक अन्तिम अंश एकर उत्तर दैत छल– 'जँ हम किछु बाजब, तँ सभ बताहि कहि देत, घरमे बन्न कए हाथ पएर बान्हि देत, भोजन नहि भेटत, अन्न पानि बिनु मरि, जाएब.......छटपटाकए।' हमरा दीदीक विषय मे एक एकटा घटना मोन पड़ैत रहैए.......।

दिन चढ़ि गेल छल। रौद तिक्ख लागि रहल छल। पछबाक झोंक अपना संग माघक शीतक लहरि आनि दैत छल। आङनमे तैयो बैसलि गुलाबक फुलाएल पँखुरी देखैत नीक लागि रहल छल। सहसा ओकर काँट पर ध्यान चल गेल आ इच्छा भेल जे ककरहु पुछिऐक जे एहेन सुन्दर फूलकें ई काँट किऐक घेरि लैत छैक?'

........ता.......पिंकी आजुक अखबार हाथमे दैत खेलएबा लेल चल गेल। अखबारक मुखपृष्ठ पर कोनो रेल दुर्घटनाक समाचार छलैक। पुनः संसद मे की भेलैक, बाजारक भाव आदिक समाचार पढ़ैत पढ़ैत हम पाँचम पृष्ठ उनटा

लैत छी। पाँचम पृष्ठ अर्थात् सनसनी वला खबरि, जाहिमे रहैत छैक फलाँक हत्या, दहेज लोभीक गप्प। खेतक हेतु भाइ–भाइक कपड़–फोरीक गप्प, बूढ़ा बूढ़ीक सन्तान द्वारा यातनाक गप्प, युवक युवतीक पलायनक घटना........आओर की नहि। सभटा मिलाकए रहस्य रोमांचक गप्प।

ताहूमे, हमरा ऊपर कखनहु के नारी मुक्तिक भूत सवार भ' जाइए। पति द्वारा उत्पीड़ित महिलाक प्रति सहानुभूति, तकर चर्चा। से सभ होइत रहैए, अपनहि होइए, अपनहि बिलाइए। आ ई भूत यदि बेशी जोरसँ सवार होइए तँ भरि दोपहरियामे तीनसँ चारि कप धरि चाह बना कए पीबि जाइत छी, आफिससँ श्रीमानजीक आपस अएबा धरि भूतकें उतारबाक रहैए। से, आइ एकटा अजगुत समाचार छलैक, अखबारक पाँचम पृष्ठ पर– 'महिला देह व्यापारक कानूनी मान्यता। एकर सविस्तर एना रहैक–

१. "देह व्यापारक बाजार शहरक प्रत्येक चौबटियापर स्थित रहतै।"

२. एतयक प्रवेश निःशुल्क छैक।

३. महिला लोकनि सेहो स्वच्छन्द रहतीह, अर्थात् स्वेच्छासँ ओ सभ अपन पुरुषकें छोड़ि दोसराक संग रमण क' सकतीह।

४. प्रत्येक परिवारक कमसँ कम एकटा पुरुष सदस्यकें एहि अभियान में सक्रिय सहयोग करब आवश्यक छनि।

५. प्रत्येक पुरुषकें अपन आयक एक चौथाई अंश एहि, बाजारक चलएबा लेल खर्च कर' पड़तनि।

नोट : ई सभटा आय महिला मुक्ति आन्दोलनक प्रमुख कार्यकर्त्रीक हाथमे रहत, जकरा ओ दलित महिला लोकनिक कल्याणक हेतु महिला विद्यालय, चिकित्सालय आदिक व्यवस्थामे व्यय करतीह।'

हे भगवान्! आइ ककर मुँह देखि कए उठलहुँ। के एहेन प्रस्ताव रखलक? के एकरा पास कएलक! लागल जेना माथमे झुनझुनी भरि गेल हुअए। सोचैत रही जे एहेन एहेन काजक विरोध नहि कए महिला सभ कानूने बनबाए रहलि छथि, उन्टे बात। '......माँ.......पिंकी चिकरि रहलि छलि। की सभ, बड़बड़ा रहल छें........' हमर भक्क खूजल। ई हमर दिवा स्वप्न छल। अखबारक पन्ना हमर हाथमे छले। रौदमे पड़ल पड़ल आँखि लागि गेल छल।

मुदा गुलाब काकी हमरा एखनहुँ, जगलो पर मोन पड़ि रहलि छथि– लाज धाखकें चिकरि–चिकरि कए बेकछाबै बाली मौगी। ओ तँ दीदीकें बौक जकाँ बना देलनि। एहिमे कतए छथि पुरुष। एकटा गुलाब काकी, दोसर दीदी– एकटा कहै बाली, दोसर चुपचाप सुनैबाली।

हँ, जँ केओ आर छथि तँ तेसर – मिसरिया झा। ओ टाका कमा लेलनि, समाजमे प्रतिष्ठा प्राप्त कए लेलनि, मुदा जँ नहि पाबि सकलाह तँ दीदीक मोन।

बात छोटो रहैत छैक तँ समय समय पर पैघ भए जाइत छैक– से दीदी जखन तखन कहैत रहैत छलीह।

ओ एकटा बाबाजीक खिस्सा सेहो जखन तखन कहैत रहैत छलीह।

एकटा गाममे ककरहु सन्तान नहि होइत छलैक। जकरा गर्भ स्थिरो रहि जाइत छलैक तकर बच्चा जनमिते खतम भए जाइत छलैक। एक दिन ओहि गाम मे एकटा बाबाजी आएल। ओ बाजल जे हम मास दिन धरि व्रत करब। भरि राति पूजा करब आ निशा भाग रातिमे पूजाक जल एकसरिमे जाहि महिला पर छीटब तनिका बरखक भीतरे चानन सन पुत्र प्राप्त हेतनि।

हमर उत्सुकता बढ़ि जाइत रहए। मुदा लालपीसी खिसिआइत सन दीदीकें बड़ जोरसँ कहने रहथिन– 'धुर.......बहिनपा, अहूँ आब भसिया जाइत छी। धीयो पुताकें सभटा गप्प कहने चल जाइत छिऐक। बड़ तामस उठैए तँ पकड़ू ओहि बाबाजीकें आ आगि ढारू ओकर चानि पर......' दीदी सकपका कए चुप्प भए गेलीह।

पाछाँ बुझि पड़ल जे ई घटना दीदिएक संग घटल छनि। हम लालपीसी लग जा कए बड़ जिद कएलिअनि तँ कहलनि जे अही तरहक प्रपंचमे एक बेर बहिनपा पड़ए लगलीह अपन सासुरमे तँ ओहि बाबाजीकें दाँत काटि, मारि पीटि केबाड़क बिलैया खोलि बाहर भए गेल छलीह। परात भने सभ हुनका बताहि बताहि कहि घरमे ढुकाए देने रहनि। मिसरिया झा हड़बड़ाएल सन हमर दादाकें आबि कहि देलखिन्ह– 'बेटी प्रचण्ड भए गेल छथिन। बेसम्हार। अपना घर मङा लेथुन।'

दादा परात भेने कहार सवारी पठा देने रहथिन। पञ्चमी बृहस्पति रहैक तँ नीके दिन छलैक। दीदी जे अएलीह से सवारी सँ उतरि खोंइछ झारलनि,

एकदम्म शान्त मुद्रामे। बेशी काल चुप्प रहथि। कम बाजथि। मुदा बतहपनीक कोनो लक्षण नहि। आठ दश दिन बितला पर जखन लालपीसी अपन सासुरसँ अएलीह तँ गप्पक क्रममे दीदी कहलखिन जे मिसरिया झा भरि दिन गामक पञ्चैती, खेत पथारमे लागल रहैत छथि। रातिकें थाकिकए सूति रहैत छथि। सेहो बहरी बराण्डा पर। हमरा सन्तान कोना हैत। गुलाब काकी एकटा बबाजीकेँ अनलनि। चुपचाप पूजा करौलनि – दछिनबरिया कोठलीमे। माएके चुप्पे रहबा लेल कहलखिन। आ बड़ी रातिकें हमरा उठाए कहलनि जे एहि बाबाजीसँ नीर लऽलिअ, आँचर खूजत। हम नीर लेबा लेल जखन पूजा लग गेलहुँ तँ बाबाजी खूब फूर्ती सँ, उठि बाहरक बिलैया बन्न क' देलक– डरे बकार तँ हमर बन्न भइये गेल किन्तु जानि ने कतऽसँ ओतेक दम्म आबि गेल जे भागिकए बिलैया अलगा देलिऐ आ देह पर चढ़ैत ओहि बबाजीकें धकेलि धुमधुमाबए लगलहुँ। बबाजी लंक ल' केम्हर पड़ाएल से नहि बुझलिऐ, किन्तु गुलाब काकी हमर तेरहो पुरखाक उद्धार करैत झपटि कए हाथ पकड़ि कहलनि– 'यदि पुरुषक, कानमे ई, बात गेलैक तँ कंठ दाबि देब।' हँ,....... हमर पुरुखो तँ केओ नहि अछि। एतेक बीति गेलैक आ अहाँक ओझाक 'खर्र........खों.....' क स्वर बन्न नहि भेलनि। हम जे कानए लगलहुँ से......'

दीदी मलारपुरक नामसँ डेराए लगलीह। आब ओ सन्हौली मे रहैत छथि, अपन नैहर मे। घुरिकए नहि जएतीह से संकल्प छनि।

दीदी लिखिया मे व्यस्त छलीह। हे......ई भेल पुरइन, हम लिखि दैत छी, मुन्नीदाइ अहाँ एहिमे रंग भरि देबैक......हँ.....ऽ......ऽ एकर छओ टा आँखि होइत छैक, छबो रंग भरि सकैत छी ......आ दुइयो रंगसँ बेरा बेरी झकझका सकैत छी। ....जेना.......? मुन्नी दाइ पुछलखिन्ह।

जेना, लाल आ पीयर, दूनू रंग रमनगरो लगतैक आ शुभ सेहो भेल.....हँ, एकर डाँटी सभटा हरियरे रहतैक, बरड़ी पीयर आ हरियरक मिलान सँ बीचमे पीयर आ चारुकात हरियर.......आ, माछ, काछु, भमरा से सभ तँ रहबे करतैक।

दीदी अति उत्साहित छलीह। हुनक दुलारू बहिनि, विद्या दाइक विवाह आइसँ ठीक पन्द्रहम दिन हेतनि। वर जहिए भेटलनि तकर मासे दिनका भीतर विवाहक दिन स्थिर भए गेलैक। ई तँ कहू जे करिया काका जोगारी लोक छथि,

खरही बाँस सभटा अपनहि डीह डाबरक चारू कात जोगौने रहैत छथि। तैं झट दए घरो तैयार भए गेलनि। जन सभ हुनकर काजमे कनियो ने अतराइ छनि। भरि दिनुक बोनि बीस टाका छैक, तँ ओ जएबा काल सभक हाथमे दू–दू टाका पान खाए लेबाक नामे दइए दैत छथिन। करिया काका बुझैत छथि जे ई सभ पान नहि खाएत, चल जाएत ताड़ी खाना, मुदा ई कहि ने तँ ओ टाका देथिन, ने जन सभ ओतेक साहस करत जे ओहि नामे किछु लेत, से घर दश दिनमे तैयार कऽ देलकनि ओ सभ।

दछिनवारी कात एकटा भीतक घर छल। कहिया कतऽसँ छारल नहि गेल छल। चार चुबैत छल। भराठ दिया कए नवका चार चढ़ाओल गेल। देबाल लेबल गेल। निचलका छओ हाथ छोड़ि ऊपरमे सभटा चूनसँ चुनेठल गेल। नीचा दिस पिठार सँ ढौरल गेल। चूनपर सभटा रंग नहि चढ़ैत छैक। जे रंग चाही से बनारसक कचौड़ी गलीमे भेटैत छैक। एतेक जल्दी के जाएत, के आनत। तैं बड़की काकी कहलखिन जे जतबा दूर लिखिया हेतैक से पिठार सँ ढौरल जाउक। कोबरा घर किछु पैघे रहैत छैक, पच्चीस हाथ नाम आ बीस हाथ चाकर। तकर देवाल कैँ नीक नीक रंगसँ चित्रसँ भरि देबाक छौ। समय तँ आब दशे दिनुक छै, ओम्हर, कोबरा घरक दूनू टा देहरि, बाहर विश्राम घरक दूटा देहरि, भगवती घरक देहरि, भगवतीक सिर, दूनू दिसका ओसारा– एतेक देवाल पर सुन्दर सुन्दर लिखिया हेतैक। करिया काका दीदीकेँ जोड़ भरि साड़ी देब गछलखिनहेँ, आ संग पुरनिहारिकें भरि पेट भोजन। दशो दिनुका।

दीदी घिरनी बनलि छथि। खन एहि धुरखुरमे, तँ खन ओहि धुरखुर ऊपर मे मयूर वा माछक जोड़ा आ नीचामे कमलक लत्ती वा कदम्बक गाछ। भगवतीक देहरिमे तँ आरतक पात आवश्यके छैक। ओ निदेश देने जाइत छथि, चीछ अपनहि फाड़ैत रहथि आ मोसिआबै लेल अन्नू दाइ सभसँ बेशी उपयुक्त रहथिन। शीतैल आ रमाकें ओहिसँ वेशी सोझ, अर्थात रंग भरबाक भार रहनि।

........हे, कनियो हाथ हिलत तँ लेभरा जाएत, तैं जहिना आँक देल छैक, तहिना भरबै– दीदी अपन आदेश देने चल जाथि आ देखैत देखैत देबाल सभ रंग विरंगक लिखियासँ झकझकाए लागल। आ कि तखने......दीदीकें अपन आंगनसँ केओ बजएबा लेल अएलनि। दीदीक सवारी आबि गेल रहनि। हुनकर सासु बड़ दुखित रहथिन।

"......हम नहि जाएब"........सुदामा मायकैं दीदी निर्णायक स्वरमे कहलखिन। "ऐँ यै बच्चा, बूढ़ी दुखित छथि आ अहाँ नहि जेबै? कहू तँ भला लोक की कहत?, सुदामा माय नीक अभिभावक जकाँ सुझौलकनि।

"जे कहत से कहत, हमरा एखन बहिनिक बियाह उपस्थित अछि......" "......हे......ऽ, बुच्ची, सासु चल जएतीह तँ अयश हैत........। दीदीके सासुक हेतु आदर छलनि, मुदा ओ अपन विवशता सेहो जनैत रहथि। आ जनैत रहथि ओहि आगिकें जे खऽढ़कैं लगमे पाबि नहि धधकि सकैत अछि, से ओ नहि सहि सकैत छथि। ई बात मिसरिया झा कहियो ने बुझि सकैत छथि, ओ इज्जति, प्रतिष्ठा, सऽर-कुटुम्बक हेतु समर्पित छथि। हुनका एकटा एकान्त कोठलीक प्रयोजन नहि छनि, जतए पत्नीक संग किछुओ क्षण बिताबथि। दीदीकें बुझि पड़लनि जे एकटा खऽढ़क ढेरी धुआँ रहल अछि। तऽरे तऽर ओकर नीचा जरि रहल छथि, धूँआ हुनक करेजकैं नाश कए रहल छनि। साँस बन्द भ' रहल छनि।

दीदी कखन अपन आंगन अएलीह से बुझबामे नहि अएलनि। माए पंखा लऽके मुँहक ऊपर हौं कि रहल छलखिन्ह। "केहेन मोन अछि?" माए पुछलखिन। 'हम तँ नीके, छी।' कहैत दीदी धरफड़ाकें उठ' चाहैत छथि। ....'यै रामा, मयूरक पाँखिमे बहुत तरहक रंग रहैत छैक......। ओ उठबामे अपनाके असमर्थ पओलनि। पड़ले पड़ले बरबराए लगलीह। 'एत' रामा कहाँ छथि,....... माए कहलखिन।

'ऐं ...... हम तँ अपन आंगन में छी।' हमरा एत' कोना अनलहुँ?'

'अहाँ तँ, अपनहि अएलहुँ। सुदामा मायक संगे.....।' दीदी अपना पर अपनहि अचम्भित छथि। कनियो स्मरण नहि छनि जे सुदामा मायक संग कखन अएलीह।

सोमेश्वर ठाकुर ई कोना कहितथिन जे हमर बेटी सासुर जएबासँ डेराइत अछि। दोसर जे नीक घरक बेटी सासु-ससुरक सेवा करैत, परिवारकें सम्हारिकए रखैत, ताहि पर तँ बट्टा नहि लगबाक चाही! हुनकर बेटीक प्रतिष्ठा पर कोनो आघात नहि आब' चाहियनि। नामी जमीन्दारक बेटी छथि दीदी। घरक इज्जति, नैहर, सासुरक इज्जति हुनक नामें बँचतनि आ बढ़ैत रहतनि। तेँ एखन ई सोचब ठाकुरजीक हेतु अनर्गल होइतनि जे बेटीकें कोनो इच्छो छनि, हुनकर कोनो

अपनहुँ आवश्यकता छनि। भरि राति हुनका निन्न नहि भेलनि। साँझे मे कहार सभकें कहि कए रोकि देने रहथिन जे आइ दिक्शूल छै, काल्हि रवि दिन पूबक यात्रा उचित हेतै।

भोरे ठाकुर जी एकटा नीक अभिभावकक भूमिकामे बेटीकें जगौलनि। खूब आवेश सँ पुछलखिन– 'बेटी, मोन नीक अछि किने?'

ई पुछबाक तात्पर्य मे ई आदेश निहित छलैक जे दीदी कहथि– 'हँ, नीक मोन अछि, आखिर एतेक पैघ लोक स्वयं पूछि रहल छथिन, ताहिसँ अधिक कृपा की भए सकैत छैक। दीदी किछु काल धरि चुप्पे रहलीह। आँखि उठाकए स्थिर दृष्टिएँ पिता दिस ताकए लगलीह। एको बेर नहि कहलखिन जे केहेन मोन अछि। मायके देखलनि - कोठी सँ धान बहार कऽ रहल छथि। माय कोठीसँ धान बहार कए सूपमे रखलनि। झट द बाड़ी दिस गेलीह। खवासिनी भोरे आबिकए चारि बाल्टी पानि इनार सँ भरिकए जलचौकी लग राखि दैत छनि। मुँह हाथ धोबा लेल आ नहएबा लेल। दीदीकें बुझबामे भाङठ नहि भेलनि जे रातिएसँ बैसल कहार सभ हुनका लए जएतनि। अनिच्छा पूर्वक ओ उठलीह। अपनाकें तैयार कएलनि। ई गप्प सौंसे पसरि गेलैक जे दीदी सासुर जाए रहलि छथि। रामा, विद्या, बड़की काकी कुसुम– सभ हुनका अरिआतबाक हेतु अएलीह।

सभक आँखिमे नोर छलैक। किन्तु दीदीक आँखि सुखाएल छलनि। ओ बुझैत रहथि जे समय कम छैक। रामाकें आ कुसुमके ओ अपना लग बजओलनि। ....हे, देखियौ, माछक आँखिक रंग किछु ललौन रहैत छैक, कदमक पात हरियर, कमलक फूल लाल...... आ पुतरी सभक घघरा छीट वा डारि बला– दूनू भए सकैत छैक। दीदी एकटा अध्यापिका जकाँ बुझाए रहल छलखिन।

......."यै, दिन चढ़ल जाइत छैक। कहार सभ अगुताइए।" ठाकुर जी चिकरैत बजलाह। ई दोसर बात जे बेटीकें बिदा करबाक अतराहटि ठाकुर जी कें अपनहि छलनि। सासुक सेवा करबा लेल हमर बेटी जाए रहल अछि– कहबा मे हुनकर प्रतिष्ठा बढ़ैत छलनि।

रौद माथक ऊपर सँ अएबासँ पहिनहि सवारी मलारपुरक देहरि पर आबि गेल। दीदीक सासु असमर्थ रहतिहुँ दौड़िकए पुतहुके आनए चाहलनि। उठि नहि सकलीह।

.......'यै, सँजतिया माए कनियाँ एलीहे। एकटा सूप गोसाउनिक सिर

लग सरका दिऔ। सवारीसँ उतारि कए भगवतीक घर ल' जइअनु।' संजतिया माए आंगन नीपै छलि। छुतहर कात कए नुका कए रखलक। बुझल छै जे अबिते छुतहरक देखब अशुभ होइछै। हाथ धोइत, कनियाँक अएबाक बाट धरि छिच्चा दैत सवारी धरि गेलि। तावत् केम्हरोसँ गुलाब काकी सेहो आबि जुमलीह।

......'ह......ह, आबि गेलीह कनियाँ। एही लेल बहिनदाइकें प्राण अँटकल रहनि'– सहजतासँ बजैत गुलाब काकी झाँप उठौलनि।

एहि बेर हुनकर पुतहु एक हाथक घोघ नहि काढ़ि, थोड़ेक मरौत कढ़ने सवारीसँ उतरलीह। गुलाब काकी हुनकर आँचर सम्हारैत घोघ थोड़ेक नीचाँ ससारि देलखिन। मुदा दीदी प्रतिरोधक मुद्रा मे झटकिकए आगाँ बढ़ि गेलीह, ने तँ पहिने जकाँ झुकलि रहथि ने घोघ नमरौने रखलनि। गुलाब काकी कैं क्रोध चढ़ि गेलनि। तैयो पाछाँ पाछाँ गोसाउनिक घर धरि गेलखिन साधारण शिष्टाचार वश।

दीदी खोंछि झारि भगवती कैं प्रणाम कएलनि। पुनः सासुक कोठली दिस बढ़ि गेलीह। गुलाब काकी अप्रतिभ सन भेलि पछवारि घरक ओसारा पर बैसि गेलीह। बजलीह किछु नहि। गुलाब काकी किछुए कालमे उठि विदा भए गेलीह।

'गुलाब, हम जाइत छी। आब तँ पुतहु आबि गेली.......' जाइत–जाइत लोहछैत सन, गुलाब काकी बजैत रहथि–'आब एहि आंगनमे हमर कोन काज! अपनहि दू सासु पुतहु भेलीह।'

दीदीकें बुझबामे नहि अएलनि जे गुलाब काकी हुनका अबितहि एना रुष्ट किएक भए गेलीह।

x x x x

रौद बेश तिक्ख भए गेल रहैक। चैत मास मे एहेन तिक्ख रौद हेतैक से अनसोहाँत लगैत रहैक। अंगना मे एक हाँज बोनिहार माथपर मसुरी आ खेसारीक बोझ लेने आबि जुमल छल।

'कतऽ रखबै एकरा?' ओहिमे सँ एकटा जऽन पुछलकै। जवाब के दितै? कि तखने माथपर गमछा रखने मिसरियाझा आंगनमे प्रवेश कएलनि– "गुलाब काकी छी यै, ई कतऽ राखल जेतै?" "गुलाब काकी आंगन चल गेलीह।" –पत्नी (दीदी) कहलखिन्ह।

बहुत दिनपर सोझाँ मे पत्नीकें देखि हुनकर दृष्टि ठमकि गेलनि। मुदा किछुए क्षणमे अपन पौरुष प्रदर्शन करए लगलाह– 'चलि गेलीह?'......जाए किएक देलिअनि?'

दीदी हतप्रभ। ओ नहि जनैत छलीह जे गुलाब काकीक एत' रहब आवश्यक छनि। मिसरिया झा ठोकले गुलाब काकीक आंगन बिदा भेलाह।

'हे.......संजतिया माए, बोझ सभकें दक्षिण दिस रखबाके बोनिसभके द' दही' कहैत ओ चल गेलाह। किछु आधा घंटाक पश्चात् ओ गुलाब काकी संगे आंगन अएलाह।

एहि बीचमे दीदी सासुसँ पूछि चूरा दही खाए लेने रहथि। सासुक दवा बिरो द देने रहथिन। ....'एह, देखूने। आइ एलीहे आ हमरा कहलनि चल जएबा लेल......, एहि तरहक ढेर उलहन दैत गुलाब काकी भोजन भातक व्यवस्था कएलनि।

ओना, हुनकर सभक अएबासँ पूर्व दीदीकेँ वस्तुस्थितिसँ सासु परिचित करा देने रहथिन। हुनकर कहबाक आशय रहनि जे हम जहियासँ दुखित पड़लहुँ तहियासँ गुलाब काकी घरक काजमे, थोड़ बहुत सहायता कर' लगलीह, मुदा कनिये कनिये ओ अपनहुँ स्वार्थ सिद्धिमे लागि गेलीह।

जेना धानक समयमे धान तैयार करैत काल ओ मिसरीसँ माङि लेथि– दू एक मोन आ ल' जएबा काल ओहिसँ बेशिए उठाके ल' जाथि। रबी फटकबाक लाथे भुस्सिऐ मे आधा दलिहन झटकि कए दए देथिन– मुदा, दीदीक सासु लाचार रहथि।

'देखथु, हम आब अपनहि सभटा काज, करब......' सासु पुतहुमे ई गप्प होइतहि रहनि ता मिसरिया झा पहुंचि गेलाह। दूनू गोटए चुप्प भए गेलीह।

गुलाब काकी ई बात प्रायः पहिनहिसँ बुझैत रहथि। हुनका मिसरियाक कनियाँक नैहरसँ आएब वा आबिकए बसि जाएब अपनापर आपत्ति बुझि पड़लनि।

......आ, मिसरिया झाक नाड़ीक ज्ञान गुलाब काकीकें जतेक रहनि, ततेक ककरहु नहि– प्रायः हुनकर माइयोकें नहि।

ओ.......ई जे समाजमे प्रतिष्ठा बढ़ए, गाममे पैघ लोक कहाबी तकर हुनका बिजो भ' गेल रहनि। एहि हेतु ओ भरि दिन भूखल रहि सकैत छलाह।

एहि हेतु ओ पानि वा बिहाड़िमे घरसँ बाहर जाए सकैत छलाह। एतेक धरि जे एहि हेतु ओ पत्नी धरिक त्याग कए सकैत छलाह। से, ई सभ ओ जतबे, निष्ठासँ करैत छलाह, तकरा संग ओकर ख्याति लोक धरि पहुँचाएब सेहो ने बिसरैत छलाह। डेग-डेगपर भगवान रामक उदाहरण देब, एकटा अनिवार्य कार्यक्रम बनि गेल रहनि– भगवान राम पत्नी धरिकें त्याग कएलनि, लोक लेल। आ अपनामे रामक गुणक आधान करबा लेल मिसरिया झा दीदीक त्यागक कोन कथा, नाना प्रकारक यातना सेहो देब अपन पवित्र कर्त्तव्य कोटिमे रखैत छलाह।

........तैं दीदी ई निश्चय कए लेने रहथि जे घर सम्हारि लेब। अबितहिँ गुलाब काकीकें भनसा घरसँ छुट्टी दिया देलखिन।

'ऐँ, अहाँ कोना एतेक गोटाक भानस करब, सकब?' – गुलाब काकी चेतौनीक मुद्रामे, बिहुँसैत पुछने रहथिन। मुदा दीदी भनसाघरक काज अपना हाथमे लए लेने रहथि।

दू दिन धरि नीक जकाँ भानस भात कए दीदी सभके प्रसन्न कएलनि। आ तेसर दिन मिसरिया झा पीढ़ी पर बैसले रहथि ता गुलाब काकी बिहुँसैत पुछलखिन्ह बाउ, केहेन भानस भेल-ए?'

मिसरिया झा मुँहमे कऽर नेनहि रहथि ता थू.....थू'' करैत उठि गेलाह। ......'तीमन छी की विक्ख छी से नैं कहि। एक मुट्ठी नोन एतनी तीमन मे देल छैक.......कहू तँ भला, एना किऐक कनिया केलिऐ? हमरो हटा देलहुँ आ.....' कहू त भला, भोरसँ खेतपर रहैऐ बौआ, आ एक मुट्ठी अन्न पेटमे नहि गेलै। ....'बाउ, कनिए बिलमू। हम बना दैत छी। गुलाब काकी झट दऽ भनसा घर गेलीह, आ जल्दी जल्दी बड़ीक झोर बनाए दोसर थारी परसलनि। पीढ़ी पानि सेहो अपनहि हाथैं कएलनि। आ अपन दुलारू बौआकें बजाए अनलखिन।

......'एह, की रुचिगर भोजन अछि। काकी, काल्हिसँ हमर भोजन अहींक हाथें.......' 'मुदा........' दीदी उत्तेजित होइत किछु कह चाहलनि। 'आबहुँ चुप्प रहू। हमरा जीबए देब की नहि? मिसरिया झा गरजैत बजलाह। दीदीक सासु ओछाओनपरसँ उठिकए बहरएलीह– 'ई कथीक एतेक हल्ला छिऐक?' 'पुछिअनु अपन दुलारू पुतहुँसँ! की सभ भेलैए?'.... मिसरियाझा माएकें देखि थोड़ेक नरम भेलाह।

'माँ, राखल राखल तीमन नोनगर होइत छैक? हम तँ हिनका खुऔनहि छलियनि। किछु गड़बरी लगलनि?......दीदी हारि मानबा लेल तैयार नहि छलीह।

.......'नहि तँ, हमरा तँ बड़ स्वादिष्ट लागल सभ वस्तु। कतेक दिनपर भरिपोख खाएल भेल।

.........'तँ एतेक नोन कोना आबि गेलै तीमन मे?' मिसरिया झा आश्चर्य प्रकट कएलनि। दीदी आँखि उठबैत बजलीह– 'भूत अबै छै।' एक दोसरक ठोर पर मुसकी आबि गेलै। गुलाब काकी लोहछैत बजलीह– 'भूतक नाम लगाकए अपन अलहलरैनी जुनि झाँपू। सासु दुखित छथि तँ हुनकेसँ सभटा पुछैत छियनि? गुलाब काकी 'चिकर' लगलीह।

मुदा आओर सभ अनुमान लगाए लेने रहथि– जे केओ तीमन मे ऊपरसँ नोन द' देलकै।

x x x x

मेघक टिक्करि आकाशकें झँपने जा रहल छलैक। दीदी दू माससँ ऊपर सासुर रहि गेलीह। सासु प्रसन्न छलखिन्ह। ....एकाएक जी ओकाए लगलनि दीदीक। चमैन बजबाओल गेल। सभक आँखि प्रसन्नतासँ चमकए लगलैक। किछु छियनि..... सासु ककरहु–ककरहु कहि बैसलखिन। गुलाब काकी फज्झति क' देलखिन– 'एखन नहि कहियौ, डाक्टर सँ देखेबै तखन ने......।' दिन बितलै....... आ एक दिन मिसरिया झा अपनहि गुलाब काकीक संग पत्नीकें लए दरभंगा गेलाह। माएकें मना केलखिन.....दुखित रहै छी......की करऽ जाएब?'

ओतए बहुत पैघ डाक्टरसँ देखबाओल गेलनि दीदीकें। रातिमे रहबा लेल कहलखिन डाक्टर साहेब। दीदी गुलाब काकीक संग मिसरिया झाक भेल गप्पक आशय बुझलनि। ओ ई जे गर्भ मे बेटी छनि। रातिमे गर्भपात कराओल जइतैक।

.......'स्टेशन......स्टेशन......स्टेशन, टेम्पों बला चिकरि रहल छल। दीदी इशारा केलखिन। टेम्पो क्लिनिकक सामने रुकि गेल। मिसरिया झा आ गुलाब काकी दीदी के डाक्टरक संरक्षण मे दए कोनो सम्बन्धिकसँ टाकाक इन्तजाम करबा लेल गेल छलाह।दीदी टेम्पोपर सवार भए गेलीह। संगमे एकटा

छोटकी झोरा मात्र रहनि। एकटा गमछा आ गिलास।

'कतऽ......' 'सन्हौली.......' 'मुदा, हम 'त स्टेशनेटा धरि जाएब।

हमरा यदि सन्हौली धरि पहुँचा देब तँ नीक जकाँ टाका देब।' दीदी कहलखिन। टेम्पो वलाकें एहेन एहेन सवारी भाग्येसँ भेटैत छैक। सन्हौली दरभंगासँ मात्र दस किलोमीटर। 'पाँच सय लेब......' 'हँ, हम दए देब, जल्दी चलू।' टेम्पो प्रस्थान कए देलक।

रस्ताक झमारसँ दीदीक देह दुखाए लगलनि। उँच नीच सड़क। जे सए किलोमीटर दूरी ई दश किलोमीटर बुझि पड़लनि। हवाक रुखि सेहो विपरीत छल। पुरबा जोरसँ धूरा उड़ा रहल छल। तैयो, हुनका अपना पर गर्व छलनि अपन निर्णय पर प्रसन्नता छलनि।

किन्तु एतेक टाका.....पाँच सय ओ कहियो देखनहि नहि रहथि। माइयो के अरी-खरीक हेतु कोसलिया टाका रहैत छनि। बहुत जोड़ि जाड़िकए मासमे गोटेक सय बाँचि जाइत छनि। ई सोचिते रहथि ता ढेर बस सभ एकट्ठा देखलनि। प्राय: ई बस स्टैण्ड छलैक।

'टेम्पो.......' टेम्पो बला तेजी सँ जाए रहल छल। ओ नहि सुनलक वा-सूनिकए अनठौलक। 'टेम्पो......' दीदी दोबारा स्वर ऊँच कए बजलीह। टेम्पोबला पाछाँ तकलक। ओ अपन प्लास्टिक बला डोलचीसँ एकटा बीसक नोट बहार कए ओकर हाथ दिस बढबैत, बजलीह 'रोकू।'

टेम्पो बला प्रश्नवाचक दृष्टिसँ तकैत आगाँ बढ़ैत जा रहल छल। 'हम कहैत छी....... रोकू......' मुदा सन्हौली ई नहि छिऐक।'

'हम बुझि कए कहैत छी, रोकू......।' टेम्पोबला किछु क्रोधित होइत टेम्पो रोकलक। 'अहाँ एतबे दूर लेल तँ नहि कहने रही। दोसर जे पाँच सय तावत रेकातोकी सुनि किछु गोटए कौतुहल वश जमा हुअए लागल टेम्पो वला एकटा अपशब्द कहैत अपन गाड़ी तेजीसँ पाछाँ कएलक।

सन्हौली चानपुरा...... सन्हौली एकटा बसबला चिकरि रहल छल। बस ठसाठस भरल छलैक। मुदा दीदीक चढ़बाक मुद्रा देखि ओ इशारा कएलक। कोनो तरहें लोककेँ ठेलैत दीदी बस पर सवार भेलीह। एक गोटेए हिनका देखितहिं अपन सीट पर आधा जगह दैत बैसबाक संकेत कएलक।

बस जाए रहल छल। दीदीकें कतहुसँ जानमे जान अएलनि। सन्हौली पहुँचितहिँ बस रूकल। दीदी ओहि परसँ भीड़कैं ठेलैत उतरलीह। ओतएसँ थोड़बे दूर पर घर छलनि। हाथमे छोटकी प्लास्टिक बला डोलची मात्र छलनि।जाहि मे एकटा साड़ी सहित पहिरनाक कपड़ा आ तीन टाका मात्र छलनि। एकबेर सोचलनि जे रिक्शा नहि कए पएरे अपन हवेली चल जाइ। मुदा, एना पएरे बेटीके चल अबैत देखि हुनकर पिता बहुत चिन्तित ओ क्रोधित भए जइतथिन्ह। ओना, एखन ओ जे क्लिनिकसँ भागिकए आएल रहथि से सभटा हुनकर नैहर आ सासुर दूनू कुलक मर्यादाक प्रतिकूल छलैक। मुदा, एहि प्रतिकूलतामे दीदी कैं अपन गौरवक, अपन कर्तव्यक प्रति निष्ठाक अनुभव भए रहल छलनि। पेटमे आएल जीवक हत्या ओ नहि हुअए देलखिन्ह, आ से ओ अपन माएकें कहि देथिन्ह। एहि लेल हुनकर पिता सेहो नहि तमसेथिन्ह, से हुनका विश्वास छलनि।

बुच्ची.......?' सहसा दीदीक ध्यान पाछाँ सँ अबैत रिक्शाबलाक स्वर पर गेलनि। घूमिकए तकैत छथि तँ देखेत छथि जे रमुआ रिक्शा रोकि कए ठाढ़ अछि।

'की रौ......ई रिक्शा कहियासँ?'

'एह, एहिबेर रौदी पड़लै ने, तँ हमरा आउर कैं किछु लोन भेटलै सरकार दिससँ, किछु अपन उद्यम करैले। से, रिक्शा कीनि लेलिऐ। नीक आमदनी होइछै।'

'हँ, तँ घर पर लेल कतेक लेबे?'

'अहाँ जे देबै.....।' दीदी रमुआक आवेश कें नहि टारि सकलीह।

'आउ......आउ..... बच्चा? दीदीकें देखैत पिता उठि कए ठाढ़ भेलाह।......ऐँ एना किऐक? ओझा कतऽ छथि.....?' प्रश्नक ढेरी लागऽ लगलनि। तावत सरकी तरसँ पत्नीक स्वर अएलनि– 'हऽ........हऽ.......अएबे केलीहे, कतऽ हेथिन, बाटमे अपन भगिनी ओत, उतरि गेल हेथिन। अबिते हेता.......' दीदी संकट कैं तत्काल टरैत देखि प्रसन्न भए घर दिस पएर बढ़ौलनि। फुलिया माय चाउर फटकि रहलि छलि। दौडक़िए सूप भगवती घर दिस लए जाए गेलि। दीदीकें माए सेहो हुनका संग लए गोसाउनि घर गेलीह। किछु अनसोहाँत घटनाक आशंका भइए गेलि रहनि। तँ फुलिया माए कैं टरकबैत

बजलीह– 'यै, ओहि घरमे कोनियाँ छैके। तहीमे बुच्ची खोंईछ झारतीह। अहाँ काज करब। ओ देखि नेने रहथिन जे बुच्ची खोंइछ नेनहि ने छथि, ईहो जनैत रहथि जे हुनका दिन नै गेलनिहँ तकाकए, तखन ई असमयमे आगमन......?' किन्तु से ओ ककरहु ने कहथिन। हुनकर बेटीकें केओ उदण्ड, बदमास कहतनि से अवसरे ने आबए देथिन।

'जाऊ यै फुलिया माए.........आइ हाट लागल छैक। बुच्ची लेल माछ नेने आऊ.....?' से कहैत बुच्चीक माय आँचरक खूटसँ एकटा दश टकही बहार कएलनि। एहि बेर माछ बड़ महग भए गेल रहैक - बीस टके किलो। परुका धरि ओ दश टके रहैक, तखन बारह तखन पन्द्रह आ देखैत देखैत बीस टके भए गेलैक। मुदा बुच्ची सासुरसँ एलीहे........माछ तऽ अवश्ये चाहियनि......। आ बड़ी - से तँ घरमे घाठि छैके।

आइ तँ बड़ी भात खेथिन्ह.....काल्हि ने माछ बनौथिन......, फुलिया माय उझलल चाउरकेँ सम्पन्न कए झटकए चाहैत छलि। नहि, दोकान लग माछ ओतेक नीक नहि रहैत छैक एखने जाउ.....जल्दी......आबि कए जे हेतै से हेतै, नहि तँ काल्हि.......।' फुलिया माय मलिकाइनक जिद्दक आगाँ नत भए गेलि। दशटकही लैत बढ़लि हाट पर। दीदीके माय पुछलखिन्ह– 'एना एकसरे ओझा आब देलनि?'

दीदीक आँखि छूटल धार भए गेल। बहुत कठिनसँ अपनाकेँ सम्हारलनि आ सम्पूर्ण गाथा माएकेँ कहि सुनौलनि। ......जे हुनका कल्याणक योग्यता छनि......पेटक......नष्ट करबए चाहैत छलथिन्ह– पेटमे कन्या पोसा रहल छनि।...... तेँ नैहरो ने खबरि देलखिन.....आ, अन्तमे ओ क्लिनिकसँ चुपचाप भागि कए एकसरे आबि गेलीह आब ओ कहियो सासुर नहि जएतीह.....।' माय सभटा चुपचाप सुनि रहलि छलीह।

......आ, टकटकी लागल रहनि दुरुक्खा दिस। फुलिया माय टाटे लगसँ हलसैत बाजि रहलि छलीह– 'आइ हम बुच्चीक नामे जित्ते रहु लऽ लेलिऐ.....' हे........हैया.....हाँ सू....., लगले बनाइयो दैत छियनि।' मायक संकेतसँ दीदी चुप्प भए गेलीह।

माथ घूमए लागल रहनि दीदीक। माय असमयमे एना अबैत देखि बेटीकें ईहो ने पुछने रहथिन जे की भोजन कएलहुँ। ओ तँ अपन बेटीसँ एकान्ती कए सभटा बुझि लेलनि, तखन एकर सोह अएलनि जे बेटी किछु मुँहमे देलक अछि

वा उपासले अछि।

माथमे चक्करक संगहि बाड़ी दिस भगलीह दीदी। रद्द भ' रहल छलनि। फुलिया माय सेहो दौड़लि। माएकेँ निश्चिन्त देखि खिसिआए बाजलि– 'केहेन माय छथिन, बुच्चीकेँ मोन बड़ खराब छनि आ ई हँसै छथिन्ह......' 'हूँ......ऽ....ऽ' बौआसिन निश्चिन्त जकाँ छलीह।

दीदीक हाथ मुँह धुआए पलंग पर सुताओल गेलनि। आ फुलिया माय सेहो हर्षित भेलि ई बुझि जे किछु छियनि।

रातिमे, भोजन भातक उपरान्त सोमेश्वर ठाकुर पत्नीसँ सभटा वृत्तान्त बुझलनि। आ दूनू व्यक्ति निर्णय लेलनि जे बुच्ची आब एत्तहि रहतीह। पेटमे आएल कन्या एही घरमे पालल पोसल जएतीह।

शिबूकेँ दिल्लीमे एकटा नीक नोकरी भेटि गेल रहनि। अपन पिसियाक सावधानीक कारणे हुनका पढ़ाईमे बहुत बाधा नहि आएल रहनि। ओना एखन धरि ओ शुद्ध बी०ए० पास कएने रहथि, जे एकटा सेठक मन्दिरमे पुजेगरीक काज एवं ओही व्यक्ति द्वारा चलाओल जाइत मिडिल स्कूलमे अध्यापन सेहो करए लागल रहथि। एखन ओ कोनो छुट्टीमे अपन गाम आएल रहथि।

एम्हर भागमन्ती बौआसिन, अर्थात् दीदीक सासु अज्ञात आशंका सँ त्रस्त भए संजतिया मायकें अपन नैहर, पठौने रहथि। समाद ई जे जौं शिबू आएल रहए तऽ हमरा देखि जाए, हम दुखित छी।

शिबू रहथि थाकल, मुदा पिसियाक प्रति अगाध श्रद्धा रहनि तेँ लगले मलारपुरक हेतु बिदा भए गेलाह। एतए पहुँचितहिँ जे दृश्य देखलनि से विस्मित भए गेलाह।

आँगनमे लोकक ठट्ठ पड़ल छलैक। गुलाब काकी हाथ नचा–नचाकए चिकरि चिकरि कए मिसरियाक सासुरक उद्धार कए रहलि छलीह।

'जहिए ई कथा एलैक, हम गुलाबके कहने रहियनि जे पुतोहु सासुर नहि बसत। घरकेँ उजाड़ि कए राखि देत।.... से घर कोन, एहि गाम भरिक लोककेँ कलंकक पोटरी थोपि देलक–ए। नहि जानि, दरिभंगामे कोन यार भतार छलैक, कहियासँ की वेवहार भेलैक जे हमरा सभक आँखिक काजर पोछि देलक। छनमे छनाक कए, देलक......?'

'की भेलै?

.....' एकटा महिलाक सहज जिज्ञासा भेल।

'भेलै की......की.......हम दूनू गोटए फूलमतीक डेरापर गेलहुँ आ डाकटरनी कहलक जे कनी कालमे अबैत छी, से एकटा कोठली किराया पर कए कनियाँके भरती करा देलिए।

'एँ, कनियाँ दुखित छलीह की?' – दोसर गोटए पूछि देलखिन।

'की छल, कतऽ छल, हमरा सभकेँ तँ कहलक जे.....'

भागमन्ती बौआसिन अपन आँगनमे एतेक घोल नहि सहि सकलीह। ओछाओनपरसँ उठि कए अएलीह– 'हँ यै, कल्याणक योग्यता.......' 'अहाँ आबहु चुप रहू गुलाब, पुतहु उढ़रि गेले आ झाँपन दैत छियनि।' गुलाब काकी गरजए लगलीह। एतेक घोल फचक्कासँ यदि केओ अनासक्त छल तँ ओ छलाह एहि घरक मुखपुरुष– अर्थात् मिसरिया झा अर्थात् अपन जमीन–जाल पर ध्यान केन्द्रित रखनिहार भागमन्ती बौआसिनक एकमात्र सुपुत्र।

.......'हौ शिबू, ओ कतऽ चल गेलखुन, से तँ हम नहि जनैत छियहु, जे भारी जंजाल माथ पर छोड़ि गेलीह........।'

शिबू प्रश्नवाचक दृष्टि सँ भाइ दिस तकलनि।

'ई कहैत छियहु जे हमर ससुर अपन बेटीक नामे पँचगछियासँ सटल उत्तर जमीन लिख' चाहैत रहथि, से......आब तँ......'

'एह भैया, हद्द भए गेल। भौजी कतऽ गेलीह कोना छथि से चिन्ता अहाँकेँ नहि अछि आ हुनकर जमीनक मादे......' शिबू उत्तेजित भए बाजए लगलाह।

'एह तोरो चिन्ता जे छौ से अनर्गले । पुनः चारूभर ताकि फुसफुसा कए शिबूकें बुझाब' लगलखिन्ह – हे देखह, एहि जमीनक वास्ते तँ तोरापर की की ने बितलऽ, ओतेक दुःख तँ हमरहु ने भेल आ.....।

'भैया, अहाँ के तँ....., दिमागे खराब भ' गेल......'

'की.......की....., हमर दिमाग आ खराब?' ई गारि पढ़बाक तोरा ओकाति? भाग भाग तँ.....पेटो भरबाक सामर्थ्य नहि छलहु.......?'

शिबू अपना पर होइत वाक्–प्रहार सहबाक स्थितिमे नहि रहलाह। कोठली

दिस आबि अपन पिसियाके प्रणाम कए आपस जएबाक अनुमति मङलनि।

देखलनि, पीसीक आँखिसँ झर झर नोर' बहि रहल छल। 'बेश, आब जाइत छी। शिबू देखलनि जे साँझ पड़ि रहल छल। पच्छिमक आकाश लाल भए गेल छल। सूर्य अस्ताचलगामी भए गेल रहथि।

'हे लऽ लिअ'......एतेक दूरसँ अएलहुँ। किछु भोजनो ने भेल।'...... 'ई तँ हमर अपन घर छी। ओना, हम, भोजन कइएके आबि रहल छी।' शिबू साफ–साफ फूसि बजलाह। बात तँ ई रहैक जे ओ पीसीक समाद पर हलसैत–फुलसैत आएल रहथि ई सोचि जे भौजी छथिए, नीक निकुत भोजन करब। भए सकैए जे माछ भात खाइ, आ पीसीक बनाओल सरैकट्टा दही तँ मोन होइए जे हाथे चटैत रहि जाइ। से तकर स्थानपर, आइ एक घोंट पानियो ने पीबि सकलहुँ। शिबूकें ओहि घरक कोन–कोन देखल रहैक। कतऽ डोल छैक, कतऽ घैलची छैक, लोटा कतऽ राखी–ई सभटा हुनका बूझल रहनि। पीसी तावत स्वस्थ रहथि, पिसियौत कर्मठ आ विचारवान रहथि। मुदा पिसियौतक कनिया नैहर ओगरने छथि, ई बूझि शिबूकें दुःखो होइन। से, जहिया ओ ई बुझलनि जे भौजी आब अपन घरमे रहैत छथि तँ हुनका प्रसन्नता भेलनि। ओ ताही उत्साह मे आइ थकलो रहलापर पीसीक गाम् विदा भ' गेल रहथि। ......आ, एतए तँ दोसरे झंझट देखलनि। हुनकर पएर अपन घर दिस नहि बढ़लनि। ओ, भाउजकें तकबाक हेतु सन्हौली बिदा भए गेलाह।

शिबू वायुवेग सँ बढ़ल जा रहल छलाह। मोन पड़ि रहल छलनि......भैया कतेक जतनसँ खेत छोड़ौलनि। कलकत्तामे कतेक कष्ट उठौलनि.......आ भौजी भेटलखिन तँ लाखमे एक......सुन्दरि, बुद्धिमती। आ पुनः गाम अएलाह.....गृहस्थी सम्हारलनि, ...पीसी......ओह......ओइ दिन जे खेतपर मारि भेलैक.......से, कतेक कनैत रहथि। लछमिनिया पुतहु भेटलखिन.......रूप रंग केहेन........आमक फाड़ा सन बड़का–बड़का आँखि.......कोमल वाणी......।

साँझ पड़ि गेल रहैक। सोमेश्वर ठाकुरक घर रस्ताक दहिन भाग वला गली दिस पड़ैत छैक। शिबू कें दिशांश लागि गेल रहनि। ओ अपना जनैत दहिने घुमलाह मुदा ओ हुनकर वामा भाग छलनि। आगाँ डेग झटकारलनि। भूख बड़ लागल छलनि। जौं जौं आगाँ बढ़ल जाथि, तौं तौं गाछी, घनगर होइत जाइक।

हकमऽ लागल रहथि, छातीक धरधरी अपनहुँ सुनाए पड़ि रहल छलनि। तखनहि एकटा आकृति अपना दिस बढ़ले अबैत देखि माथ सन् सन् करऽ लगलनि। तैयो अपनाकें नियन्त्रणमे रखैत संयत बनबाक मुद्रा प्रकट कएलनि– के?

'एँ, हम छी......जनका'...... कतहुसँ जान मे जान अएलनि। 'एँ, हम.....हम छी शिबू.......' सोमेश्वर ठाकुरक गताती मे...... हकमैत हकमैत शिबू बजलाह। 'आ.......हा......हा, कुटुम्ब। हम अहाँके खूब जनैत छी। ओ.....वएह ने......ओझाजीक पिसियौत.......एम्हर......की.....पोखरि दिस लेल जाइत छी। नै 'यौ जनक हमरा दिशांश लागि गेल...ए। थाकल छी.....आ....अन्हारो भ' गेलैए.....। 'नहि नहि, चलियौ ने कुटुम्ब......हम' रास्ता देखा दैत छी– ज़नका भरौस दिअबैत आगाँ बढ़ल।

शिबूके ज़ान मे जान अएलनि। छातीक धड़धड़ी तैयो कम नहि भेल रहनि। तालु सुखाइत रहनि। जनका संगे ओ सोमेश्वर ठाकुरक दरबज्जापर अएलाह। 'के........घरक भीतरसँ सोमेश्वर ठाकुरक तेज स्वर आएल.......।'

'........एँ.....हम.......हम छी.......शिबू, हमर भौजी आबि गेलीह ने......हम हुनके तकैत अएलियनि हैं.......।' हकमैत हकमैत शिबू बाजि रहल छलाह।

'हँ.......ऽ.....' सोमेश्वर ठाकुरक उपेक्षापूर्ण स्वर छल।

'......हमरा यैह भरोस छल........जे.....तावत दीदी (शिबूक भाउज) धीरेसँ उठि बहरी आबि गेलीह। सोमेश्वर ठाकुर सेहो अपनाकें संयत करैत बहरएलाह।'

'हौ जनका कुटुम्बकें पएर धोबाक पानि दहुन बड़ी दूरसँ आएल छथि। सोमेश्वर ठाकुरक ई स्वभाव छलनि जे आगन्तुक कुटुम्बके देखि आह्लादित अवश्य होइत रहथि। दोसर जे शिबूकें ओ बहुत आत्मीय मानैत रहथि– 'एकटा सन्तान जकाँ हुनका स्नेह दैत रहथिन।

'नहि......, हम तँ यैह बुझबा लेल आएल रही जे भौजी, कुशलसँ पहुँचि गेलीह ने, हमर पीसीकें बड़ चिन्ता छनि। से, हम, बुझिए गेलिऐ.....।' आ भाउज दिस ताकि ओ बजलाह– 'एक लोटा पीबाक जल चाही। हम चाहैत छी जे एखन कोनो, ट्रेन भेटिते........।'

'यौ कुटुम्ब, हमरा एहेन लोक किएक बुझैत छी जे राति बिराति, अन्हारमे अहाँके हम बिदा क' देब? पहिने किछु जलपान कऽ लिअऽ, भोजन जखन तैयार हैत।........'

हे.....ऽ...ऽ...यै...चारिटा पिरुकिया आ मखान भूजि कए बुच्ची दिया, पठा दिअ ते......शिबू के बड़ जोरसँ पियास लागल छनि।

ई सब गप्प भइए रहल छल ताऽ कोम्हरहु सँ फुलिया माय द्वारा अन्दरसँ रिकबीमे मखान आ पिरुकिया आबि गेल। शिबूकेँ एकर प्रयोजन छलनि। बात तँ ई छलैक जे ओ सोमेश्वर ठाकुरसँ विचित्र जकाँ डेराएल छलाह। हुनकर बेटीकें सासुरमे कोनो तेहने कष्ट छलनि जे नुकाकए भागए पड़ल रहनि। आ से बुझितो शिबू पीसी आ भाउजक मोहमे सोमेश्वर ठाकुरक दरबज्जा पर जएबाक साहस कएलनि। ई हुनका अवधारल रहनि जे सोमेश्वर ठाकुर मलारपुरसँ आएल कोनो व्यक्तिकेँ खूब फज्झति करथिन्ह।

मुदा, से हुनका नहि सहए पड़लनि। एकर विपरीत, सोमेश्वर ठाकुरक सहज वात्सल्य, आतिथ्य प्रेम। ....एतबे मे, आब हुनका अपन थाकनिक अनुभव हुअ लगलनि। किछु, चिन्ता सेहो रहनि जे भौजी एना किऐक कएलनि।

सोमेश्वर ठाकुर, अपनहुँ व्यग्र रहथि। केओ हुनकर डेन पुरनिहार तँ रहनु। बुच्ची कें सासुर तँ नहि जाए देथिन, किन्तु हुनकर आबए बाली बेटीक हेतु ओ विशेष चिन्तित रहथि।

तखन, राति जखन निःशब्द भ' गेल तँ शिबू लग ओ अपना व्यथा एना प्रकट कएलनिः—

'कुटुम्ब, आइ धरि हम अपन कन्याक विषयमे निश्चिन्त रहलहुँ। एकरा अपन बुद्धि आ विवेक छै, जाहिसँ कतहु एकरा असौकर्य नहि हेतै - से हम बुझैत रहलहुँ। ......आ....आइ.....एहेन दिन भेल जे.....जे....।'

ठाकुर जी आगाँ बजबामे अपनाकें असमर्थ पाबि रहल छलाह। शिबू, हुनकर एहि चिन्ता ओ असामर्थ्यक कारण बुझैत छलाह— बेटीक नव वयस, पतिसँ वियुक्त कराएब, आ जँ से नहि तँ भ्रूणहत्या सन पापक भागी बनब।

'.....हँ, हमरा अपने कहि सकैत छी, अपने के कोन तरहक चिन्ता अछि। हम अपनेक संग देब। हमरा किछु-किछु आभास भेल अछि जे

भौजीकेँ.......किछु नीक समाचार........।'

'.........हँ शिबू, बुच्चीकेँ कल्याणक योग्यता छियनि। से, शहर जाकए ओझाजी आ हुनकर गुलाब काकी बुझ' चाहैत रहथिन्ह जे कन्या छिऐक वा बालक, आ यदि कन्या छिऐक तेँ ओकरा नष्ट करा दिऐक........' बुच्ची ई बुझि गेलीह आ तैं कोनो तरहें चोरा नुकाकए नैहर मे शरण लेलनि। हम एहेन अवस्था मे तँ हुनका नहिए जाए देबनि सासुर, जे एहि पर यदि ओझाजी बेशी तमसा जएताह तँ ....तँ हम राखि लेब अपन बेटी आ नातिनकेँ......। आगाँ जे हेतैक.......यैह ने......जे हमर परोक्षमे......।' एखन तँ ई जीव हत्या नहि होइक.......।'

शिबू जेना एही क्षणक प्रतीक्षा मे छलाह।

'......आगाँ नीके हेतैक, हम अपनेक संग छी। भौजीकेँ वा हुनक सन्तानकेँ टाका वा देखनिहारक कमी हम नहि हुअ' देबनि। हमर भैया धनबताह भ' गेलाहे। एखन, तँ हम जिबैत छी ने.......। ई हमरो भौजी छथि आ अपने एखनुक स्थिति सम्हारि देबैक तँ आगाँक चिन्ता नहि करियौ......? शिबूक स्वरमे दृढ़ता छलैक। सोमेश्वर ठाकुर किछु आश्वस्त भेलाह।

'वेश......, कुटुम्ब, आब राति बेश गढ़ा गेल छैक। पुनः भोरमे गप्प हेतैक.....।' ठाकुर जी उठबाक उपक्रम करए लगलाह। अपने कोनो तरहक चिन्ता नहि करियौ। मुदा, भोरमे तँ हम पहिले बससँ......।'

'औ जी, बसही बला बस छओ बजे भेटत। तावत हम, जागि गेल रहैत छी......।'

शिबू ई नीक जकाँ अनुभव करए लगलाह जे ठाकुरजी आब अपनाकेँ कमजोर मानए लागल छथि। एहि बेरक आगमनमे ओ ठाकुरजीक रोबदाब, नापल तौलल गप्प ई सभ किछु ने देखलनि। आओर ओ जे देखलनि से छल हुनक मौन आत्मनिवेदन। आब ओ अपन पुत्रीक विषयमे नीक जकाँ सचेत भए गेल रहथि आ' ईहो बूझए लागल रहथि जे एकभगाह चिन्तनसँ जमाए धनबताह भए गेल छथि। मिसरिया झा केवल जमीन आ धनकेँ लक्ष्य बनाए जीवन जीबए चाहैत छथि। ई गर्भपातक आयोजन आ गर्भहिमे पुत्र वा पुत्रीक प्रति सतर्कता तँ हुनका कहियो सपनहुमे ने सोचल छलनि। एहि बिन्दुपर शिबूक संग ठाकुरजीक विचारमे सहमति छलनि जे बुच्चीक (दीदीक) गर्भक रक्षा हुअए आ भावी

सन्तानक पालन नीक जकाँ हुअए।

......शिबूकेँ एकटा गीतक ध्वनि सम्मोहित कएने जा' रहल छलैक–

मङ्गलमूर्ति भवानी आबहु
खोलह अपन दोहारि हे
कतेक कतेक हम पीड़ अङेजब
धएल तोहर पद हारि हे।
फूल अछत बूझल उपचार ने
बुझल ने स्तुति गान हे
कोन परि देवि भवानी माता
राखि सकब तोर मान हे।
जओं हम्मर तों तेँ तोहर हम
से बुझि करुणागार हे
दैह शरण तोर चरण गहिअ माँ
पार करी मझधार हे।

तन्द्रित अवस्था मे ई स्वर लहरी हुनका अपना दिस घीचि रहल छलनि।

'......कुटुम्ब, जगलहुँ की?'........ई ठाकुर जीक स्वर छल। शिबू आँखि खोललनि। आगाँ मे फूलक डाली नेने ठाकुर जी ठाढ़ छलखिन। अड़हुल आ अपराजिता सँ डाली भरल छलनि। पूब दिस आकाश मे लाली आबि गेल छलैक।

.........हँ.....ऽ हँऽ........अङैठी मोर करैत शिबू उठलाह।

'.....ऐँ....., एतेक बेर भ' गेलैक?' शिबू एक्के झोंकमे उठि बिदा भए गेलाह बस स्टैंड दिस। ठाकुर जी कतबो रोकलखिन, मुदा, जाइत–जाइत शिबू बुझबैत गेलथिन्ह.....'हम माएकें कहिके नहि आएल छियनि, ...अबैत रहब, ... अपनेक बेटी हमर भाउज छथि, जे नीक बेजाए समाचार हुअए, हमरा अवश्य कहब....... हम अपनेक संग छी......' आदि।

X X X X

गाममे सबतरि एक्केटा चर्चा पसरल छलैक। सेहो चुप्पे चुप्पे। जोरसँ

बजबाक केओ साहस नहि कए सकैत छल- सोमेश्वर ठाकुरक घरक गप्प रहैक। सोमेश्वर ठाकुरक भरोसे गामक बेशी घरक 'बेर-कुबेर' निमहैत छलैक। तखन खुल्लम-खुल्ला हुनक घरक हँसारथ केओ ने क' सकैत छल। हँ, हुनक घरक दोग-दागक 'झोलकें' देखार करबामे बेशी गोटएकें आनन्दोक अनुभूति कम नहि होइत छलनि। सतलखा बाली जखन बेटीक बियाहमे दू लाख देब गछलखिन तँ एक लाख ठाकुरेजीसँ मङने रहथि। - दू तीन बरखने आम बिका जइतनि तँ सधा दितथिन। से, सोमेश्वर ठाकुर पैंच नहि द' पाँच हजार सहजहि दए देलखिन। फल ई भेलैक जे सतलखा वाली मझिला बाबूक (सोमेश्वर ठाकुरक) घरक दोग-दाग सँ कोनो ने कोनो गदौस देखारे क' लेथि। हुनकर तीक्ष्ण दृष्टि आ व्यंग्यबाणसँ मझिली बौआसीन (दीदीक माए) एना ने आहत होथि जे राति राति भरि निन्न नहि होनि। से, दीदी आबि गेलीह, एकसरे अएलीह, बिना कोनो पूर्व सूचनाक आबि गेलीह, ई सभटा खेरहा सतलखा बाली दू-तीन टा अङनामे पसारि, बेरखन 'मझिली'क आङन अएलीह।

आइ ओ अपन धराउ साड़ी, वाइलक हरियर कंच नूआ, मैचिंग ब्लाउज जकरा ओ दड़िभंगाक 'सैयद टेलर'सँ तैयार करबौने रहथि, से पहिरि कए आएल रहथि। माथपर बड़का हरियरे रंगक बिन्दी, पएरमे पाँजेब सेहो पहिरि नेने रहथि। चमकैत-दमकैत, मुस्कुआइति सतलखा बालीकें देखि बाबीकें बुझबामे भाङठ नहि भेलनि जे आइ हुनकर व्यंग्यबाणक निशान हमरे बुच्ची हेती।....

'आबथु', ठेहुनपर हाथ दैत उठि, पुनः बाबी देयादिनीक पएर छूबालए झुकलीह। 'अँय, बुच्ची अएलीह?'- सतलखा बाली आशीर्वाद दैत पूछि देलखिन। 'हँ.......।' मंद स्वरसँ बाबी बजलीह। 'सएह तँ, हमरा कमली माय कहलक तँ विश्वासे ने भेल। हम कहलिऐ जे बुच्ची औथिन सेहो ने हुनकर माय हमरा कहने छलीह, आ ई आबियो गेलीह। तैयो ने हमरा खबरि देलनि, से बुझि पड़ल जे फुसिये कहैये।.......निके ना छथि ने ....?'

'नहि, निके रहितथिन तँ गोर लगै लेल जएबे करितथिन ने।' 'की हेतै, ओना लखना कहैत रहए जे एकसरे, पएरे आबि रहल छलीहे।'

'.......नहि तँ, देओर संगे छलखिन।'

.......जे कहू, गाममे तँ सोरहा अछि जे बुच्ची सासुरमे झगड़ा झाँटी कए पड़ाए के आबि गेलखिन हे....। सुनबामे तँ ईहो आएल अछि जे आब ओ सासुर कहियो नहि जएतीह.....। मुस्कीकें ठोरसँ दबैत सतलखा वाली जिज्ञासाक स्वरमे बजलीह।

......'के ई सभ कहलकनि? मोन खराप छनि तँ अएलीहे। एहेन-एहेनमे, तँ नैहरे जाइए सभ।' ......अन्दरसँ विचलित सन होइत बाबी बजलीह।

वैशाख मास बितबामे दू दिन मात्र शेष रहैक। सूर्यक तिक्ख रौद चारियो बजे असह्य लागि रहल छलैक। तैं बाबी सतलखाबालीके घरेमे बैसाए लेने छलखिन। मुदा देखैत छथि जे रुन्नू माए, तित्तिर माए आ फुलपरासवाली एक्के संगे आबि रहलि छथि। एतेक गोटएमे फैलगर जगह चाही। हाथमे पटिया नेने सतलखाबाली के कहलखिन- 'चलथु भगवतिए घरक ओसारा पर। 'पाहुन परक' सभ आबि रहल छथिन। हुनकर 'पाहुन परक' पद 'बहुत गोटए' सँ अर्थ रखैत छल।

'.....हँ....हँ, चलू ने....' पुलकित सन होइत सतलखाबाली बजलीह। जावत ओ सभ देहरिक टाट धरि आबथि तावत धरि ई दूनू गोटए पछबरिया घरक ओसारा पर बड़का पटिया ओछाए देने रहथि। .....'आ..हा.....हा.......' बड़ भागे सभ जुटलहुँ....' सतलखाबाली प्रमुदित छलीह।

'अवश्ये किने, कतेक दिनसँ भेटो ने भेल रहए....।' रुन्नू माए समर्थन कएलनि। ओना, एक्केबेर एतेक गोटएक जुटानसँ बाबी बुझि गेल रहथि जे ई पूर्व नियोजित कार्यक्रम थिक, जाहि लेल ओ सशंक छलीह। एहनो गप्प नहि छैक जे बाबीके लोकक आएब अधलाह लगैत छलनि, जे एखनुक स्थितिमे, जखन हुनकर बेटी 'एकसरे' 'बिनु बजौला' पर आबि गेल छथिन तँ एकरे खोध बेध कएल जएतैक। एकर स्पष्टीकरणक हेतु ओ 'खराज' पर चढ़बाक हेतु तैयार नहि छलीह। मुदा, व्यवहार तँ सभक संग रहबे करतनि। केओ आङन आएल, तँ ओकरा 'आउ, बैसू' कहबे करथिन।

...... तँ, चर्चा करैत रही आइ-माइ लोकनिक। ओ सभ आएल रहथिन सोमेश्वर ठाकुरक पत्नीसँ कुशल क्षेम बुझबा लए, घरक आ परिवारक कुशल क्षेम, धीया-पुताक हाल-चाल, के कतए अछि? की, कोना अछि।

बरख दिनसँ एहि प्रकारक जिज्ञासामे एकटा काँट देखार भए जाइत रहैक। काँट ई रहैक जे सोमेश्वर ठाकुर आब पहिने जकाँ सम्पन्न नहि रहि गेल छलाह। जमीन्दारी चल गेलैक, आ सिकमी बटाइमे बहुतोक खेत बटाइदारक हाथमे चल गेल रहैक। ठाकुरजी रहथि जागरूक लोक। ओ, बसबिट्टी बला एक प्लाट बीस बीघा भसदियरक अपन स्कूलक सहपाठीक (तारानन्द दासक) नामे लिखि निश्चिन्त भए गेल रहथि। 'बसबिट्टी' एकटा एहेन खेतक नाम रहैक जाहिमे बाँसक आठ-दश टा बीट मात्र बचा कए राखल गेल रहैक। जे घनगर

पसरल बीट सभ रहैक तकरा उकन्नन करबाए सोमेश्वर ठाकुरक पिता जोताए देने रहथिन। तेफसिला सोनाक खण्ड ओ भ' गेल रहैक। जे अन्न ठाकुरजीक घरमे अबैत रहनि से लए बाबी दऽर-देयाद कैं बेर कुबेरमे दैत रहथिन, सोनमाक हाथे आधा दाममे बेचि शुद्ध-बाधक इन्तजाम क' लैत रहथि, धी सुआसिनक आवेश-पाति भिन्न। एहि बरख तँ ओ खेत दासजीक भ' गेल रहनि, तँ बाबीकें अपन पसरल आँचर समट' पड़लनि। नीरू मायक नातिक उपनयनक हेतु एक्को बोरा चाउर नहि देलखिन, रानू मायक बेटीक बियाहमे हजारो टाका नहि देलखिन.....। तखन धनिक छथि तँ रहथु, ई लोक हुनकर पामौजी केहेन सत्ती करतनि....।' ई बिन्दु एहेन छल जाहि पर पूरा परोपट्टाक सहमति छलैक। तैं आब महिला मण्डलक मुँहक लय विपरीत भ' गेल रहनि बाबीक प्रति। बाबी ई बुझितो व्यंग्यबाणसँ आहत अवश्य भए जाइत रहथि। बुझि पड़ैत रहनि जे जेठक रौद एकत्रित भए हुनकर माथपर अङोरा उझिलि रहल छनि।

......तँ, आबि गेल रहनि महिला लोकनिक दल हुनक आङनमे। पछबरिया घरक ओसारापर सभ गोटए बैसैत गेलीह। प्रश्नक अछार बरिसए लागल.....।

'बुच्ची कखन एलीहे?' "कहबो ने कएलहुँ जे औतीह......" 'हमरा तँ होइत छल जे कल्याणक योग्यता हेतनि, सेहो ने किछु बुझलिऐक.....' सासु जे दुखित छथिन, हुनका छोड़िकए अएलीहे?......' अपना-अपना ढंगक मुँह बिजकाए, ठोर दाबि, कल्ला फलकाए सभ बाजि रहल छलीहे। बाबी 'हँ' वा 'नहि' सँ बेशी किछु बाजिए नहि सकैत छलीह। हुनका बुझि पड़लनि जे खोजी कुकुरक दल आबि गेल अछि, जे घेरने अछि। मुदा, बाबी कोनो अंशमे अपनाकें 'अपराधी' नहि मानि रहल छलीह। हुनकर बुच्चीमे, कोनो प्रकारक दोष नहि छलनि, तैं ओ निचेन भए आइ-माइक प्रतिक्रिया देखि रहलि छलीह।

एम्हर सतलखाबाली अपन 'मझिली'क निचेनी देखि तिलमिलाए उठलीह- "यै बौआसिन, कमसँ, कम बुच्चीक मुँहो तँ देख' देब। कत' कए नुका रखलिअनि हें, जे...."

"मुँह किऐक ने देखथिन, यैह जे थाकनिसँ ज्वर भ' गेलनि, दवाइ देलिअनि, से निन्न भ' गेल छनि। जगतीह तँ पठा देबनि, सभकें गोर लागि औथिन.....।"

थोड़ेक काल धरि सभ चुप्पे रहलीह। पुनः फुलपरासबाली मौन भंग करैत उठए लगलीह- 'किऐक, दुखित छथि तँ हमहीं सभ ने आएब...।' एतबहिमे बुच्ची पुबरिया घरक ओसारापरसँ उतरैत बाजि रहलि छलीह- 'कखैन एलिऐ

काकी?' हलसैत डेगे हुनका सभ लग आबि गोर लगलखिन।

'आ....हा....हा...., निन्न टुटल? निके छी ने.....।' सतलखा बाली आह्लाद प्रकट कएलनि।

'हँ....ऽ....ऽ, एतबे बाजए लागलि रहथि, बुच्ची.....:ता, जोरसँ रद्दक आशंका भेलनि, ओलतीमे बैसि गेलीह।

...... 'यै मझिली, अहाँ ने हमरासँ चोरा लेब, आ ई,..... जे' लच्छन, से की हम सभ..... रुन्नूक माए मुस्किया रहलि छलीह।

'हम किऐक छल करबनि, काल्हि तँ अएबे केलीहे, एखन हम ओरिया कए गप्पो ने कएलहुँ, तँ कोना की, से नहि बुझलिऐ।'

.......'हँ, जतेक चोराएब, ततेक देखार हैत, ... रुन्नूक माए चुटकी लए रहलि छलीह। बाबी दीदी लेल घैलसँ लोटामे पानि आनए चलि गेलि रहथि।

आइ-माइ लोकनि अपन गप्पक कोनो प्रतिक्रिया नहि देखि अपना-अपना आंगन दिस बिदा भए गेलीह।

लुक-झुक बेर भ' गेल छल। बाबी निचेनीक साँस लेलनि। संगहि कानमे पड़ैत वाग्जालसँ आहत सेहो होइत रहलीह-

'मर्र.... एकरा एतेक नुकाकए राखब कोन नीक काज भेलै....।' 'चुप्प केहेन रहथि, जेना ढीढ़ पेट भ' गेलैए.....।'

'से कोन ठेकान...., जखन एकठाम सेज ओछान नहि रहैत छैक तँ.....।' 'हः.....हः.....' एकटा भीषण अट्टहास सँ वातावरण थरथराए गेल। बाबी हिलि गेलीह...... छाती काँपए लगलनि.... 'की ई वएह सतलखा बाली थिकीह जे सभ वरख विवाह वा उपनयनमे बोराक बोरा अन्न लए निमहैत रहलीह?..... की, ई वएह रुन्नूक माए थिकीह, जनिका पुतहुक मुँह देखनाक हेतु ओ अपन कोसलिया टाकासँ कीनल औंठी दए देलखिन, की ई वएह फुलपरासबाली थिकीह जनिकर बेटीक विवाहमे बुच्ची (दीदी) चारि दिनमे लिखियासँ लए विधि व्यवहारक सभ वस्तु (घुनेस, हाथी, ठक-बक) तैयार कए देने रहथि....?'' एक्कहि बेरमे बाबीक मस्तिष्कमे प्रश्नक ढेर स्वर अनुगूंजित होइत गेलनि। कखन ने कखन खसलीह, से नहि बुझि सकलीह, आँखि खुजलनि तँ एक कात बुच्ची, दोसर कात हुनक पिता बैसल छलखिन। घोर अन्हार पसरि गेल रहैक। ....'बुच्ची किछु खाइ गेलहुँ ने....? की, बड़ी राति भ' गेलैए?

‘......हँ, दश बजैत छैक। अहाँ किछु खाएब?’

‘चूरा अछि?’

‘हँ, द दिअ?’

‘एँऽ, दश बाजि गेलैए? हमरा की भ’ गेल छल? अहाँ सभ......।’’

‘बेशी आइ जुनि बाजू। बैदजीकेँ बजाब’ पड़ल किछु खाए लिअ’ आ एक खोराक दवाइ लिअ’। ‘हम सभ भोजन कएलहुँ आ अहाँ दवाइ लए सूति रहूँ। काल्हि गप्प करब। बेशी बाजब बैदजी मना कएने छथि।’ –ठाकुरजी आदेश करैत पत्नीक सुश्रुषामे लागि गेलाह। बुच्ची संगे छलखिन्ह।

X X X X

......गाममे, अर्थात् सोमेश्वर ठाकुरक पट्टीदारीमे एकर बेश रोष रहैक जे ओ बँसबिट्टी बेचलनि। आठ आनाक मालिक ओ रहथि। कहबा लेल मालिक मुदा भोग करैत छल पूरा देयाद। ओ अपन व्यवहारसँ भाइ बन्धुकें रञ्चो मात्र ने बूझए देलखिन जे हम आठ आनाक मालिक छी। आ, से सोमेश्वर ठाकुर बिना ककरहुसँ विचार बात कएने बँसबिट्टी बेचि लेलनि। एकर कोनो चर्चो ने कएलनि। बेचलनि, तँ बेश कएलनि, मुदा अनगौंआक हाथे, कैथक हाथें। भला कहूँ तँ, कैथ ककरहु किछु उठा–कए दए सकैत छैक?..... हमरा सभकेँ ओहि अनगौआसँ की लाभ भेल?

एहेन एहेन गप्प सुनैत सुनैत ठाकुरजी अकच्छ भए गेलाह। गप्पो की, तँ केओ मुँहपर, सोझाँ सोंझी नहि कहनि। तखन, केओ ककरहु नामें, केओ ककरहु नामे, –ई सभ कहि दैत रहनि। एकदिन, ठाकुरजी देयाद–वादकेँ बजौलनि। गरमी मास रहैक। बुलनाकेँ कहलखिन जे एक बाल्टी बेलक शरबत बना। ‘एतेक की करबै मालिक?’– बुलना कखनो कें हुनकर मुँह लगुआ भ’ जाइत रहनि। ‘एखन गरमी बड़ छैक, तैं लोक सभकें बेलक शरबत पिअएबाक आवेश भ’ गेल।’ – ठाकुरजी आदेशक स्वरमे बजलाह।

बुलनाकेँ मालिकक उदारतासँ परिचय छलैक। ओ जतेक लोककेँ बजबैत छथिन ताहिसँ बेशिएक जोगार क’ लैत छथिन।

‘कतेक लगतौक चीनी?’ –ठाकुरजी प्रश्न कएलखिन। बुलनाक बेटी, मरनी परसू औतैक। काल्हि ओ अपनहि जएबा लेल छल। दोसर, जे मरनी रहतैक तँ नाति नातिन सहित भरिपोख बेलक शरबत पीतै। डेन सेहो पुरतैक। किछु क्षणक लेल बुलना अन्यमनस्क भए गेल।

'एँऽ, सोचैत की छें? बाज ने कतेक चीनी लगतैक?

'मा....मालिक......कतेक गोटएक नाम कहलिऐ?'

'यैह, सभ मिलाए सए गोटए तँ भइए जएतैक। तखन, तों सबा-सए..... नहि, डेढ़ सए गिलासक हिसाब राख।'

.......'मालिक, बेल तँ बाड़ीमे अछिन्नरे छैक, तँ एक दिन तोड़बामे लागि जएतैक।'

........'अरे, चीनी कतेक मङा दिऔक?' ठाकुरजी तैयो ओहि 'एक दिन' पर ध्यान नहि देलनि।

........'मालिक, पाँच सेरसँ काज चलि जेतैक।'

.......'हम काज चला लेबा लेल नहि कहैत छियौक, नीक जकाँ लोक सभकें परसि, तों सभ अपनहुँ पीबें......। एना कर, काल्हि मधुबनी जाए गिलेशनक मथुरा स्टोरसँ दश सेर चीनी आनि ले आ परसू हम लोककें बजबैत छिऐक। हँ.....सभटा चीनी मलिकानिकें रखबा लेल द' दहुन, आ पाँच सेर, परसू शरबत लेल तों माङि लेबहुन।'

बुलना पुनः चुप्प भ' गेल। .....'आइ तों एना चुप्प किऐक भ जाइत छें?'

'मालिक, परसू मरनीक वेरागन छैक। हम बेरधरि अएबे करबैक......'

'.......तँ एकटा कर। परसुए तों चीनी नेने अबिहें। पण्डौलेमे समधियौर छौ ने। तों मधुबनीसँ घुरैत काल बेटीकें सङ क' लिहें। आ हम चारिम दिन लोककें बजेबैक।'– ठाकुरजी समाधान कएलनि। बुलना प्रसन्न भ' गेल। रुन्नू माय बुच्चीक हाल चाल बुझबा लेल अपना आङनसँ बिदा भए रहलि छलीह। हुनकर अन्नर आ ठाकुरजीक बाड़ी एक बीघाक अन्तरमे छल। आ, पड़ोसमे जे किछु गप्प होइत छैक ताहि हेतु सदिखन हुनकर कान ठाढ़े रहैत छनि। ओ जखन बुझलनि जे सभटा बेल तोड़ल जएतैक तँ चोट्टे अपना आङन दिस घुरि गेलीह। अपन अन्नरमे राखल बड़का लग्गीसँ अपना दिसक बेलक ठाढ़ि झुकाए बेल तोड़बाक उपक्रम कर' लगलीह। खर्र....खर्र....' ध्वनि सुनि बुलना एम्हरसँ गरजल– 'के.....ऽ....ऽ....।' रुन्नू माय सकदम्म भ' गेलीह। बुच्चीक मायकें बुझबामे भाङठ नहि भेलनि जे पड़ोसिनक चेष्टापात छल। एम्हर ठाकुरजीके सभटा वस्तु 'टटका' अर्थात् लगलेक तोड़ल चाही। यदि ओ बुझि जइतथि जे ई बेल, केरा, अत्ता वा कोनो वस्तु 'टटका' अर्थात् लगलेक तोड़ल नहि अछि तँ

हुनका लेल ओ बाइस भ' जाइत रहनि। पत्नी ई बुझैत रहथिन। हँ, एकटा 'आम' एहेन फल रहैक जे ओ पालपर लगाब जनैत रहथि। तैं कोनो फल वा तरकारी तोड़एबासँ पूर्व बुच्चीक माय ई ताकि लेथि जे ठाकुरजी दरबज्जापर तँ ने छथि। हुनका समक्ष यदि बेल तोड़ाए लितथिन तँ दू दिनक बाद ओ ने स्वयं खैतथि ने ककरो खाए दितथिन।

....तँ, बुच्चीक माय बुलनाकें चुप्पेसँ बुझौलखिन जे बेरखन छरपनकें पठा दही। छरपन बुलनाक मझिला बेटा छल। गाछ पर छड़पबामे ओ पटु छल। जे कोनो वस्तु तोड़एबाक होइत छलैक, ताहि हेतु छरपने अबैत छल। एक्के छड़पानमे गाछक छिप्पी धरि पहुँचि जाइत छल।

बेरखन मालिक पुरनदाही दिस जाइत रहैत छथिन। ओम्हर हुनकर खेत छनि सेहो ताकल भ' जाइत छनि आ थोड़ेक टहलियो लैत छथि। एही बीचमे छरपन आबि गोट साठिएक बेल तोड़ि देलकनि। रुन्नूक माय भाँज लगबैत रहथि जे दशो टा बेल कम सँ कम लग्गीसँ तोड़ि लेब, से नहि भ' सकलनि। हुनके बाड़ी दिस नमरलहा डारिसँ छरपन बेशी बेल तोड़ि लेलक। अपन बाड़ीक टाटसँ एँड़ी अलगाए चिकरए लगलीह– 'यै बुच्चीक माय, एना किऐक सुरैये छरपन, के कहलकैए एकरा बेल तोड़बा लेल।'

बुच्चीक माय टाट लग जाए कहलखिन– 'दू चारि टा एखन तोड़बा लेल कहलिऐ।'

'देखू तँ, तोड़ि कए पथार लगा देलक......'

– रुन्नू भाए तिलमिलाए गेल रहथि।

......'हे रौ छरपन, ओरिया कए राखि दही.....। हँ...... पाँच टा रुन्नू माय के सेहो द' अबहुन।'

रुन्नू माय प्रसन्न भए गेलीह।

आइ ठाकुरजीक ओतए सभ जुटैत गेलाह। सभके ई अनुमान छलैक जे जखन ककरो घरपर काज-करतेबता नहि छिऐक तँ सोमेश्वर ठाकुर कोनो आन विचार बात करताह।

ठीठर भाइ दोपहरिएमे आबि जुमलाह। ओ ठाकुरजीसँ एकान्ती कर' चाहैत रहथि।

.......'देखहक सोम, एखन सभ तोरे दलानपर जुटताह। हम सभ दिनसँ तोहर हितचिन्तक रहलहुँ। आब, ई कहब हमरा बड़ आवश्यक भ' गेले

जे तों जे बँसविट्टी बेचि देलह ताहिसँ गाममे बड़ अयश छौक। भला पुश्तैनी सम्पत्ति, कैथक हाथें बेचि देलह।'

ठाकुरजी जहिये दासजीक हाथें जमीन बेचलनि तहिये ई बात जनैत रहथि। ओ चुप्पे रहलाह। ठीठर भाइ कोनो प्रतिक्रिया नहि देखि तिलमिला उठलाह। किछु समयक उपरान्त अपन दोसर 'अस्त्र'क प्रयोग कएलनि.....'आ ई जे बचिया अपनहि मोने, एकसरे सासुरसँ भागिकए आबि गेल' हे, तकरा कोनो, सैंतन नहि दैत छहक, सेहो ठीक नहि....।'

......'की ठीक आ की गलती से हम आइए सभक सोझाँमे बुझा देब, भाइ.....' ठाकुरजी किछु रुक्ख स्वरमे बजलाह। आँखि किछु पैघ, भऊँह तनल सन छलनि। ठीठर भाइ आगाँ किछु ने बजलाह। दलानपर बड़का सौंफ बिछाओल छलैक। ओ बैसल बैसल औंघाए लगलाह। कखन निन्न आबि गेलनि से नहि बुझि सकलाह।

......'मालिक, कनि घुसकि जैयौ, ई बिछेबै....' स्वर बुलनाक छलैक। हाथमे उजरा, बड़का जाजिम छलैक।

ठीठर भाइ आँखि मीड़ैत उठलाह। बुलना जालिम बिछाइए रहल छल ता घूरन, श्याम, पलटू आबि गेलाह। केम्हरोसँ नारायण आ एहि प्रकारें गोट बीसेक व्यक्ति उपस्थित भ' गेलाह। ठाकुरजी अपन कोठलीसँ धोती गंजी पहिरने बाहर भेलाह। बुलना बेलक शरबत बनएबामे व्यस्त भ' गेल।

'एह्, गरमी एहूबेर अपन रूप देखा रहल-ए।' - ठाकुरजी गप्प-सप्प आरंभ कएलनि। 'हँ भाइ, कोनो काज करबामे मोने ने लगैए।' ......गप्पक क्रम बढ़ल आ अँटकि गेल ठाकुरजीक चिर-परिचित वैचारिक बिन्दुपर।

......'सुनल-ए, जे आब गामक, लोक हमर सम्पत्तिक विषयमे बड़ चिन्तित छथि।'

......सभ एक दोसरा दिस ताक' लागल। ठीठर भाइ मूड़ी घुमा लेलनि। किछु क्षणक मौनक उपरान्त घूरन मुखर भेलाह– 'ई जे कक्का दोसर गामक लोकक हाथे बँसबिट्टी अहाँ बेचलहुँ तकर दुःख हमरा तँ अछिए......।'

.......आ सेहो की तँ कैथक हाथें...... नारायण गप्प कैं तूल देलनि।

.....'एखन भैया, ई काज तँ जे-से, हमरा रास्ता चलब कठिन भ' गेले की कहाँ सुनैत-सुनैत कान पाकि गेले.....।' श्याम दोसर प्रहार आरंभ कएलनि। ठाकुरजी बेशी गंभीर भ' गेल रहथि। बुलना गोट पचीसेक गिलासमे शरबत आ

एकटा लोटामे ठंढा जल नेने आएल। सभ अपना अपनीकें ग्रहण कएलनि। ठाकुरजीक गंभीरता देखि सभ सकदम्म छल। हुनकासँ प्रत्यक्षतया विरोध करबाक साहस ककरहुमे नहि छलैक। एम्हर, हुनकर गतिविधिपर प्रश्न ठाढ़ छलनि– पहिल, तँ ई जे दासजीक हाथें बँसबिट्टी सन सोनाक खण्ड बेचलनि आ दोसर जे बुच्चीकें बेशी आवेश-दुलार क' रहल छथिन, जे धी, सुआसिनक हेतु उचित नहि। गामक लोकक विचारेँ, 'बेटी सासुरे नीक कि स्वर्गे नीक.....।' से, सोमेश्वर ठाकुरक बेटी नैहर आबि गेल रहथिन, बिनु बजौनहि, सेहो एकसरे। ई कानोकान जंगलक आगि जकाँ पसरि गेल रहैक, प्रश्न धधकैत रहैक....। 'की, बेटीक एकसरे चलि आएब उचित भेलैक?' मुदा, मुखर केओ ने छल। सभ निराश भए जएबाक उपक्रम करए लागल।

'कने बिलमि जइयौ सभ गोटए। एखन रौद छैके, सेहो बड्ड तिक्ख।' – ठाकुरजीक आदेशात्मक स्वर छल। अनिच्छासँ, सभ रुकि गेल।

..... 'किछु दिनसँ बुझि पड़ैए जे गाम सुनगि रहल-ए।'...... ठाकुरजी प्रश्नावाचक दृष्टिसँ सभ दिस तकलनि। बेशी गोटए मूड़ी नीचा झुकाए नेने रहथि वा किछु गोटए कात करौट ताक' लागल रहथि।

......'हमरा ई कहबामे कनियो संकोच नहि होइत अछि जे हम अपन सम्पत्तिकें अपना मोने बेचल अछि। ई हमर छले, तैं एकरा हम अपन सुविधानुसार उपयोग कएलहुँ। ककरहु कोनो आपत्ति......'

ठाकुरजी सम्पूर्ण समाजसँ प्रश्न क' रहल छलाह। किछु क्षण चुप्पी पसरल, एना जेना कोनो बिहाड़ि अएबासँ पूर्व वातावरण स्तब्ध रहैत अछि।

........'हँ, आपत्ति कहियौ वा जे भाइ....., ओ अहाँक हिस्सामे अवश्य पड़ल, मुदा हमर पुरुखाक सम्पत्तिमे तँ ओ अवश्य अबैए.....।' पलटू मौन भंग करैत बजलाह।

.......'आ सएह बात तँ हमरो......' श्याम समर्थन कएलनि।'

.... ई तँ हमरो कहब छल जे पहिने हमरा सभसँ तँ पूछि लितहुँ.....'

सोमेश्वर ठाकुरकें बुझि पड़लनि जे बिढ़नी छता कें खोंचारि देने छिऐक। आब, हुनका पड़एबासँ नीक बचौनाइबला बाट सुभितगर बुझि पड़लनि।

........'हँ, हम दासजीक हाथे जमीन बेचलहुँ। ईहो सत्य जे हुनकर पुरुखाक ई जमीन नहि छलनि। मुदा, छातीपर हाथ राखि सभ गोटए सोचैत जाउ जे दासजीक पिता आ पितामह एहि परिवारक हेतु की ने कएलनि। की

एकोटा एहेन परिवार अछि जे रतन दाससँ शिक्षा नहि ग्रहण कएने हुअए? की एकोटा एहेन परिवार अछि जे कोनो मामिला–मोकदमामे झिंगुर दास सँ सहायता नहि लेने हुअए।....,

ठाकुरजी एहिना सभकें पुछैत गेलाह। सभ चुप्प रहल।

ओना, ओहि बैसारक बाद गामक लोकमे एकर उत्सुकता आओर बेशी भए गेलैक जे सोमेश्वर ठाकुर एक्के ठामक बीस बीघा किऐक बेचि लेलनि। ओहि टाकाक की विनियोग कएलनि, कतेक टाका भेलनि.....आदि। मुदा ई पुछबाक साहस के करितए। आखिर दादा वा काका छलाह काजक लोक, सभक हितचिन्तक, समयपर ठाढ़ भेनिहार, समाङे आ अर्थे। ई बात सभक पेटमे औनाइत रहलै।

एहि परिस्थितिमे बुच्ची (दीदी)क माए आइ–माइ लोकनिक गप्पक फाँटिपर बेशीकाल चढ़ि जाइत रहथि– "ऐँऽ यै, काकी, बुच्ची दाइक वर लेल कहियो सनेसो बाड़ी पठबैत छियनि कि नहि? अबितो रहैत छथिन की?..... एहिबेर तँ बड़की दादीक बरखीमे छागर नहि पिटैलै..... पाइ कौड़ीक कोनो कमी तँ नहि अछि, तखन 'हिबा'क अभाव......?" आदि आदि। गप्प कत्तहुसँ उठओ मुदा आबि कए पड़ि जाइत रहैक जे अहाँके बड़ सम्पन्नता अछि आ तकर उपभोग करए नहि जनैत छी। दोसर जे बेटीकें अहाँ सासुर नहि जाए दैत छिऐ। बाबी तिलमिला जाइत रहथि। मुदा किछु बाजि नहि सकैत रहथि। हुनका अपनहुँ ने बूझल रहनि जे पतिक जमीन जथा कत' कत' छनि आ कतेक टाका हुनका हाथमे छनि।..... से, एक दिन आइ–माइक कटूक्ति आ काकुसँ तंग आबि ओ पतिसँ पुछिए देलखिन– "एतेक टाका पैसाक चर्चा हमरा लग जे आइ–माइ लोकनि करैत छथि से कोनो नव बात भेलैए की?"

सोमेश्वर ठाकुर जेना एहि अवसरक प्रतीक्षेमे रहथि। ओ राति भिजलापर अपन सम्पत्तिक आ परिस्थितिक पूरा विवरण पत्नीकें बुझासुझा देलखिन। जाहिमे बसबिट्टी वला जमीनक मादे ओ कहि देलखिन जे बिका गेल छैक, जें ठीक दाम भेटलनि दासजी द्वारा तैं हुनके देलखिन। ओ टाका फिक्स क' के बेटीक नामे राखि देने छथिन, कारण जे मिसरिया झाक नेत हुनका गड़बड़ लगैत छनि। ओ बजलाह–

"अहाँक जमाए एक दिस कुलशीलक घमंड करैत छथि आ दोसर दिस नीचसँ नीच कर्म करबा लेल उताहुल छलाह। बेटी घरमे नहि जन्मए तँ टाका खर्च नहि हैत, तैं ओकरा ओ गर्भेमे नाश कर' चाहैत रहथि। ओ धनबताह भ'

गेलाहे। तैं एहि बच्चाक जन्म ओ नीक शिक्षा जावत पूरा नहि हेतैक तावत बुच्ची दाइ एत्तहि रहतीह। ई टाका ओहि बच्चाक लालन पालन आ शिक्षाक हेतु हम राखि देलिऐ-ए।''

बाबी एहि नीतिसँ आश्वस्त भए गेलीह। भरि रातिक जगरना आँखि भारी भ' गेल छलनि, मुदा मोन बहुत निचेन। पतिक आदेशानुसार, एहि तथ्यकें गुप्त राखि ओ बहुत दिन धरि आइ-माइक काकु कटूक्ति सहैत रहलीह।

x x x x

दरभंगासँ बीस किलोमीटर पूब दिस एकटा गाम छैक- सन्हौली। ओकर सटले उत्तर चऽर छै, सुनै छिऐ जो ओहो एकटा गामे बसल छलैक, बहुत पहिने। एकबेर बलानक बाढ़िमे पूरा गाम बहि गेलैक, लोक सभ सुतले रहलैक, बूढ़-पुरान, कनिया-मनिया, बाल बच्चा - सभ बाढ़िक चपेटमे कत' गेलै से केओ ने बुझलकै। बाढ़िक पश्चात् रहि गेलै बड़का पाँतर। समयक अन्तराल पर ओ पाँतर भरैत गेलै माल-जालक चऽर बनि गेलै। ओ जगह दरभंगा राजक हिस्साक छलैक। चऽरक उत्तर एकटा गाम छैक- कैथाही। कैथाहीमे कायस्थ लोकनिक वास छनि।

सन्हौलीक ब्राह्मण लोकनि बड़ प्रतिष्ठित छथि। कामेश्वर ठाकुर अपना समयक नैष्ठिक ब्राह्मणमे गनल जाइत रहथि। विवाहो भेलनि तँ उच्च कुलक श्रोत्रिय परिवारमे। हुनक पाण्डित्य ओ आचरणसँ प्रभावित भए महाराज स्वयं कोनो गरीब श्रोत्रिय कन्याक उद्धारक हेतु प्रस्ताव रखने छलखिन। कामेश्वर ठाकुर भाइमे एकसर। पितिऔत लोकनि, मुदा समङगर रहथिन। आ, कामेश्वर ठाकुरक प्रसिद्धि सँ ओ लोकनि गौरवान्वित रहथि, तेँ 'हम सभ एक्के छी'- ई कहबामे हुनका लोकनिके गौरव बोध होनि। बहुतो गोटाकें ई बात बुझलो ने रहैक जे कामेश्वर ठाकुर भाइमे एकसर छथि- बेशी गोटए, सभकेँ सहोदरे बुझैत रहथिन।

कामेश्वर ठाकुर दरभंगा महाराजक प्रियपात्र रहथि तेँ समय-समय पर ततबा आर्थिक सहयोग भेटि जानि जे घरक खर्चामे असौकर्य नहि होनि। एकबेर, महाराजकें कोनो आवश्यक कार्यवश विलायत जएबाक अवसर भेलनि। ओहि समयमे जहाजसँ जएबाक मार्ग उपयुक्त छलैक। महाराज जँ कतहु जाइत रहथि तँ हुनका संग कम-सँ-कम पच्चीस व्यक्ति अवश्य रहैत छलखिन- महारानी, डाक्टर, नौआ, खबास, दरबारी, बैद आदि। ई काफिला इंग्लैंड सन दूर ल' जाएब अति व्ययसाध्य छलैक। किन्तु महाराजक हेतु ओ व्यय वहन

करब असंभव नहि छलनि। असंभव यदि, रहनि तँ कामेश्वर ठाकुरकेँ बिलायत लए जएबाक हेतु सहमत करब। कामेश्वर ठाकुर रहथि नैष्ठिक ब्राह्मण – धर्म-कर्म हुनक पूँजी। आ, ताहि पूँजीकें समुद्रलंघन कए बहा देब– ई उचित नहि छलैक। कामेश्वर ठाकुर अत्यन्त चिन्तामे पड़ि गेलाह। एक दिस महाराजक आदेश आ दोसर दिस धर्म संकट। रातिकें निन्न-चैन उड़ि गेलनि। भोजन पर बैसथि तँ बैसले रहि जाथि, पत्नी टोकथिन तँ एक-दू कऽर खाए, पानि पीबि लेथि।

– जाह, खेलिऐ कहाँ? – पत्नी टोकलखिन। –'भऽ गेलै......' ओ दरबारक गप्प ककरहु ने कहैत रहथिन। पत्नियो कें नहि।

एक दिन, दू दिन.... हप्ता दिन बीति गेल। कामेश्वर ठाकुर दुर्बल हुअऽ लगलाह। रातिमे, एकसर पाबि पत्नी जिद्द क' बैसलखिन जे एना किऐक करैत छी – ने खाइत छी, ने सूतैत छी– ई की भऽ गेले अहाँ कैं....। कामेश्वर ठाकुर हबोढ़कार कानऽ लगलाह। बड़ी कालक बाद, अपनहि नोर पोछलनि आ पत्नीकें, कहलखिन– 'लोटा दिअऽ। पानि पीयब। पत्नी पीबाक, पानि देलखिन। निसाभाग राति, गहन अन्धकार। कखनो कें, झिंगुर वा चिन्-चिन् – कोनो आनो प्राणीक स्वर स्तब्धताकें तोड़ैत छलैक। कामेश्वर ठाकुर पत्नीकें अपन बाँहिसँ गछारैत बाजि उठलाह– 'आब अहींक शरण।' पत्नी डेराए, गेलखिन– 'ई हिनका की भऽ गेलनि-हें।' कारण, जे एतेक भावुक होएब पतिक स्वभावमे नहि छनि– ओ अनुभव कएने छलीह।

'की बात भेलैए? किछु तँ अवश्ये छैक जे हमरा अहाँ नहि कहैत छी, आ' दिने-दिन गलल जाइ छी.....।'

'.....हमरा विलायत जाए पड़त।'– स्वरकें संयत करबाक प्रयास करैत बजलाह।

'....एँऽ, विलायत? ओ तँ बड़ी दूर छैक– सुनै छिऐ जे, जे ओतए जाइए तकर, जाति-पाँति नष्ट भ' जाइत छैक......।'

'......हूँ......ऽ.....ऽ, एकटा गंभीर स्वीकारोक्ति पतिक मुँहसँ बहरेलनि। .....जाति गमाब पड़त, पूजा-पाठ छूटत ....आ, छूटब.....अहाँ....., पत्नीकें छाती सँ सटबैत ठाकुर जी विह्वल भ' गेल रहथि।

'.....आ.....यदि नहि जाइ......तँ' बड़ी कालक बाद थरथराइत स्वरमे पत्नी बजलीह।

'ई संभव नहि अछि, महाराजकें आवश्यक काज छनि, आ हम गछियो नेने छियनि। कहलो गेल छैक–

'उत्सवे, व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्र विप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।

.......आ, ओ तँ स्वयं राजा थिकाह। राजाज्ञाक उल्लंघन समुद्रलंघनसँ अधिक पापकारक थिक। तेँ हम विचारि कए अपन सहमति, सरकार के द' देने छियनि।

'.....आ हम......' ब्राह्मणी कनैत पुछलखिन।

'......अहाँक सात पीढ़ी धरिक भार महाराज उठा लेताह। कैथाहीक उत्तर 'बसबिट्टी'क मालिक, आ गामक 'हरफाक मालिक अहाँक सन्तान रहत.....' 'तखन ई धर्माचरण.....' ठाकुरजी वाक्य पूर्ण नहि कएने रहथि कि पत्नी टोकि देलखिन –

'एकटा पैघ काज लेल कोनो पैघ आहुति देमए पड़ैत छैक। हमहूँ अपन दिनकें कहुना कटबाक उपाय ताकि लेब– नहि किछु तँ लगनिए गाबिकें.....।' आ तकर बाद बड़ी काल धरि आँखिसँ असोधारा नोर जाइत रहलनि।

x x x x

एक कान, दू कान....... बियावन......। कोना ने कोना, सन्हौली गाममे जंगलक आगि जकाँ ई पसरि गेलैक जे कामेश्वर ठाकुर विलायत जएताह।

–'नहि, ई नहि भ' सकैत अछि, बड़का भाई, बड़का भाइ थिकाह–' धुँआइत घूर लग चारि पाँच भाइक गोष्ठी आने दिन जकाँ आइयो जमल छलैक। ठीठर भाइ अपन असहमति जनौलनि।

– 'ई के उड़ौलकै यौ, जे बड़का भाइ विलायत जएताह? ई समुद्र नांघि कए ओत' जाए पड़ैत छैक, जे शास्त्रमे वर्जित छैक– अनन्त भाइ कामेश्वरक बड़का प्रशंसक रहथि। ओ एकरा असंभव घोषित कएलनि जे बड़का भाइ समुद्र लंघन करताह।

.... 'नै यौ, हमरा तँ विश्वस्ते लोक कहलनि जे आब ओ गाममे कम्मे दिन धरि छथि। ओ अपन नाम नहि बजबा लेल ओ कहलनि– सप्पत द' देलनि। बचनूक पेटमे समाचार कहबाक बिहाड़ि उठल रहनि।

..... 'बूझल..... बूझल......., आइए तँ अहाँ, बड़की भौजीक आंगनमे

बड़ी काल धरि गप्प क' रहल छलहुँ। बचनू हुनका देखि मुस्कुराए लगलाह।

सुनगैत घूरक आगि धधकि गेल छल। जाड़सँ ठिठुरैत सभ भाइ आगि तापि रहल छलाह।

बड़ी कालक चुप्पीक पश्चात् बचनू बजलाह

– 'चलू.जे हेतै, से हेतै, धर्मक आरि धरि टुटि जएतैक। बड़का भाइके लऽके हम सभ धन्य रही, जे सभटा विधि-व्यवहार, उपनयन विवाह सम्पन्न करबैत रहथि, आब, जखन ओ अपनहि जातिक बन्धन तोड़ि रहल छथि तखन तँ.......। भगवाने जानथि......।'

'ऍं यौ, एतेक जल्दी निर्णय लऽ लेलिऐ जे ओ जातिक बन्धन तोड़ि लेताह?.......' – अनन्त सशंकित होइत पुछलनि।

'जखन ओ समुद्र लंघन करताह तखन.....तखन तँ हम सभ हुनकर जल सँ लघुशंको धरि नहि करब.....आ भोजन-भात तँ बारिए देबनि।' – ठीठर भाइ किछु उत्तेजित, किछु गह्वरित स्वरमे बजलाह। वातावरण गंभीर भ' रहल छलैक। जाड़ो बढ़ि रहल छलैक। घूरक आगि पुनः लहक' लागल रहैक-ढेङमे ध' लेने छलैक।

'......चलै चलू आब, जाड़ बढ़ि रहल छैक.......' अनन्त भाइ ई कहैत कान्हपरक गमछाकें कानमे बन्हलनि, बाँहिकें दूनू कान्हपर उझकबैत उठि बिदा भेलाह। वातावरण आन दिन जकाँ हँसी-ठठासँ भरल नहि छलैक, सभक मुँह पर उदासी ओ भय व्याप्त छलैक। कथीक भय? धर्मक वा कामेश्वर ठाकुरसँ वियोगक वा दूनूक? केओ बुझि नहि रहल छल। ई धरि अवश्ये जे ई समाचार सभकें उद्वेलित क' देलकैक। सभ स्तब्ध छल।

'ई बात भिन्न जे बड़का भाइ विलायत चल जएताह, किन्तु भौजीकें कोना छोड़थिन, ओतेक टा आलयमे एकसरि रहतीह की?'

'...... किऐक, दड़िभंगा जे जाइत छथि तखन तँ वएह बुलनी माय आ सुकना रातिकें सुतैत छनि।'

'से दोसर बात भेलै, हुनकर जएबामे आ आपस अएबामे छबो मास लागि सकैत छैक.....'

......एहि प्रकारक चर्चासँ अङने अङना घमलौरक अड्डा बनि गेल।

कामेश्वर ठाकुर जखन गाममे रहथि तँ एकटा मौन विरोधक झटकासँ ओ

आहत हुअ' लगलाह। जे केओ देखैत छलखिन से आह्लादक स्वरसँ 'गोर लगै छी' नै कहि मुँह दोसर दिस घुमाए लैत रहथिन, डेग डेगपर अपन सुख–दुखक समाचार कहनिहार लोकनि संक्षिप्त कुशल–क्षेम कहि जल्दी जल्दी विदा भ' जाथि, द्विरागमन–विदाइ, मूड़न–उपनयनक दिन तकएबाक हेतु कन्तू पंडित ओतए लोक सभ जाए लागल – ओही कन्तू पंडितक ओतए, जनिका ठाकुर परिवारक केओ पुछैत नहि छलनि। कामेश्वर ठाकुरके बुझबामे भाङठ नहि भेलनि जे हुनक विलायत जएबाक सुन–गुनी पसरि रहल छैक– हुनका तकर दुःखो ने होनि। 'कोना जाएब आ 'ब्राह्मणी कें की व्योत क' दिअनु तही चिन्तामे ओ लागल रहैत छलाह।

हँ, कैथाहीक शंभुनारायण दास, जे महाराजक देवान रहथिन, हुनको विलायत जएबाक निश्चय भेलनि। हुनकर सहोदर सत्यनारायण दास, जे लऽगेक गाममे प्राइमरी स्कूलक अध्यापक रहथि, से कामेश्वर ठाकुरक चिन्तासँ अवगत रहथि। हुनका अपन जेठ भाइसँ सभटा बात ज्ञात भेल रहनि। बसबिट्टीक जमीन बेश उपजाऊ भ' गेल रहैक। बीस बीघाक एकटा प्लौट । हुनका बटाई पर ओ जोतबाक इच्छा रहनि।

एक दिन कामेश्वर ठाकुर पूजा पर बैसल रहथि तँ दिनमा आबिके कहलकनि जे 'गुरुजी' अहाँक दरबज्जापर आएल छथि।

– 'कनीकाल बैसबा लेल कहुन'....... आ पूजा समाप्त कए ठाकुरजी दरबज्जा पर अएलाह।

कुशल–क्षेमक पश्चात् ठाकुर जी अपन कोठली दास जी के बजौलखिन। आ अपन पूरा समस्या कहैत पूछि देलखिन – 'की, अहाँ 'हमर परिवारक संरक्षण करबाक दायित्त्व स्वीकार करब?'

– 'कतेक दिनक हेतु?' दासजी गंभीर होइत पुछलखिन।

'हम जावत विलायतसँ आपस आबि जाइत छी.......। हम ई बुझैत छिऐक जे जे आगि एखन सुनगि रहल छैक, से हमर गेलाक बाद धधकए लगतैक। हमर पत्नी समाजसँ बहिष्कृत भ' जएतीह यदि हम विलायत जाएब– तेहना स्थितिमे हुनकर रक्षा के करतनि?'

'अपने चिन्ता जुनि करियौक बुलना आ दिनमाकेँ अपने सविस्तर बुझाए दिऔक, ओ खेतक जिम्मा लेत – जोतत, कोड़त आ हम स्वयं खर्च करब, देखरेख करब। सङहि जे साबिकक खबासिनी अछि तकरो 'जोगार' नीक जकाँ

धराए, अपने निश्चिन्त भए जइयौ – सूचना धरि बौआसिनकें अबैत रहनि जे अपने कत' छी, कोना छी।

– 'बेश, हम निश्चिन्त भेलहुँ, एखन डाकक व्यवस्था नीक छै, तखन समुद्रसँ वा विदेश सँ कोना- की छैक से बुझबै आ हम अपनहुकें सभटा लिखैत रहब।'

कामेश्वर ठाकुर निश्चिन्त भए जूड़ शीतलक चारिम दिन जएबाक तिथि निर्धारित कएलनि। तृतीया मंगल छलैक - सर्वार्थ सिद्धियोग ओकर परातो छलैक, किन्तु दिग् विरोध छलैक। तँ मङ्गलकें ठाकुर जी बिदा भेलाह - विलायतक हेतु।

x x x x

बुलनी मायकें गामक तिनकठबा ठाकुरजी गछि लेने छलथिन। ओ बौआसिनक सेवामे तन–मनसँ लागि गेल।

मुदा ठकुराइनकें विलायत जएबाक नामें ततेक डर भए गेलनि जे ओ सेज धए लेलनि। एक तँ दाइ–बौआसिनक कटाक्ष – 'ईह, कहबालेल सोतिक बेटी, आ चर्या देखबनि..... म्लेच्छसँ भातक सम्बन्ध बनाए जखन वर औथिन तँ देखबनि जे अपनाकें कतेक बरजैत छथि.......।'

'मर्र......र्र...., बरजबाक कोन काज छैक। ओ आओर सुन्दर बनिकें औथिन....., सुनैत छी जे कानी काट़ल केश रहतनि, टीक कटा जेतनि, धोतीक बदला पैन्ट रहतनि - आओर छओंड़ा। बनि जेथिन बड़का भाई.....'

'ही......ही......ही? – एहि प्रकारक कुचेष्टासँ अङने–आङन मुखर हुअ' लागल।

ठकुराइन लग सेहो जे अबैत छलखिन से कुटिल हास आ कटाक्षक बाण छोड़ि चल जाइत रहथिन।

......आ, हद्द तँ तखन भए गेल जे परसौनीबाली ननदि आबि दोसरे राग अलापि देलनि– 'ऐँ यै भौजी, आब अहाँ अही मस्टरवा लग रह लगलिऐ ए?'

'नै यै बहिनदाइ, आओर चेला चाटी सभ संगे अबैत छथिन'– दोसर बहिन गप्पकें चाललनि।

दूनू बहिनक अट्टहाससँ वातावरण थरथराए गेल। ठकुराइनिक छाती बड़ी जोरसँ धक–धक करए लगलनि, किन्तु व्यक्त नहि कए ओकरा परिहास मानबाक चेष्टा कएलनि। अपन भावनाक अभिव्यक्ति ओ एना कएलनि। – 'धुर जो, अहूँ

सभकें की सँ की फुर' लागल। हम तँ अपनहि करम कुटै छी।'

– एतबा वार्तालाप होइतहिं छल ता' एकटा देयादिनी आङन आबि गेलखिन– 'ऐँ यै मिलन, कोना नीक लगैए बड़का भाइ नहि छथि से......? आ ताहू पर ओ मस्टरबा आबि कए घंटाक घंटा बैसैए...... से किछु कहै किए ने छिऐक?' ठकुराइन प्रश्न सूचक दृष्टिसँ सभकें ताकए लगलीह। एहिबेर हुनक कृत्रिम स्मिति कठोर दृष्टिक संग बदलि गेल छलनि। आगाँ ककरो बजबाक साहस नहि भेलनि। ओ दृष्टिए पूछि रहल छलैक जे अहाँ सभकें जे तात्पर्य अछि से पहिने स्पष्ट करब। प्राय: मुँहो सँ यैह ने पूछि देथि बड़की भौजी, ताहि भयसँ सभ चुप्प भए गेलीह। आखिर ओ बड़का भाइक पत्नी छलखिन्ह.....।

x x x x

ठकुराइनक माथ घुमब कम नहि भए रहल छलनि। बुलनी माय अनुभवी महिला छलि। हुनकर कारी ठोर आ जखन तखन रद्दक आशंका देखि पुछिए देलकनि– 'कनियाँ, एकटा बात पूछू?

पुछथु ने'– ठकुराइन सहज भावे बजलीह।

'महिनवारी पाबनिक कतेक, दिन भेले?'

'धुर, ईहों तँ की कहाँ पूछ' लागल छथि।

'सत्ते कहू, बाबू जहिया गेलाह, तकर बादो भेल–ए की?'

'नहि।'– लजाइत कनियाक उत्तर छल।

'बस, भ गेलै....... भ गेलै......।' पुलकित स्वरमे बुलनी माय बाजलि।'

दिन बितैत गेलै। ठकुराइनक ओत' जिगेसा पाती करबाक लाथे जे केओ आबथि तनिका एहि बातक निश्चय करबाक रहनि जे भौजीके गर्भ छनि वा नहि। बुलनी माय चिन्तित भए गेलि। अपन चिन्ता ओ दासजी लग व्यक्त कएलक।

कामेश्वर ठाकुरक हिस्सामे मरौसी सम्पत्ति सेहो आन भाइसँ पाँच गुना बेशी रहनि। आ, ताहि परसँ राजक कृपा दृष्टि। बीस बीघाक कोला तँ देखारे भेटि गेल रहनि आ मोनगुप्ती तँ......। से, बुलनी मायकें सदिखन कनियाँ क खान–पानक चिन्ता रह लगलनि।

ओ झट दए चमैनिकें बजाए कनियाँक पेट देखौलखिन। ई चमैनि गुलिया मायक नामे त्रिख्यात। हिनका हाथक कोनो दाइ–बौआसिनकें शुभे–शुभ भेल छनि। आ, पुन: गुलिया माय शुभ भविष्यवाणी कएलनि– ''क़नियाकें पाँचम मास छियनि, पेटक क्रमें लगैत अछि जे बेटे–बेटा..... जय दिनकर दीनानाथ.....

जय छठि परमेसरी..... कोखि समाङ भरल रखबै....."

.....गुलिया माय हर्ष-विभोर भेल। बुलनी माय कोनिया भरि चाउर सगुनमे खोंइछ दए बिदा कएलखिन।

X X X X

अङने-अङना सँ 'दू जीवा'क नामें नेबो आ मेरचाइसँ बनल चट पट वस्तु आबए लागल। बुलनी माय सतर्क रहथि। सभटा कातके रखने जाथि। एकसर पाबि कनिया कें बुझा देलखिन– 'जी तँ एहेनमे भरछै छै, जे एतेक करु-अम्मत खएने 'नष्टो' होइत छै....' आदि। ठकुराइन सावधान भेलीह। एक दिन बुढ़ही काकी भरि बट्टा खीर आनि आगाँमे रखैत बजलीह– 'कनियाँ, अहीं लेल आइ ई पातरि देलिअइए, हमरे सोझाँमे खा' लिअ।'

'काकी, आइ ऊठल नहि होइए, हम नहा धो कए गोसाउनिकें जल फूल दैत छियनि, से देरी सँ खाएब।......'

'घुर, एहनो अवस्थामे लोक एतेक टिटंम्भा करैए। नव नऽरस लेल एतेक नियम नै छै...... खा लिअ.....' आवेशें-दुलारें स्वर अत्यन्त मधुर छलनि।

'यैह, कुडुरक' के अबैत छी, दाँतो ने मजने छी' –ई बजैत कनियाँ बाड़ी दिस गेलीह। ता' केम्हरोसँ बिलाई आबि खीर खाए लागल।

बुढ़ही काकी कनियाँ कें खुअएबाक हेतु तत्पर रहथि, मुदा बिलाइ कोन बाटें गोसाउनिक घर गेलै से बूझि नहि सकलीह। कनियाँ बाड़ी सँ आबि गोसाउनिक घर खोललनि तँ बाटी लग बिलाई छटपटाए रहलि छलि। आधा बाटी खीर ओ खाए गेलि छलि।

बुलनी माय..... बुलनी माय...... भयभीत स्वरें कनियाँ चिकरए लगलीह। बुलनी माए जारनि पाँजमे लए भानस घर लग आबि गेलि छलि।

'की भेलैयै?.... एना किऐक चिकरै छी?'

'देखथुन......' गोसाउनिक घरसँ कनियाँ चिकरलीह।'

बुलनी माय छटपटाइत बिलाइके उठाए दरबज्जाक कातमे रखैत चिकरैत बाजलि– 'देख' हौ लोक सभ, ऐ बिलाइके की भ' गेलैए....।'

पछाति दौड़लि कनिया लग! ओ सभटा बात बुझि खीरक बाटी एकटा खाधिमे कोड़ि दैत बाजलि – 'यैह बाटी रहतनि गवाही.....।'

बुढ़ही काकी यैह ले......वैह ले..... पार भेलीह। तहियासँ दासजीक कठोर आज्ञा भेलनि जे जावत कामेश्वर ठाकुर गाम नहि अबैत छथि तावत धरि हुनकर पत्नी ने ककरो आङन जएथिन ने केओ हिनकर आङन औथिन। केवल दिनमा आ बुलनी माय आङन जाए सकैत छथि– ज़ऽन बोनिहार, कुम्हैन गोआरि सभ दरबज्जासँ आगाँ नहि जाए सकैत छथि।

x x x x

कनियाँकें एकसरे मोन नहि लागनि। ओ बुलनी माय द्वारा दासजीसँ पुछौलखिन जे हम अपन नैहर श्रीगंज किछु दिनक लेल जाए चाहैत छी --जाउ वा नहि।

दास जी असमंजसमे पड़ि गेलाह। बिनु बजौनहि नैहर जएतीह– अपमान ने भ' जानि वा दोसर दिस गर्भस्थ शिशुक रक्षा तँ माय लग अवश्य हेतैक, से पठाए देल जानि–' सोचैत सोचैत दासजी निर्णय कएलनि जे कनियाँ नैहर चल जाथि। एखन दू वा तीन मास ठाकुर जी विलायतेमे रहताह - ताहि अवधिमे सुरक्षित ओतहि रहतीह। ई विचारि ठाकुरजीक पत्नीकें श्रीगंज विदा कए देलखिन। एकटा टायर गाड़ी पर पर्याप्त अन्न–पानिक संग दिनमा सेहो पाछाँसँ आएल।

x x x x

बेरका उखराहामे महाकान्त झा अपना दरबज्जा पर कहार सवारी आएल देखि आश्चर्य–चकित भए गेलाह।

'कतऽक' सवारी छिऐ यौ कहार?' - झा जी जिज्ञासा कएलखिन ता' ..... पाछाँ सँ बुलनी माय मरौत कढ़ने, बाजि उठलि– 'नै चिन्हलखिन हमरा आउरकें?'

– बुलनी मायक स्वरसँ झा जी परिचित छलाह।

..... 'एँ, के? शची एलीहे की?..... यै दौडू। देखियौ....के आएल-हे......' महाकान्त झा गदगद स्वरें चिकरलाह।

'के.....ऽ.....शची?' अन्दरसँ प्रसन्नताक फोहाड़ छूटल।

......मुदा, ई स्वर, ई उल्लास क्षणिक रहल। जावत शची दाइ सवारी सँ उतरथि तावत वातावरणकें दूरिकऽ एकटा शीतकालीन ठिठुरैत कुहेस छापि लेलक। घरे घरसँ लोक सभ दौड़ल– 'हाँ.....हाँ, ई तँ आब विलायती भ' गेलखिन हे.....।'

विलायती भ गेलखिन हें, अर्थात् हुनकर पति समुद्र लंघन कएलनि तें

शची दाइ जातिसँ वहिष्कृत भए गेलीह– बारल छथि, जातिसँ बाहरक छथि। माए जावत सूप लए गोसाउनिक घरमे खोंछि झारथिन, ताहिसँ पहिनहिं दऽर देयाद लोकनि हुनक पुत्रकें बहिष्कृत घोषित क' देलखिन।

शची दाइ ई बुझि नहि सकलीह। हलसैत-फुलसैत गोसाउनिक घर दिस विदा भेलीह, भगवतीकें प्रणाम करबा लेल, तावत् पड़ोसक लालमैञा रास्ता रोकि, हाथ पकड़ि मड़वापर लए गेलखिन।

.....हे, एतए आऊ। ओत' की जाएब?'

'किऐक?' – अप्रतिभ होइत शची दाइ पुछलखिन।

'बैसू ने, गप्पेसँ मतलब ने। एतहिसँ गोसाउनकेँ गोर लागि लिअनु।'

शची दाइ मायक मुँह ताकए लगलीह। माय हबोढकार कानि रहल छलखिन।

......'कनैत की छी? जमाए समुद्र नांधि लेलनि तकर कोनो सोच भेल?' 'तँ बेटी की जमाए सँ भिन्न रहतीह? बड़ बढ़ियाँ, आबि गेलीहे तँ मड़बापर रखियनु, जएतीह तँ नीक जकाँ निपाए देबैक– गायक गोबरसँ? ...... लाल मैञा आदेश देलनि।'

.... 'अहाँ कतबो कहियौ जे जमाए विदेश गेलाहे, हम नहि मानब ई बात। जमाए गेलाह तँ गेलाह, बेटी अप्पन छी। ई सासुरसँ एतेक दिनपर आएल-हे, आ ओकरा गोसाउनिक घर नहि जाए देबैक, ओत' खोंइछ नहि झाड़ए देबैक – ई तँ अन्याये करबै?'– पारो बहिन शचीक पक्ष लैत बजलीह।

एतबेमे, माय केम्हरोसँ तुलसी आ जल लए बेटीकें कहलखिन– 'तुलसी माइन क' लिअ आ चलू भगवती घर.....' शची एतेक घमलौर होइत देखि असमंजसमे छलीह।

...... 'हँ....हँ, ल' जइअनु, काल्हिसँ अहाँ सँ असौजन.....भतवरी.... सभटा भ' जाएत'– लाल मैञा मुँह चमकबैत, हाथ फेकैत बाजि उठलीह।

हारिकए, एकटा सूप मड़बे पर आनि देलखिन माए। शची दाइ खोंइछ मड़बे पर झारलनि।

महाकान्त झाकें डीहक जमीनक अतिरिक्त चारि कट्ठा मात्र रहनि। सम्पत्तिक नाम पर स्वस्थ शरीर। अहुना, श्रोत्रिय कुलमे जन्म लेलाक कारणें पाबनि-तिहारमे महाराजक ओतए वा बाबू साहेबक डेउढ़ीसँ, किछु ने किछु आमदनी भइए जाइत रहनि, कखनहुँ पूजा-अनुष्ठानसँ, कखनहुँ भानस कएलासँ वा

कखनहुँ कुटुम्बक सत्कारक नामपर – भोजन आदिमे कष्ट नहि होनि। आवश्यकता बड़ सीमित रहनि– ने भांग ने गाजा, ने पान ने तमाकू – आ सात्विक मनोवृत्ति, सभसँ पैघ गुण। कुल मिलाकए, ओ गुणी व्यक्ति रहथि। कष्ट यदि रहनि तँ पत्नीकें, एक मात्र सन्तान शचीकेँ।

एम्हर, दिवाकान्त जे पितिऔत रहथिन, ओ धनाढ्य। हुनका भांग–गाजा सभटा चलैत रहनि। छोट वयसमे विवाह भ' गेल रहनि, मुदा सुन्दरि पत्नीक रहितहुँ भाँति–भाँतिक स्त्रीक प्रति ओ आसक्त रहथि। अपन कामान्धताक कारणें ओ सऽर सम्बन्धिक सभटा बिसरि जाइत रहथि। से....... 'शची दाइ बहिन थिकीह', तकर परिज्ञान हुनका हेराए गेल रहनि, आ, एकदिन दोपहरियामे पाछाँ सँ हुनका गसिया क' गछारि लेलनि। तावत शची दाइक वयस एगारह बरख मात्र रहनि। ओ चिचिआए लगलीह तँ मुँह पर हाथ राखि हुनक वस्त्र फाड़ए लगलाह, तावत् शचीक माय तकैत–तकैत ओत' पहुँचि गेलीह। मुँहपर जे हाथ रखने रहथिन तकरा शचीदाइ अपन दाँत तर दए भुजबी–भुजबी क' देने रहथिन, शोणितक पमारा चलि रहल छलैक।

...... 'गै दाइ गै दाइ इ दिवाकान्तबा.... हमर बेटीकें मारि देलक'– चिकरैत माय हाकरोस कर' लगलीह।

दिवाकान्त फक द' हुनका छोड़ि उनटे भाउजपर बरिसए लगलाह– 'इह, हमरा जे दू टा अंगुरी काटि देलनिहें, तकर......तकर ......।' भाउजक ध्यान दाँतसँ काटल ओहि अंगुरीपर गेलनि, आ डेराइत डेराइत बेटीकें पकड़ि आङन दिस भगलीह। आस पड़ोससँ लोक सभ दौड़ल। केओ दिवाक पक्षमे तँ केओ शचीक प्रति क्रोध व्यक्त करैत अपन–अपन घर गेल। दिवाकान्तक पत्नी पतिक भीतर बैसल 'पशु'कें खूब चिन्हैत रहथिन, किन्तु पतिक नाम पर एकटा काठोक स्पन्दन हुनक सोहाग–सिनूर रहनि। तँ ओ दौड़िकर गेनापात तोड़लनि, ओकर रस पतिक अंगुरीपर गाड़लनि, आ नाना प्रकारक उपचार उपायमे लगलीह।

..... लालमैञा (दिवाकान्तक माय) हाकरोस करैत कानए लगलीह। मायक हाकरोससँ दिवाकें बल भेटलैक।.... 'आइ, आइ हम छोड़ि देलियनि, फेर जहिया फाँटि पर चढ़तीह तहिया सभटा कानि ओसूलि लेबनि' – गरजए लगलाह।

महाकान्त (शचीक पिता) जखन खेत परसँ अएलाह तँ सभटा बात बुझलनि। ओ सोझे दड़िभंगा बिदा भए गेलाह। अवसर पाबि ओ महाराजसँ अपन चिन्ता प्रकट कएलनि एहि शब्दमे– 'सरकार, समय–साल बड़ अधलाह छै।

हमर एगारह बरखक बेटीक हेतु कतहु जोगार क' दितिऐ'..... आ ठोहि पाड़ि कनबाक मोन भेलनि। दरबारमे उच्च स्वरें ने बाजल जाइत छै, ने कानल जाइत छै– से स्मरण भए गेलनि, ओ ठोर पर अपन हाथ राखि, हिचुकए लगलाह। महाराज दयालु ओ अनुभवी व्यक्ति रहथि। मामिलाकेँ बेशी तूल नहि दए, ओ कामेश्वर ठाकुरसँ शचीक विवाह करबाए देलनि। विवाहक लग्नो पाँच दिनका अन्दरे स्थिर भए गेलैक, आ किछु आर्थिक सहायता करैत, कुटुम्बक कुल शीलक रक्षा कएलनि।

.......से, लालमैञाक हेतु ई बड़ पीड़ादायी घटना भेलैक। ओ सोचिते रहि गेलीह जे एहि छौंड़ी सँ कोना बदला लेल जाए।

...... 'हँ...हँ, सोतिक बेटी जेतै बाभनक गाम – जाए दिऔ..... कुलक नाम तँ महाकान्ते बाबू ने हँसौलनि.... जकर पानिसँ ऐ घरक लोक लघियो ने करैत छैक..... तकरा ओतए बेटी–रोटीक सम्बन्ध करताह'...। आदि–आदि।

जे.....से, शची दाइक विवाह ब्राह्मण कुलमे शीघ्रे भए गेलनि, आ ओ शीघ्रे सासुरो चल गेलीह। लाल मैञा महाकान्तक दरिद्रता जनैत रहथि। ओ विवश भए अपन पुत्रीकें दिवाकान्तक कामाग्निमे झोंकि देताह – से हुनकर मनोरथ रहनि, कारण जे महाकान्तक खेत–पथारओ बड़ी–झाड़ी सँ हुनका अनेक लाभ छलनि। से नहि भेलै, एतेक ज़ल्दी ओ वियाह करा देलखिन आ सासुरो पठा देलखिन बेटीकें, से लालमैञा मुँह तकिते रहलीह।

.......आइ, तकरे परिणाम छलैक जे 'बिलायती' कहैत शचीक वरकेँ धर्मच्युत घोषित कए लालमैञा शचीकें सेहो जातिसँ बहिष्कृत कराए रहल छलीह। ....ई, दिगर बात भेलैक जे दिवाकान्त की कएने रहथिन। हुनके शब्दमे – ओ 'तँ पुरुष छिऐक। पाँच टा मौगी राखत। ओकरा सभ छजतैक। जकरे बेटा पुरुष रहैत छैक सएह ने मौगीकें खिहारै' छै....' आदि। ईहो सुनबामे आएल छल जे एकटा कुजरनीकेँ ओ राहरिक खेतमे पटकि देलखिन, तँ लालमैञा भगवानक पूजा करबौलनि, भरि गाम हकार देलखिन, मधुर बँटलनि।..... आखिर, ओ एकटा 'पुरुख'क माय भेलीह।

तँ फाँटि पर आइ शची दाइ चढ़ि गेलखिन। हुनकर वर विलायत गेलाह तेँ ओ गोसाउनिक घर नहि जाथि, यदि चल जएतीह तँ पूरा देयाद केँ अनिष्ट हेतैक, धर्म आखिर धर्म छिऐक, एकरा कोनो स्थितिमे बनाकेँ रखबाक चाही, धर्म सँ भ्रष्ट भेला पर लोक अपनहु नरकमे बास करैए आ दऽरदेयादकेँ सेहो

अस्सीकुंड नरकबास करबै छै'– चेतौनी दैत लाल मैञा अपना आङन दिस गेलीह।

ता......ऽ......ऽ, एकटा भरल टायर गाड़ी महाकान्त झाक दरबज्जा पर आबि रुकि गेलनि। बुलनी माय जेना ओकर बाट तकिते छलीह। पाँच चङेरा पकवान, दू कोहा मधुर, बोरा सभमे भरल चाऊर, चूड़ा, दालि आदि अन्न तथा दहीक दू टा तौला– हलसि–हलसि कए बहलमान दिनमाक संग वस्तु जात अङनामे रखैत गेलि। शची दाइक माय अपन खवासिनी द्वारा भरि गामक लोककेँ बजौलखिन, भार देखबा लेल। पकमान देखनुक छलैक; सभ 'स्वदेशी–विलायती'क घमलौर बिसरि गेल। लालमैञा कहलखिन – एकरा भरि गाम बिलहि दिऔक, कारण जे एखन तँ ठाकुर नहि आएल छथि ओ तँ पकमान केँ छूबो नहि कएलनिहेँ, तखन आगाँ सँ, ओहि आङनक वस्तु एतए नहि आबए से कहि दिअनु। कारण जे विलायत सँ ओ जाहि घर जएताह से छूति जएतैक, आ भात–पकमान तँ सहजहिँ। शची दाइक माय अपन आन पड़ोसिन द्वारा बटबाए देलखिन। –बेन भरि गाम परसल गेल।

एहि रेका–तोकीक परिणाम भेल जे शची– दाइ स्वयं कहलखिन– 'हम ने तँ भगवतीक घर जाएब, ने आन कोठली। हमरा सभक मुँह देखबाक मनोरथ छल, से मड़बहि पर सभसँ गप्प करब आ चारि दिनुक बाद चलो जाएब। अपन नैहरक अनिष्ट केओ ने चाहैत अछि – हमहूँ नहि।'

पाछाँ सभ कतेक आग्रह कएलखिन, शची दाइ ने तँ कोनो घरे गेलीह ने ककरहु आङने। मायसँ भरिपोख गप्प अवश्य कएलनि। पुत्री एहि अवस्थामे मड़बहि पर रहतीह, तकर कचोट हुनका अवश्ये भेलनि, किन्तु विवश छलीह।

दोसर दिन बेरे खनसँ धूरा आकाशकेँ आच्छन्न क' देने रहैक। चारु भर स्तब्ध वातावरण छलैक। गरमी कहै जे आइ छोड़ि काल्हि नहि हेतैक। कौआ आ चिड़ै चुनमुनीक स्वरमे व्याप्त भय एकर चेतौनी– दए रहल छलैक जेना कोनो दैवी आपदा अबै बला हुअए। ई सभ रहितो, शची दाइक 'वसन्त', जे छोटेसँ सङी रहलखिन आ सम्बन्धमे मसियौत बहिन रहथिन, से दछिनवारि टोलसँ पएरे आबि गेलखिन। हुनकर इच्छा रहनि जे भरिपोख गप्प करब। शची दाइ तँ बहुत दिनपर आएले रहथि, आ काने–काने ईहो समाचार सभकेँ ज्ञात भए गेलैक जे ओ जल्दिए चल जएतीह, आइ–माइसँ घेराएलि रहलीह। 'वसन्त' समयकेँ 'कुसमय' होइत देखि बिदा भेलीह – ई कहैत– 'वेश, आब तँ दोसरे यात्रामे भेंट हैत। आब जे आबी से ठाकुरजी केँ ओ 'छोटका ठाकुर' केँ ल' के

......।' ....आ हँ, आइ बिहरौन समय, छैक, अपन जिद्द छोड़ि मौसिए लग सूतब....।'

...... से, सत्ते, एक्के बेर एतेक जोर सँ बसात बह' लगलैक, जे बुझि पड़ैक सभटा गाछ–विरीछ, घर दुआर के उड़ाइए के ल' जेतैक। दाइ–बौआसिन, जे शची दाइकें घेरने रहथिन, अपन–अपन घर दिस दौड़लीह। ककरहु खरिहानमे, तँ ककरहु चारपर रबी सुखाइत रहैक, केओ आमिल तँ अँचारक कुच्चा आङनमे देने रहथि, ककरहु कपड़े सुखाइत रहैक – कोनो ने कोनो लाथे सभ अपन–अपन आङन दौड़लीह। खूब जोरसँ बसात बह लगलैक। धूरा काने–कपारे भरि गेलनि शचीकें। बुलनी माय अपन आँचरसँ हुनका छपने रहलखिन। माय कतबो चिकरि–चिकरि कहलखिन जे भीतर आबि जाउ, शची दाइ टस्ससँ मस्स नहि भेलीह। मोने–मोन सोचथि– ई जे हेबनिमे, पन्द्रह दिन पहिने बौआक उपनयन भेलै से तँ हमरा लिआओनो ने भेल, यैह ने जे कामेश्वर ठाकुर विलायत गेलाह तँ हुनकर घरवाली बारि देल गेलीह, किछु भोजोक बखरा तँ जइते,..... आ इनाम–मकराम.... हमर तँ एक्केटा भाइ अछि.......आ, से हम बुझलहुँ तखन जखन अपनै मोने, बिनु बजौने आबि तुलेलहुँ......। तखन, आब जतेक जल्दी हैत, से आपस चल जाएब।' ....बिहाड़ि, अपन भयङ्कर रूप देखाइए रहल छलैक। मेघ कड़क' लगलैक। बिजलोकाक चमकीसँ आँखि मुना गेलनि। खूब जोरसँ पाथरक बरखा आरंभ भेलैक। कखनोकेँ पाथरक झोंकसँ देहपर चोटो लगनि। जखन ओ घर किन्नहु ने गेलीह तँ माय एकटा गोनरि ओढ़ने मड़बा पर आबि गेलखिन, अपन पाँजमे समेटैत ऊपरसँ गोनरि ओढ़ा देलखिन। पाथरक चोट लागब कम्म भ' गेलनि। बुलनी माय सेहो ओही गोनरिक बीच आबि गेल छलि। पाथर खसब कम भेलैक तँ झमाझम पानि बरिस' लगलैक। चारु कातसँ जय महादेव, घोल हुअ लगलैक। चारू कातसँ जय महादेव, बरिसू हो बैदनाथ, बरसू हो नारायण........जय–महादेव ......जय भगवान......? आदिक स्वर आबए लगलैक......। किछुए कालमे, एक अछारक पश्चात् पानि थम्हियो गेलैक। शची कें एकर बहुत दुःख भ' रहल छलनि जे पिता एको बेर घर अएबाक हेतु नहि कहलखिन।

'........की, हमर पति सरिपहुँ एतेक घृणित काज कएलनि जे पूरा–पूरी जाति सँ बहिष्कृत भ' गेलहुँ, केओ एकोबेर तँ अएबा लेल नहि कहलनि'.....

सोचैत-सोचैत शची दाइक आँखि नोराए गेलनि। हुनकर ई निश्चय दृढ़तर होइत गेलनि जे अपन व्यथा ओ ककरहु ने कहथिन, मायो कें नहि। बुढ़ही काकी वाला आख्यान, कोना ओ आवेशसँ खीर देलखिन....... कोना बिलाइ खा लेलकै....... कोना मरि गेलै सभटा हुनकर पेटे मे घुरिआइत रहि गेलनि, ओ बूझि गेलीह जे बहिष्कृत ओ नहिरोमे ओहिना छथि जेना सासुरमे। हुनकर पति समुद्रलंघन कएलखिन। जकर सजाए हुनका कटबाक छनि, जिनगी भरि....।' शची दाइक हृदय हाहाकार क' उठलनि। .....ई, जे दिवाकान्तक करनी छिऐक, तकरा लेल लोक किछु ने बजैत छैक, कतेक कुमारि कन्याक शीलभंग कएलक, कतेक नारीक स्वाभिमान नष्ट कएलक, ताहि बेरमे सभक मुँह पर ताला लागल छैक। आ हमर पति वा महाराज स्वयं यदि समुद्रलंघन कएलनि तँ हमरा घरोसँ बहिष्कृत कएल गेल? ई कोन समाज, ई कोन नियम?'..... मेघ एखनहुँ लगले छलैक। शची दाइकें टकटकी लागि गेल रहनि। काल्हि एतहि रहबाक अछि, कारण जे चतुर्दशी वृहस्पति छिऐक, मृत्युयोगमे यात्रा नहि करब।.... अच्छा, कोनो तरहे ओहो एक दिन काटिए लेब। तावत् पेटमे एकटा सुखद संचार हुअ' लगलनि– कखन ने कखन, निन्न आबि गेलनि।

शची दाइ, दोसर दिन बिदा भए गेलीह। माय डेन पकड़ि गोसाउनिक घर लए गेलखिन, आइ-माइ ककरहु ने बजौलखिन। एतेक धरि जे ककरहु एकर अनुमानो ने लगलै जे एतेक जल्दी ओ बिदा भए जएतीह। एतेक दिन पर .... पाँच बरखपर तँ अएबे केलीहे, तखन तँ कमसँ कम छबो मास रहबे करतीह - एना सभ सोचैत छल।

शचीक मायके ई जनाएब जे ई जल्दिए चल जएतीह - से, उकठाह बुझि पड़लनि। दोसर जे गोसाउनकें गोर लागिकए, खोंछि लएकें जाथि से हुनकर हार्दिक इच्छा रहनि। यदि लोक सभ जुटि जइतैक, तँ पुनः मड़बेपर सँ आपस जाए पड़ितनि - गोसाउनिक घर गेलासँ देयादकें अनिष्ट हेतैक - लालमैञा पुनः दोहराबए लगितथि। एम्हर, पेटमे कुलदीपक आगमन भ' गेले, से बुझि शचीक माएकें खोंइछ दए भगवतीकें गोर लगाएब परम आवश्यक बुझि पड़लनि।

दास जी, जखन देखलनि जे कनियाँ एतेक जल्दी आपस आबि गेलीह तँ कोनो आश्चर्य नहि लगलनि। सोतिपुराक कर्मकाण्ड, जकरा ओ हँसीमे ठाकुर जी लग 'अकर्मकाण्ड' कहि बैसैत रहथि, ताहिसँ ओ पूर्ण परिचित छलाह। आ, कनियाँ, ओतेक नहि बुझि नैहरक मोह कएलनि, सेहो ओ जनैत रहथि। तखन, अपन पूर्ण दायित्व ओ गर्भस्थ शिशुक रक्षा मानलनि।

एम्हर, श्रीगंजसँ जखन शची दाइ आपस अएलीह तँ अत्यन्त उदास रहए लगलीह। ककरहुसँ गप्प करब, अपन सुख दुखक चर्चा करब संभव नहि रहनि। रातिके सेहो कछमछ कए बिताए देथि, आँखि मुनएबे ने करनि। भिनसरमे बुलनी माय हाथमे दूधक बाटी नेने ठाढ़ि रहनि। खाली पेटमे सेराएल दूध पीने बच्चा स्वस्थ आ गोर होइत छैक- हुनका बुझल छलनि। एकटा मिसरिक टुकड़ी आ दू टा छहोरा सेहो.....। शची दाइ कें उठ' पड़लनि। इच्छा रहनि जे खूब कानी, मुदा बुलनी मायक संकोचसँ उठि, अपन मुँह हाथ धोलनि। पहिल आहार, दूध लए, पुनः ओछाओन पर पड़ि रहलीह। मुँहसँ अनायास स्वर लहरी मुखर भ' उठलनि–

अनपानि छुटिए गेलै
छुटलै नैहरबा मोरा
आहो आहो रामा पिअबाक छुटलै दरस परसबे हो राम।
ई यदि जनितहुँ पहिने
सभ किछु छुटिए जेतै
आहो आहो रामा धरितहुँ योगिनि पथक वसनमे हो राम।।
बड़ रे जतन सओं कर सओं अड़हुल लगौलिऐ
आहो आहो रामा पुजितहुँ गौरा सिर सिन्दूरबे हो राम।।
निपि पोति देवी सिरकें अचरा बन्हबितहुँ हमहूँ
आहो आहो रामा सेहो मैया केलकै घरसँ बहारे रे की।
पिअबो परदेसे गेलै ककरा ई दुखबा कहबै
आहो आहो रामा......... दिन राति हमरो भेलै पहाड़े रे की।
सपनोमे पिअबा अबितै
सपनो सपनमा भेलै
आहो आहो रामा.............
छन भरियो नयनक पट नहि झपकए रेकी.......।।

कनियाँक आँखिसँ झर–झर नोर जाए रहल छलनि। बुलनी माय नहुँए-नहुँए पयर दबाब लगलनि। हुनको आँखि नोरा गेल रहनि।

.......'आइ, भानस भात नहि हेतै की?'

बुलनी मायक स्वरमे कोमल उद्बोधन छल।

'की, आइ नहि खाइ तँ.........'

'तखन अहाँक बच्चाकें आहार नहि भेटतै।'

कनियाँ लजाएकें उठलीह।

...... 'बुलनी माय, हिनकर, हाथक लिट्टी बड़ नीक होइछै..... सुनै छिऐ........'

........'यै बौआसिन , लिट्टी तँ हम बनबै छी, मुदा......'

.........'मुदा की?.........बाजथु ने.......।'

.........'मुदा, ओइमेतँ नोन रहै छै। अहाँ कहबै जे छूति गेलै.......?'

........'आ हम अपनहि जे छूतल छी.....?'

.... बुलनी माय अकचका गेलि। ओ 'छूतल'क अर्थ बुझलक जे कनियाँ रजस्वला भ' गेलीह..... अर्थात्...... अर्थात्....गर्भ नष्ट.....?'

बुलनी माय विस्फारित नेत्रसँ कनियाँ दिस ताक' लागल। कनियाँ ओकर आँखिक प्रश्न बूझि हँसए लगलीह– 'हम एहि दुआरे छूतल छी जे 'विलायती' छी– 'स्वदेशी' नहि रहलहुँ.....।' बुलनी मायकें जान–मे–जान अएलैक।

.......'बेश कनियाँ, हमर हाथक यदि खेबै तँ एखने बना दैत छी। हम अपनहुँ आइ भात नहि बनाएब। ....आ सेहो .....किऐक, ई छूति–फूति उठा ली तँ नित्ये हम भानस क देब, एतेक जे भार उठबै छी, अपन भानस ले, से हल्लुक क', देब। बरु, बुलनी बापकें सेहो एतहि खुआ देबै।'

कनियाँ कें स्वीकार भेलनि। 'बारि तँ देने अछि पहिनहिसँ सभ, तखन कथीक ई छूति–फूति। हमर चौकाक कोहा–कराही धरि छोड़ि पितरिया बरतन आ लोहा वला लोहियामे भानस करथु, संग खाएब तँ सुआदो लागत।'

कनियाँ कें बुलनी मायक हाथक स्वाद तेहेन रुचिगर लगलनि जे भरि इच्छा खाए लगलीह। पछिला चारि मासक इकार–विकार दोसरक हाथक भोजन भेटला सँ अपनहि बिला गेलैक।

सत्यनारायण दास सभ दिन साँझ आ परात टहलैत–बुलैत आबि जाथि। बुलनी मायसँ सविस्तर समाचार बुझि आपस चल जाथि। ओ बुलनी मायकें बुझा देने रहथिन ने भोजनमे कमीसँ बच्चापर बड़ अधलाह प्रभाव पड़ैत छैक –

आ जँ अहाँक बनाओल भोजन क' लेथि तँ अति उत्तम।

से, बुलनी माय सभदिन कनियाँक रुचि आ स्वास्थ्य देखैत भोजन बनबऽ' लगलनि।

X X X X

देखैत-देखैत चारि मास बीति गेल। आब कामेश्वर ठाकुरक अबैया लगिचा गेलनि। पन्द्रहम दिन आबि जएताह। गाममे सुनगुनी पसरि गेल।

ओ दिन अएलैक, जहिया विलायतसँ घुरि ठाकुरजी गाम आपस अएलाह। लोक सभ हुनका देखबाक हेतु दौड़ल-केहेन भ' के अएलाहे - की पहिरने छथि इत्यादि बातक उत्सुकता सभकें रहैक। मुदा, सभ आएल दरबज्जाक निच्चे, सबजीपर बैसि रहल। सुकना सभक हेतु स्वागत करबाक चिन्तामे छल, ताहिसँ पहिनहिँ ठाकुर जी बजलाह- 'औ' गौंआ घरुआ लोकनि, अहाँ लोकनि निच्चहिमे किऐक बैसल छी? ऊपर अएबामे कोनो तारतम्य?'

'नहि.......नहि......., ठीठर भाई संकुचित होइत, मूड़ी नीचा खसौने बजलाह- 'आब ई सभ नहि चलतै। एतबे जे...... अपन तमाकूक चूनके डिबिया सँ चून खोखरि नीचा फेकैत ऊपर आबि गेलाह। ठाकुर जीकें बुझबामे भाङठ नहि भेलनि। पानि वा शरबत लेल पूछि स्वयं अपमानित नहि हुअऽ चाहैत रहथि। गौआँसँ दरबज्जा भरि गेल। साधारण कुशल-क्षेम बुझि सभ अपन-अपन घर जाइत गेलाह।

ठाकुर जी स्वयं बहुत थाकल रहथि। चुपचाप आराम करए चाहैत रहथि।

ओहि साँझमे एक्के संग अखाढ़क पहिल अछारसँ धरती नहाएल, कोजागराक इजोरियामे कुमुदिनी बिहुँसल, सिंगरहारक मादक सुगन्धिसँ बसात सिहकल, साओनक मेघ देखि मयूर नाचल आ गंगाक कलकल ध्वनि सँ चारूकात निनादित भेल- ई स्वप्न छलैक वा सत्य, से केओ नहि बुझलक, एतबा धरि अवश्य जे राति किछुए क्षणक भेलैक। कनियाँ ई तखन बुझलनि जखन बुलनी माय हुनक पयर रसे-रसे दबा रहलि छलि। दिनकर एक हाथ ऊपर उठि गेल रहथिन।

X X X X

जहियासँ दीदीकें स्मरण छनि, अपन बाबा, कामेश्वरकें कम्मे लोकक संग गप्प करैत देखलखिन। पिता, सोमेश्वर ठाकुर अवश्ये दश गोटएसँ घेरल रहैत छलखिन। सदिखन, ककरहु ने ककरहु बेर-विपत्ति, रोग-बलायक समाधान,

करबाक हेतु तत्पर। 'स्वदेशी-विलायती' बला आगि मिझाए गेल रहैक। कखनहुँ-कखनहुँ मायक मुँहसँ विचित्रे विचित्रे घटनाक वर्णन सुनैत रहथि।

पड़ोसक काका, करिया काकाक बहिनकें जे विवाहक बाद पञ्चमी (मौना पञ्चमीसँ तृतीया-मधुश्रावणी धरि) पूजा भेलनि, ओहि साल बड़ जोर बाढ़ि आएल रहैक। मुदा, साँझ गाएब तँ आवश्यक रहैक। अन्हरोखेमे, साँझू पहर हुनकर माय बिसहाराक गीत गएबा लेल नाओ सँ करिया काकाक आङन जाइत रहथि। आओरो आङनसँ महिला सभ एहिना अबैत छलीह। गीत नाद खूब जोरसँ होइत छलैक, मुदा जें ठकुराइन (बाबी) विलायती छलीह, तँ हुनकासँ सम्पर्कित व्यक्तिकें तुलसीमाइन कर' पड़ैत छलनि। दोसर दिस बाबीके कोनो पाबनि-तिहारमे छोड़ब संभव नहि रहैक। हुनका सन लुरिगरि वा गीतहारि केओ दोसर नहि छलीह। एहना स्थितिमे, ई होइत रहलैक जे नाओ सँ साँझमे गीत गाबि आपस आबि जाइत रहथि। ई महाराजक विलायतसँ आपस घुरबाकालक पश्चातक एकटा बानगी भेल। कतेक गोटए तँ धर्म भ्रष्ट ने भए जाए, ताहि डरें देश धरि छोड़ि, नेपाल जाए बसलाह। 'जतएक महाराजे धर्मच्युत भेलाह ताहि देशक कल्याण संभव नहि छैक। आ, यदि काज करतेबतामे हुनका द्वारा बनबाओल वा हुनकासँ सम्पर्कित व्यक्ति द्वारा बनाओल भोजन कएना गेल तँ महापापी बनि जाएब' - ई विचारि बहुतो ब्राह्मण नेपाल चल गेल रहथि। कालक्रमे, 'स्वदेशी-विलायती'क आगि मिझाए गेलैक तँ रहि गेलैक 'बड़का-छोटका' कहएबाक दंभ जे दीदीक समय धरि छलैके।

........तँ नेपालसँ 'पैघ' कुलक ब्राह्मणक ओतएसँ करिया काकाक पोतीक हेतु बरियाती औथिन। विजया दशमी दिन राशि नक्षत्र भेटि गेल रहनि। दिन भेलैक सामाक परात।

आब घर-दुआरि, लिखिया पढ़िया सभटाक प्रबन्ध करबाक छलैक। सीताक (कन्या) माय चिन्तित भ' गेलीह। एतेक जल्दी कोबरा घर कोना लिखल जएतैक, हाथी, ठक-बक कोना बनतैक - दिन तँ गनिएके छैक।

........'यै सीता-माय, कथी लेल चिन्ता करै छी। अपरा तँ आबिए गेलीहे सासुर सँ......' लतामबाली काकी समाधान तकलनि।

.......'से की ओ हमरे लेल अएलीहे? कखन सासुर चल जएतीह तकर कोन ठेकान.......' - सीताक माय चिन्ता जनौलनि।

'अही भरोसे रहब, ई कान खोलिक' सुनि लिअ' जे ओ आब कहियो ने सासुर जएतीह। एहेन अगिलहीकें के राखि सकैत अछि?'

.........'से किऐक कहैत छथिन, तामस पितमे तँ सभ अनटोटल बात बाजि जाइए, अनर्गल काज क' जाइए, तेँ की ओ सभ दिन एक्के रंग रहत?'

– सीताक मायकें अपरा बड़ पसिन्न रहथिन। हुनका लेल अपमानजनक टिप्पणी ओ सहि नहि सकैत रहथि।

........'हम कहैत छी ने, सासुर बसबाक चमड़े दोसर होइत छैक। ओ उढ़री......'

ई शब्द लतामवाली मैञाक मुँहसँ बहराइए गेलनि ता' गीताकें भीतरसँ नेसि देलकनि।

'यै लतामवाली मैञा, अपन आशीर्वाद राखू अपना लेल। दीदीकें गारि कथी लेल पढ़ैत छियनि? मौगीकें तँ दुइएटा घर रहैत छैक– नैहर आ सासुर। यदि सासुरमे कोनो विकट समस्या भेलैक तँ अपन ठामपर केओ आबि सकैत अछि। ओ कि कोनो अन्तह भागि गेलीहे? कोनो, अनचिन्हार लोकक संग हुनका देखलिअनि–हैं?.....' लतामवाली काकी माननिहारि नहि छलीह।

.......'हँ, ओ जे पाछाँ सँ भतार आएल रहनि। से के छलैए। हम तँ अपनहिँ आँखिसँ देखलिऐ......।'

........'की देखलिऐ? अहाँ तँ सभकें अहिना देखैत रहैत छिऐ। ....जे फलाँक बेटी मनसा लग सुतलैए.......आ फलाँक पुतोहु ओइ छौंड़ा संगे भागि गेलैए...... अहाँक आँखिमे कैमरा लागल रहैए......।' गीता उत्तेजित होइत चिकरए लगलीह......। ओ, हुनकर वरक पिसियौत भाइ छलखिन.......दीदीक दियर....।

........'देखू ने आजुक कलियुगहीक हाल, अपनहुँ ओहिना युगमे भूर करू......' आँखि नचबैत, हाथ चमकबैत लतामवाली काकी अपन आङन चलि गेलीह।

गीताक मायकें बेटीक एहेन उग्र भ' जाएब पसिन नहि भेलनि.....।

'किऐक हुनकासँ मुँह लगबैत छी। ओ एक तरहक लोक छथिन, से बुझियो कए......।'

'अँय यै माय, हम कोना सहि लिअ' जे दीदीके केओ गारि' पढ़ैत रहतनि। की–की कहि रहल छलखिन से नै सुनैत रहियैक।'

......'से तँ बुझले अछि जे अपरा हुनका फुटलो आँखिए ने सोहाइत

छथिन.....। एकटा बात कहैत छी, एखन अहाँ अपन दीदी के ई लिखिया-पढ़िया लेल नहि कहियनु, हुनका बच्चा हेबा लेल छनि आ भरि दिन ठाढ़ भए देवालपर लिखबाक दम्म हुनका नहि छनि। ओ बहुत कमजोर भए गेलि छथि।' गीताकँ माय मना केलखिन।

......'तखन एकटा काज करु?' गीताक प्रश्न छल।

की?

'हमही हुनकासँ कागत पर बाँस, पुरैनि नयनायोगिनि लिखब सीखि लैत छी, आ तकरा देबाल पर लिखि लेब.....।'

'बेजाए विचार नहि......।' मायकें नीक लगलनि। गीता कागत पेंसिल लए दीदी लग चल गेलीह। दीदीकें आइ मोन बेशी अधलाह लगैत छलनि। अहुना, पूर्ण समय रहनि, भरल पेट बच्चा तँ अस्स-विस्स होएब स्वाभाविके। गीताकें देखि प्रसन्न भए गेलीह। हुनका कागत पेंसिलसँ लिखिया सिखब' लगलखिन।

गीता कें भरि दिन लागि गेलनि, मुदा दीदी सन सुन्दर माछ वा मयूर नहि बनि सकलनि।

.......'आओर दू चारि बेर बनाऊ, तँ हाथ मँजा जाएत।' दीदी विचार देलखिन।

.......आ सत्ते, दू-तीन दिनमे गीताकें खूब सुन्दर चित्र सभ बनब' आबि गेलनि। सूगा, मयूर, माछ, कोइली – सभटा जीवन्त भ' गेलनि।

x x x x

कोजागराक साँझ। इजोरियाक स्निग्ध वातावरण शेफालिकाक सुगन्धिसँ उत्फुल्ल भ', गेल छल। कतहु, सँ कोनो चिड़ैक चिन्...कुन्..... संगीतक आनन्द द' रहल छलैक। घरे-घर लक्ष्मीपूजा, आ तकरा संग मखान, मिसरी, नारिकेर, केरा ओ पानक नैवेद्य देखि सभ प्रसन्न छल। पूजा घर दीपमालासँ ज्योतिर्मय छल।

दीदीक प्रसव पीड़ा बढ़ि रहल छलनि। किछुए कालमे एकटा रत्न सन सुन्दरि कन्याक जन्म भेलैक...... 'आबि गेलीह लक्ष्मी.....।' दादा गद्गद् कंठसँ सभकें कहलखिन।

बाबी सभक घर समाद कहौलखिन। परात भने सिनूर-पिठार लए 'मनोरथा' कें मलारपुर पठौलखिन। भगवतीक गीत एवं सोहरसँ घर गुजायमान भ' गेल।

अएली गिरिजादेवी भवानी घरमे मंगल जागल रे
ललना गेल दुरित भय पाप कि धर्मक वाणी व्यापल रे।।
हिमवानक घर दगरिन लोढ़थि हीरा मोती रे
ललना डाला भरि-भरि सोने भरथिन सबहक झोरी रे
की कहइत छथि नारद अओता एत्तहि भोला रे
ललना देवनि खीरक भोजन लएकें भाँगक गोला रे।।

बाबीक मुँह सँ गीतक स्वर लहरी समेटने ने समटल जाए रहल छलनि।

........'यै अपराक माय, की एतेक घोल गलंजर क' रहल छी। भाग-भाग तँ मौगिए बच्चा भेलैए, ओ कोनो कि बेटा छिऐ......' लतामवाली काकी लोहछैत अएलीह।

.......'तँ की भेलै....? बेटा रहओ वा बेटी, कोखिक रतन तँ छिऐहे ने.....।'

'आइ धरि ई कतौ ने सुनलिऐ-ए, जे बेटी होइत छै तँ अङने-अङने लोक कहा पठबै छै .... आ एतेक टोप-टहङ्कारसँ गीत नाद होइ छै।.... सुनू हमर बात....., बेटा जँ होइत छै तँ धरती सवा हाथ ऊपर उठि जाइत छथि आ यदि घरमे बेटीक जन्म होइत छै, तँ सवा हाथ धरती धँसि जाइत छै......। से, अहाँ आबहुँ तँ चुप्प रहू। भगवतीकें कहियनु जे कुलक नाम राखए ई बच्चा, वर नीक होइ......।'

से तँ समय हेतै तखन ने कहती। एखन ई तँ जन्मे लेलक अछि। दुर्गा आ गौरी, सीता आ राधा - सभ तँ बेटिए छलीह, तँ हुनकर सभक पूजा किऐक करैत छियनि

– आइ बाबी मुखर भए गेल छलीह।

......'गाउ, गाउ, खूब गाउ, हम तँ व्यवहारक गप्प करैत रही। जे आइ धरि नहि भ' एलैए से सभ करू।' लताम वाली काकी लोहछैत बजलीह।

.......'बाबी यै, सिनूर-पिठार मलारपुर गेलै?' – गीता केम्हरहुसँ आबि पूछि देलखिन।

......'एँ, सिनूरो-पिठार गेलै? ई तँ शुद्ध कए भगवतीक अपमान छियनि- दूनू कुलक भगवतीक। कत्तौ ने सुनने छलिऐक जे बेटीमे सिनूर-पिठार लए कहा पठाओल जाइत छैक...... आब, बेटी सभक अएला पर दुर्वाक्षतो दिआ

दिऔक......' लतामवाली काकी व्यंग्यबाण छोड़ैत बजलीह।

.... एम्हर, मनोरथा जे मलारपुर पहुँचल तँ मिसरिया झा दरबज्जे पर सँ चिकरैत बजलाह –'माय, ई देखियौ की कहबा लेल आएल छथि? हम हिनका नहि चिन्हैत छियनि.......।'

मनोरथा के देखैत मिसरियाक माय बथने वालीकें पठौलखिन। ओ हुनकर हाथ सँ सिनूर पिठारक बासन लए बौआसिनक हाथमे देलखिन। मिसरिया झाक माय गोसाउनिक सिर लग ओ राखि मंगल गीत गौलनि। खवासिनी लोटामे पानि भरि मनोरथ के पएर धोबाक हेतु देलखिन आ बैसबाक हेतु पटिया बिछाबय लगलीह– ता'– मिसरिया झाक कड़कैत स्वर सँ थरथराए लगलीह– 'गै बथने वाली, बेटिए भेले से कहबा लेल ई पाँच कोससँ अएलाहे.....। कहुन गे मलिकाइन कें जे सेर भरि चाउर आ एकटा टाका द' के जल्दी विदा करथिन। सन्हौलीक एकेटा बस आब छै, नै तँ साँझ धरि हिनका रह' पड़तनि।'

मनोरथाके एतेक नहि बुझल रहैक जे ओझाजी धनबताह भ' गेल छथि..... जे, बेटीक जन्मे डेराइत छथि......... जे, 'विवाहमे टाका गन पड़त' ई छोड़ि हुनका बेटीक जन्मक आगाँ किछु ने सुझैत छनि। ओ तँ एहि मनोरथसँ हलसैत-फुलसैत आएल रहए जे नेनाक जन्मक समाचार सुनि भरिपोख भोजन करौताह आ धोती-टाकासँ स्वागत करताह। बसोक भाड़ा आब सवा टाका भए गेल छलैक, सेहो यदि सोझे बस भेटल तखन। यदि मलारपुर सँ घाटी आ घाटी सँ सन्हौलीक बस करू तँ सोझे अढ़ाइ टाका लागि जाइत छैक– अढ़ाइ टाका मनोरथक संगमे नहि छलनि। हुनका ठकिया लागि गेलनि। एक भोर जे उठलाह से एत्तहि रुकलाह, भूखे पेटमे बिलाइ कूदि रहल छलनि।

बथनेवाली मालिकक आज्ञाक पालन कएलनि। ओ एक टाका आ सेर भरि चाउर मनोरथा के दए आङन दिस चलि गेलीह। मनोरथा उदास मोने आपस घुरल चल जाइत रहथि। दरबज्जासँ दश डेग आगाँ, मंठा पोखरि लग पहुँचलाह तँ देखैत छथि वएह मरौत काढ़ने महिला झटकि कए आगाँ आबि बजैत अछि– 'कनी रुकथु। मलिकाइनिक समाद सुनि लेथु। ई पाँच टाका बसक भाड़ा भेलनि आ एकैस टाका विदाइ.....।' आ, एकटा अखबारमे लपेटल लाल रंगक धोती, हाथमे दैत बथने वाली बाजलि– 'ई पहिरिए कए अपन गामपर जएताह से मलिकानि कहलखिन हें......। हँ, ईहो बुझा देथु जे बच्चा केहेन छै? परसौतीक मोन केहेन छनि?'

मनोरथा सभटा हाथमे लए गदगद भए गेल। बाजल– 'बच्चा खूब

सुन्दरि छै– एकदम भगवती सन, डोका सन-सन आँखि, पान सन पातर ठोर, औंठिया केश, खूब नीक देह-दशा। आ हमर बुच्ची सेहो निके छथि, सभ खूब प्रसन्न।' से कहैत ओ आगाँ बढ़बाक हेतु डेग उठौलनि। ता, बथने वाली पुनः बाजलि– 'हिनकर भात हमर आङनमे बनि गेल छैक। मलिकाइनक मोन नीक नहि छनि, तें हमरे कहलनि जे एतेक दूरसँ जे अएलाहे, से भुखले नहि जएताह।'

मनोरथा बथने वालीक संकेतक अनुसार, एकटा मड़ैया दिस बढ़ि गेल। दालि-भात, आलू क दम्म तिलकोड़ा पात, परोरक भुजिया आ सरइकट्ठा दही पेट भरि भोजन कए तृप्त भेल।

एम्हर, गुलाब काकी कें मिसरिया झाक माय कहा पठौलखिन आ हुनका संग भरि गामक लोककें सेहो जे पौत्रीक जन्म भेले– आबि कए सोहर गाबि देब। सभसँ पहिने गुलाब काकी चिकरैत आबि तुलएली– 'भेल ने, पुतहु तँ उढ़रिए गेल रहथि, तखन बच्चा धरि बाँचि गेल.....। सएह टा सुकूर,...... कोना बुझलिऐ ई खबरि..... के कहलक?'

'सन्हौली सँ, खबास आएल छलैक, सिनूर पिठार ल' के.....।'

.......' हे भगवती! रक्षा करबै......।' गुलाब काकी माथ पीट' लगलीह। मिसरिया झाक माय अप्रतिभ होइत ताक' लगलखिन।

.....'की केलिऐ सिनूर पिठारकें.....?'

'किऐक, गोसाउनिक सिर लग राखि गीत गौलिऐ।'

......'गीतो अपनहि गाबि लेलहुँ? लाजो ने भेल? बऽऽर बढ़ियाँ, अपनहि नाचो क' लिअ।'

'मर्र.......एना, किऐक ई बजैत छथि?'

'एँ यै, एतबो ने बुझैत छिऐक जे बेटीक जन्म पर सिनूर-पिठार नै होइत छै?'

'ई तँ पठौनिहार जनैत छथिन, हमरा घरमे शुभक वस्तु आएल, हम भगवती लग राखि देलिऐक। एहिमे हिनका की अनर्गल बुझि पड़ैत छनि।'

.......'जखन पठौनिहारि पठाइए देलनि, तँ अहाँ उचिते.......जतेक अनट करबाक से करू, बौआ अहुना दुखिताहे छथि, माथे खराब छनि...... आब, जखन, निछट्ट बताह भ' जेताह तँ गीत गबैत रहब......'

.......'इह, बड़ पद्‌मिनी भेलीहे, एकटा बेटा छनि तकरो गुनझिक्कू बना के......।' मिसरिया झाक माय गुलाब काकीक मुँह तकिते रहि गेलीह। बजैत-बजैत ओ कखन आङनसँ चलि गेलीह से नहि बुझलनि। भुइयाँ पर ओंघराए गेलीह। तराटक्क लागल रहनि।

.........'यै काकी, एना निच्चामे पड़लि किऐक छी? पोती भेले से मन हुस्म अछि की?'एक हेंज छौंड़ी रुन-झुन करैत, चहकैत आबि बाजलि-'अएलीहे, हमर सभक सङी। की नाम रखबनि? लक्ष्मी कि रामा?'

'मिसरियाक माय झटसँ उठलीह। पहिने, दू टा मंगल कहि दै जइयौक। तखन.......।' आ, टोप टहंकारसँ महिला लोकनि, अपन पुत्रीक संग मंगल आ सोहर गौलनि।

लतामवाली काकी अङने अङना जाए पञ्चैती कर लगलीह- 'देखियनु बसहीबालीकें, घरमे बेटी कि अएलनि, हर्षक ढोल बजबैत छथि......एना कतहु बेटीक जन्म पर उधव-बधावा होइ। लगै छै जेना राम-लछुमनक जन्म भेल हुअए।'

......'बाबी, आब रामोक जन्मसँ बेशी सीताक जन्मक उत्सव मनाओल जेतैक। देखियौ, रामक जन्मपर तँ उधव-बधावा भेल, किएक तँ ओ राजाक बेटा छला। आ सीता जनमली तँ पूरा संसार शीतल भेल, अकाल टरि गेल, समय साल पलटि गेल। अन्न-अन्नकें मरबाक भय समाप्त भेल। सीता छोट-पैघ, सभकें समान रूपें जुड़ौलनि, दुर्भिक्षक आशंका नष्ट कएलनि। से कहैत गीता सीता जन्मक गीत गाबए लागलि-

सगर नगर दुख व्यापल नभ थल प्यासल रे ललना।
धरतिक हिय गेल फाटि सभक सुन आंगन रे।
जनकक बढ़ल तरास, अकालक भय लखि रे ललना।
सुन भेल खेत पराँत सभक मन काँपल रे।
पंडित जोतखी सुनलनि अनटक कारण रे ललना।
कहलनि भूपति आब हरक धरु लागनि रे।
रूसल इन्द्र मनाएब धरती जागत रे ललना।
धरती देती भवानी दुख सभ भागत रे।
जखनहि भूप धएल हर नयन भेल हरखित रे ललना।

स्वयं रमा शिशु रूप धारि भेलि प्रगटित रे।
धरती सँ ओ अएली देखु सुनयना रे ललन।
कोमल दिव्य स्वरूप जुड़ा गेल नयना रे।
खुजि गेल धरतिक आँचर, दुरित सभ दुर गेल रे ललना।
खूजल भाग्यक रेख जनक कर करमहि रे।
अएली सीता जनक घर चहुँ दिस मंगल रे ललना।
नाचि गेल मनक मयूर कि हरखित नभ-थल रे।

x x x x

एहि बेरक माघ किछु बेशिए ठंढा ल' के आएल छैक। तापमान बेशीकाल चारि डिग्री सेल्सियस धरि चल जाइत छैक। हाथ-पएर सुन्न, भ' जाइत अछि- विशेष क', यदि धरक काज बेशी कर' पड़ैत अछि। ....आ, एतए, इलाहाबादमे तँ घरक काज माघेमे सभसँ अधिक होइत छैक। गामक लोक सभ औताह तँ भेंट अवश्य करताह, केओ अपेक्षासँ तँ केओ आश्रय तकैत। ई दोसर बात छैक जे हमर घरमे झोल लागल अछि, वस्तु-जात छिड़िआएल रहैत अछि, स्वयं उचित आहार नहि लैत छी- ईहो सभ कहबामे कमे गोटए संकोच करैत छथि, ...आ हम, एकटा आदर्श सामाजिक प्राणीक मुद्रामे सदिखन भोजन-भात, चाह-जलपान, ओढ़ना ओछाओनक व्यवस्थामे लागल रहैत छी। जाड़एँ अहुना ठिठुरैत, कँपैत काज बेशिए कर' पड़ैत अछि। मुदा एकटा लाथो होइत अछि- गाम घरक हाल-समाचार बुझैत रहैत छिऐक।

.......तँ ओहि दिन नरक नेवारण चतुर्दशी रहैक। काल्हि अमावस्या हेतैक- मौनी अमावस्या। गङ्गा स्नानक विराट पर्व।......

'.......ट्रिं...... ट्रिं...... घन्टी बाजल। रातुक दरसबाजि रहल छलैक। तुराइ तरमे छोटूकें पेटसँ लगाए गरमा देने छलिऐक - अपनहुँ गरमा गेल रही, निन्न खूब जोरसँ आबि रहल छल।

........'यै, उठू, बुझि पड़ैए कोनो अतिथि आएल छथि' – श्रीमानजी तुराइए तऽरसँ जगौलनि।

'ऍं.......' कहैत हड़बड़ा के उठलहुँ। बाहरक कोरीडोर लग जाए देखलहुँ तँ एकटा पुरुष आ एकटा महिला रिक्शा रोकने ठाढ़ छथि। रिक्शापर कोनो-कोनो सामान लादल छैक।

'विकास झाक घर यैह छियनि?'......'हँ..ऽ.....हँ..... लाल काका?'

'के, मुनिया, खोल' केबाड़ - ठिठुरि गेल छी.....।' हमरा जाड़ ठाढ़ सभटा पड़ा गेल। ध्यान चल गेल लाल काका आ लाल काकीक जाड़ें देह सर्द भेल पर। झट द' नीचा उतरि केबाड़ खोलि देलियनि।

........आब, गप्प हुअ' लागल गाम-घरक समाचार पर। गामसँ जे केओ अबैत रहथि, हुनका हम दीदी आ हुनकर बेटीक गप्प अवश्य पुछियनि।

.......'की कहू, एहि बीचमे तँ, अपरा विचित्रे द्विविधामे पड़ल अछि....।'

......'से की, आब अपर्णा तँ दश बरखक भ' गेल हेतै। केहेन देखबामे आब लगै छै? पढ़ैत छै वा नहि? गाममे केहेन स्कूल छैक? हमरा अनेक प्रश्न छल।

......'ओ छौंड़ी तँ आब पित्ती लग रहै छै। वएह, कारी भाइक पौत्रीसँ जकर बियाह भेलै, ओ दिल्लीमे रहैत अछि। कोनो प्राइवेट नोकरी छैक।'

'अच्छा.....ऽ....ऽ, तँ अपर्णा आब दिल्लीमे रहैए? की, गीताक संग? जकर वरक नाम शिबू छिऐ?'

'हँ.....हँ....हँ, मायक वरक तँ ओ पिसियौत छिऐ। कहै छै जे एकरा हम डाक्टर बनेबै।' लालकाकी कहलनि।

.....'एखन तँ बड़ नेना छैक......'

'हँ से तँ छैक, जे बड़का भाइ सेहो सुनै छिऐ जे खर्चा-बर्चा गछि लेलखिन हें।'

.......'आ छौंडीक बाप?' - हमर जिज्ञासा छल। किछु आशा सेहो जे दीदी अपन वरक संग रहैत होथि।

'.....धुर्, छोड़ू ने ओहि राक्षसक गप्प। ओ बेटीकें देख' नहि चाहैत छैक। कहैत छै जे ओकरा हम मारि देबै, तखन विवाहक खर्च सँ मुक्त भ' जाएब।' लालकाका आक्रोश व्यक्त कएलनि।

'तखन दीदी?' हमर जिज्ञासा छल।

'ओ तँ खुशीसँ माय-बापक सेवा करैत छथि आ बेटीक डाक्टर बनबाक आशामे पूजा-पाठ करैत रहैत छथि।'

'तखन......अहाँकें के कहलक जे अवग्रहमे पड़ल छथि?' हमर प्रश्न छल।

'हुनकर जेठ भाइ, शिवेन्द्रकें केओ कान फूकि देलकैए, जे बाप सभटा सम्पत्ति अपराक नामे लिखि देलखुन हें, से ओकिलबा जखन-तखन गाम आबि माय-बाप आ बहिनकें दुर्गंजन कए चल जाइत अछि।

'एहेन के छैक कान फुकए बला?'

'देखैत छिऐक जे शहरसँ आबि सोझे लतामवाली काकीक ओतए जाइत अछि। पहिने ओत्तहि जलपान-चाह क' अपन आङन अबैत अछि.......आ ....।'

'ई त विकट समस्या छैक। तँ दीदी कहैत किऐक ने छथिन जे हम कात भ' जाइत छी?, माँ-आ दादाक सेवा अहीं करियनु?'

...... 'हुनकर सभक सेवा तँ ओ किछु ने करत, तखन लतामवाली काकीक बोल पर अवश्ये उड़त' ......राति गढ़ा गेल, रहैक। लालकाका सुतबाक चेष्टाकर लगलाह।

x x x x

आइ, भीड़ो जे छलैक से पहिल सभटा रिकार्ड तोड़ि देने रहैक। भीड़कें देखैत जवाहर लाल नेहरू रोड सँ कैन्ट रोड धरि ट्रैफिक बन्द क' देल गेल रहैक। आ, हनुमान मन्दिर सँ पहिनहिँ, झूसी दिस लोककें मोड़ि देल जाइत रहैक, जेना गाय महीसकें हाँकि देल जाइत छैक। ततएसँ, अखाड़ा चौकसँ काली मार्ग, घुमौल जाइत रहैक- एहिना, क' कैं जे गंगाधार वा संगम घाट बान्हसँ मात्र दू किलोमीटर छैक, ततए धरि पहुँचबाक हेतु, सात किलोमीटर घुमौआ रास्ताक कारणे चलऽ पड़ैत छलैक।

एकरो एकटा इतिहास छैक। ट्रैफिक व्यवस्थाकें दुरुस्त करब प्रशासनक दायित्व होइत छैक।

सन् १९५४ ई०मे कुंभ मेला लागल रहैक। सम्पूर्ण देशसँ श्रद्धालु स्नानार्थी इलाहाबादमे आएल छलैक। भीड़ भयङ्कर छलैक। जेना कि परम्परा छैक, ई कुम्भ स्नान मुख्यत: नागा बाबा सभक पाबनि छियनि। ओ अपन अखाड़ाक निर्माण त्रिवेणी क्षेत्रमे सभ बरख करैत छथि। अखाड़ा भेल शिविर जाहिमे भक्त लोकनिक रहन-सहन, भोजन भात आ प्रवचन करबाक व्यवस्था समुचित रूपें रहैत अछि। से, ओहि सालक कुंभ पर्व दिन पहिने पुण्य प्राप्त करबाक उत्साह एतेक बेशी भ' गेल छलैक, जकरा उत्साह सँ भिन्न उन्माद कहब बेशी उपयुक्त हैत। बेशी स्नानार्थी ई सोचि भोरक अन्हरोखेमे संगम दिस जाए लगलाह जे शाही स्नानसँ पहिने हम सभ स्नान क' लेब। नागा लोकनिक समय पर मार्ग

खाली नहि छलनि। ओ सभ, हनुमानजीक मन्दिरक ढलान पर अपन-अपन हाथी ढुकाए देलनि। आगाँ चलैत भीड़ बुझि नहि सकल जे की बात छिऐक, एक पर-एक लोक खसैत गेल, ताहूमे ढलान छलैक, जे लोक एकबेर खसल ओ हजारों लोकसँ पिचाइत गेल - मुर्दाक ढेर लागि गेलैक। लोकके 'इस्स' धरि करबाक अवसर नहि भेटलैक।

तहियासँ, मेलाकें नियन्त्रित करबाक यैह नियम बनल जे भिन्न-भिन्न घाट बनए, ताहू दिस जावत एक हेंज लोक पहुँचए ताहिसँ पहिने दोसर हेज घूम-घुमौआ रास्तामे चलैत रहए।

एहि व्यवस्थासँ लोकके चल' तँ पड़ैत छैक बहुत किन्तु जानक खतरा नहि होइत छैक।

चलैत चलैत पएर तुम्मा भ' के फूलि गेल छलैक सभक।

साँझू पहर सभ बड़ थाकल रही। जल्दिए तुराइ-कम्मल लए हीटर लग बैसि रहलहुँ।

...... 'ई हीटर तँ शहरुआ वस्तु भेल। हमरा लोकनिकें तँ ऐल-फैलसँ घूरक आगि चाही। एहेन ठिठुरैत सरदीमे तँ खुघरी चेरा लए धधकाए दैत छिऐ आ पछाति ओहिमे ढेङ लगा दैत छिऐ- पसरि क' दशो गोटए चारूभर बैसि जाउ।' लालकाका कें गामक दलान मोन पड़लनि।

...... 'हँ....ऽ....ऽ, से तँ छैक। लऽ जाउ अपन हीटर, हम बरु ओढ़ने तुराई मे' गरमाएब - लालकाका हीटरक एकजनिया धाह सँ अतृप्त होइत ओछाओनमे घोसिया गेलाह। लालकाकी सेहो हमरे ओछओनमे लेपटाएलि हमर बाट ताकि रहलि छलीह- गप्प-सप्प करितथि।

......'लालकाकी, मिसरिया झाक की हाल?'

'ओ मतिझिक्कू भ' गेल छथि। सुनै छिऐ, एकटा हुनक पितिआइनि छथिन, ओ जे जे कहैत, छथिन, सएह हुनका नीक लगैत छनि।'

.......'ओ जे ..... दीदीक सासुरमे एकटा गुलाब काकी छथिन?'

.........'हँ गुलाब काकी कहैत छनि सभ। कोना-ने-कोना डाली पाती करौलक कि नोन पढ़ाके खुऔलकै, ओहेन शुद्धा लोकक मतिए हरि लेने छै।'

.......'हुनके मोने दीदीक घरमे सभटा होइ छै की?'

.......'आओर ने तँ की, मिसरियाक मायकें सदिखन रोगे बलाय घेरने

रहैत छनि, रोगोमे एहेन कठिनाह जे ऊठै ने दैत छनि, सोन सन अपराकें त्यागि दोसर विवाह क' लेलक-ए.....'

'अँऽ, दोसर विवाह? के हुनकर हाथमे अपन बेटी देलकनि......।'

.......'अपना ओत' बेटी माथै बापक कंठपर रहैत छै। ओ जे गुलाब काकी छथिन, हुनकर भतीजी.... ई तीसक धकमे अबैत छथि तँ ओ दश बरखक....आ, तकरा संग विवाह करा देलखिन.....भाइ तँ भांग गाजामे, छौंडी-मौगीमे सभटा खेत बेचि देलखिन, बहुकें कूटि-कूटि कए मारैत मारैत मारिए देलखिन, तखन बँचल रहनि ओ बेटी...... तकरा मिसरिया झाक कंठमे पितिआइन बान्हि देलखिन.....कहलखिन जे सन्हौलीवाली तँ उढ़रिए गेल छलौ, आब नैहरोमे रहैए तँ बेटिए भेलै, से बेटाक बिना वंश कोना बढ़तै- से, मिसरिया झाक विवाह अपन भतीजी सँ ओ कराए प्रसन्न छथि।

'केहेन मौगी छै ओ, एक तँ दीदी के वरसँ कात करौलक आ एतनीटा जानकें.....'

.........'हुनका तँ नैहरक कुलक रक्षा करबाक छलनि, ई निश्चय जे बापक भरोसे ओहि छौड़ीक विवाह नहि होइतै। लाल काकी गुलाब काकीक विवशता जनौलनि।'

'तँ की, दीदीक घरके उजाड़ि कए......? ई उजाड़ब कुल-शीलक उपयुक्त भेलै?'

– हम उत्तेजित भए गेलहुँ।

'अपना ओतए झाँपि तोपिकए सभटा कर्म उचिते भ' जाइत छैक'– लालकाकी आक्रोशक स्वरमे बजलीह।

हमरा किन्नहुँ निन्न नहि भए रहल छल।..... ई वंश परम्पराक निर्वाह वा राक्षसी-परम्पराक पोषण? बेटीकें गर्भेमे नाश क' देल जाइत छैक, यदि जन्म लेलक तँ आनन्द उत्सव मनाएब रोकि देल जाइत छैक- ताशा नहि बजबाउ, दुर्वाक्षत नहि दिआऊ......' किऐक...... किऐक?

...... 'रेणु, सूतल छी कि जागल......एना किऐक.....किऐक चिकरि रहल छी अहाँ। अहाँ के की भ' गेले?.....' लालकाकी देह डोलबैत जगौलनि। माघ मासमे घामे पसेने तऽर-बतर भ' गेल रही। झट् सँ तुराइ देह पर सँ फेकैत बाजि उठलहुँ- 'बहुत ओढ़ना तुराइ देह पर ल' लेने छलिऐ, से गरमी लाग' लागल,- हम सहज होएबाक प्रयास कर लगलहुँ।

भिनसर खन तँ जाड़ आओर बढ़ि गेल रहैक। मौनी अमावस्याक संगम स्नानक थाकनि हमरा सभकें ओछाओनसँ उठहि ने दैत छल। ओ ट्रैफिक– जे घूम घुमौआ मार्ग बनबैत छैक– से व्यवस्था सभ श्रद्धालुकें बीसो किलोमीटर चलाए देने रहैक। पएर फूलि कए तुम्मा भ' गेल छल। तैयो, भोरक आ दिनक काज तँ करहि पड़त। आहैत–गमैत उठलहुँ। चाह आनि लालकाका आ लाल काकीके जगौलिअनि। ओ लोकनि प्रायः प्रतीक्षे करैत रहथि। आह्लादित होइत उठलाह।

...... आ, सामान्य दिनचर्याक पश्चात् हमर गप्प पुनः 'दीदी' पर चल गेल।

......'तँ लालकाकी, अहाँ किऐक कहैत रहिऐ जे अपरा अवग्रहमे पड़ल अछि। नैहरमे तँ दीदीकें खूब सुख–सुविधा, माय–बापक दुलार भेटैत छनि..... तखन तँ 'अपन घर' कहबा लेल उजड़ि गेल छनि...।' हमर जिज्ञासा छल।

......'नहि–नहि, अपन घर तँ ईहो नैहर छियन्हिए, जे यैह बात गामक लोककें अखरैत छै।......' लालकाकी फरिछौलनि।

.......'से की ओ ककरहु........ अर्थात् गौंआ घरुआक भरोसे छथिन' – हमरा दीदीक प्रति बहुत सहानुभूति भ' गेल छल।

'ओ नहि छथिन, किन्तु गौंआकें सोमेश्वर ठाकुरक सम्पत्ति पर टक्क छैक, सभ अपना–अपनीकें ओकर उपभोग कर चाहैत अछि, ताहिमे हुनकर सन्तान बाधक छनि....।' लालकाका खोंइचा छोड़ाए बुझौलनि।

......'आ जहिया सम्पत्ति अरजलनि तहिया तँ सभ धर्मभ्रष्ट कहि बारि देने रहनि।'

– हम कहलिअनि।

......'यदि बारियो कए छोड़ि देने रहितनि तँ कोनो पराभव नहि होइतनि। – लालकाका बजलाह।

'तँ छोड़िए देने रहनि ने, सेहो सोमेश्वर ठाकुरकें नहि, हुनकर पिता कामेश्वर ठाकुरकें।' ....हम कहलिअनि।

........'आ सोमेश्वर ठाकुरकें जाने हतबा लेल तैयार छलनि सभ' – लालकाकी सुझौलनि।'

........'एँ जान हतबा लेल?

'आओर की तँ, जखन कामेश्वर ठाकुर विलायतमे रहथि, तँ बुढ़ीकाकी श्रीगंज बालीकें विष दएकें खीर खुआब' चाहलनि।

'अँऽ......'

'हँ एकटा बाटीमे विष दए खीर श्रीगंज वालीकें देलखिन.....हुनका बुझल रहनि जे गढ़ुआर छथि...... तखन रच्छ रहल जे.......'

हमरा सविस्तर कथा कहलनि लालकाकी.....जे बुलनी माय बिलाइकें छटपटाइत देखि ओकरा आलय सँ बाहर फेकलक...... जँ ओ बिलाइओ गोसाउनिक घरमे भरि जएतैक तँ महान अनिष्टक आशंका छलैक। किन्तु श्रीगंज वालीक धर्म-कर्म, वा हुनक माए-बापक व्रत-निष्ठा.....धरि, पेटक बच्चा बाँचि गेल आ श्रीगंजबाली तँ सहजहिँ, कहैत कहैत लालकाकीकें एखनहु रोमाञ्च हुअ' लागल रहनि।

.... 'आ कामेश्वर ठाकुरकें तँ कतेक दिन धरि गाम छोड़' पड़लनि - लालकाका कहलनि। भेलै ई जे एक दिस हुनकर घरक अन्न-पानि देयाद लोकनि बारि देलनि आ दोसर दिस, आइ-माइ सभ सधोरि देबाक लाथे श्रीगंज बालीकें कहियो खीर, कहिओ पकमान तँ कहियो भूजा लए आवेश कर' लगलखिन। एम्हर, बुढ़ही काकीक किरदानी सुनि कामेश्वर ठाकुर पत्नीकें कठोर आदेश देने रहथिन जे ककरहु देल वस्तु नहि खाएब– बुलनी मायकें सेहो ने ओ खएबा लेल देबैक, चिडै चुनमुनी पर्यन्त नहि ओ वस्तु खाए, तें खाधि कोड़ि गाड़ि देबैक।

.......एक दिन, लतामवाली काकीक सासु टाटक दोग देने बुलनी मायकें बाड़ीमे खट-खुट् करैत देखि लेलखिन। आ हुनके देल पिरुकिआ आ अचार खाधिमे गाड़ि झँपैत रहए ता' ओ बूढ़ी टाटक भूरे सँ चिकरि उठलीह– 'हाँ.......हाँ......हाँ......हाँ, ई कुल देवीक नवेद छिऐक।'

'हम हिनकर देलहा कहाँ छुलिअईए, ई तँ रातिमे हम अपनहि बनाए रखने रहिअनि तँ बौआसिन कहलनि जे आब बासि किऐक खाएब– से, रतुका छिऐक ने, अपनहुँ चित्तपर नहि चढ़ैत अछि....... तँ .....' बुलनी मायक प्रत्युत्पन्न मति छलैक।

...... से, सुनैत देरी ओ बूढ़ी बाजि देने रहथि– 'हऽ.....हऽ....धनि दड़िभंगा, दोहरी अंगा...... नै तँ रहितहुँ आइ भिखमंगा.......'

कामेश्वर ठाकुर अपनहि काने ई फकड़ा सुनने रहथि। आ, महाराजकें

अपन चिन्ता ओ कष्ट निवेदित कएने रहथिन।

महाराज राज-पण्डितक पद पर कामेश्वर ठाकुरकें नियुक्त कए एकटा भव्य बंगला आ सभ सुख-सुविधाक इन्तजाम कराए कहलखिन- 'अहाँ अपन परिवारकेँ एतहि आनि लिअ।' सुरक्षित रहब।

जखन सोमेश्वर ठाकुरक जन्म भेलनि तँ महाराजक निर्देशानुसार सभ प्रकारक डाक्टरी आ अन्य सुख सुविधा कामेश्वर ठाकुरक परिवार कें उपलब्ध कराओल गेल रहनि। श्रीगंज सँ शचीदाइक माता-पिता सेहो आबि गेल रहथिन- ई डेरा छिऐक, एखन बच्चाकें पोसबाक काज छै, परसौतीकें दम्म-दशा घुरएबाक काज छै', से कहि हुनकर माय हर्षित होइत नेना परसौतीकें सम्हार' लगलीह।

एम्हर सन्हौलीमे, जखन कामेश्वर ठाकुरक देयाद-वाद ई बुझलखिन जे हुनका सोनसन पुत्रक जन्म भेलनि तँ जिज्ञासा करबाक लाथें दिना-दिनी सभ आबए लगलाह। ओना, जिज्ञासा करब एकटा लाथ मात्र छलैक, अपन पुत्रीक मोहक कारणें शचीदाइक माता पिता एखन आबि गेल छथिन, से बूझि ठाकुरजीक देयाद वादकें सुअन्न प्राप्त करबाक अवसर भेटि गेलनि। दड़िभंगा अएबाक काज तँ सभकेँ रहिते छलनि - ककरहु डाक्टरक ओतए तँ ककरहु बजारक काज। ककरहु कोर्ट-कचहरी तँ ककरहु महाराजक ओतए 'हाजिरी' बनएबाक। आ, सभसँ नीक अवसर छलैक जे कामेश्वर ठाकुरक सासुक आतिथ्य सत्कार ग्रहण करबाक- दालि, भात, माछ, भुजिया आ एकटा कटनऊ तँ अवश्ये, आ ताहि पर सँ एक छओ छल्हिगर दही। अचार, चटनी आ मेरचाइ तँ सहजहिं- राजक पण्डित छलाह कामेश्वर ठाकुर, हुनकर मर्यादा सेहो ध्यानमे राख पड़ैत छलनि। .....आ, रहल हुनकर 'विलायती' भ' जएबाक डर, से, एत', शहरमे केओ कि देखैत छैक, ताहूमे ई पक्का मकान छिऐ - पक्कामे किछु नहि छुतैत छै। तैं 'विलायती'क संसर्गक दोष एहि डेरामे नहि लागए-ताहिपर गामक देयाद-वादक मौन सहमति छलनि।

मुदा, ठीठर भाइ उकट्ठी रहथि सभ दिनक। 'एँ यौ बड़का भाइ, अहाँ जे एतेक लोककें खुअबैत छिऐ, आ सासुसँ काज करबैत छियनि से गामसँ किऐक अएलहुँ सेहो मोन अछि? - ओ कामेश्वर ठाकुरकें पूछि देने रहथिन।'

सभटा, मोन अछि, की करू? हम नोत नहि देलियनि-हें, आ यदि अपनहि आबि जएताह, तँ की कहबनि?' - कामेश्वर ठाकुर असमर्थता जनौलनि। 'कहि दिअनु जे हम विलायती छी, तैं अहाँक जोगार एत' नहि बैसत' - ठीठर भाइ बुद्धि देलखिन।

'हौ ठीठर, अपन बुद्धि अपनहि लग राखह। हमरा घर पर केओ आओत आ हम भोजन लेल नहि कहबै, ई हमरा बुतें संभव नहि अछि।' एतबा कहैत देरी ठीठर स्टेशन दिस ट्रेन पकड़बाक हेतु डेग झारलनि।

......'यौ, चूड़ो तँ खा' लिअ', मुनहारि साँझखन तँ ट्रेन मनीगाछी टीशन पहुँचतै आ ओतसँ गाम अबैत-अबैत.....'

'नहि, जखन गामपर चून खोखरिकें फेकि देलिऐ, तखन पुनः खेनाइयो आरंभ करब गामेसँ आ, ई चोरा-नुकाकए खा लेब, पुन 'विलायती' घोषित करब, हमरासँ नहि हैत एकर दण्ड किछु तँ हमहूँ भोगी – से कहैत ठीठर डेग झटकारलनि। कामेश्वर ठाकुरकें सन्तोष भेलनि। 'चलू, ओतेक गौंआमे, एकटा तँ एहनो भेल जे सोझ-सोझ व्यवहार बुझैत अछि आ, करैत अछि।' –कामेश्वर ठाकुर बुद-बुदाए लगलाह।'

x x x x

– लालकाका गप्प उठौलनि तँ अन्ते ने भए रहल छलनि। बच्चा सभ भूखे कान' लागल छल। मोनाक माय (बरतनवाली) सेहो आइ देरिए सँ आएल – ज़े आठ बजे धरि आबि जाइत छल, से, एखन दश बाजि रहल छलैक, तखन आएल। पर्ससँ एकटा पचासक नोट बहार करैत बजलहुँ– 'तरकारी आ डबल रोटी, जल्दी ......हँ, दूध, समोसा यदि गरम-गरम छनाइत रहए तँ जल्दी आनू।'

मोनाक मायकें अतिथि देखि खौंझ उठि जाइत छैक। आइयो, ओकर मुँह पर खौंझाहटिक रेखा स्पष्ट झलकैत रहैक। पएरकें, पटकैत जकाँ ओ बजार गेलि।

ठाकुर परिवारक गप्पक तोरे ने ल' रहल छलैक। हमरहु दीदीक विषयमे सभ किछु बुझबाक उत्सुकता छल।

........'आ, ई जे सोम भाइकें हफीमची बनब' लगलखिन, मझिला भाइ से बुझलिऐ?

'नहि......?'

'आहि रे बा, सन्हौलीक तँ एक-एकटा बच्चाकें ई खिस्सा बुझल छैक। मझिला भाइ अपन एकटा मित्रक संग विचार कएलनि जे कोनो ने कोनो तरहें हिनका हफीमक हिस्सक लगबियनु। जखन ओकर आदति लागि जएतनि तँ छोड़ि देबनि। हफीमक बिना ई छटपटाए लगताह। ओहि हेतु तँ टाका चाही।

तकर जोगार करबाक हेतु ई जमीन बेचताह आ अपने दूनू गोटए हुनकर जमीन कीनि हुनका दरिद्र बना देबनि।' ई विचारि मझिला भाइ सोम भाइसँ घनिष्ठता बढ़ब' लगलाह.....। जखैन-तखैन, डेरापर, स्कूलक बाटमे संग भ' जाथिन। एकबेर, दशमीमे, जखन नवटोलक दुर्गाक दर्शन कए आपस घर आबि रहल छलाह, तँ सरिसबमे मधुरक दोकान पर आग्रह पूर्वक रोकि देलखिन।

.......'हँ, ओ मधुर जे हम कहने रही से दिअ।' हलुवाइ संकेत बुझि गेल। ओ हफीम देल जिलेबी पत्तलपर परसि सोम भाइक आगाँ राखि देलक। सोम भाइकें बड़ रुचिगर लगलनि। माङि-माङि कए, पेट भरि खएलनि। ओहि समयमे ओ मात्र नओ बरखक रहथि।

........गाम पर अएलाह तँ आँखि लाल टेस भ' गेल रहनि।

'कत' छलहुँ एतीकाल?' – पिता तमसाएल स्वरमे कहलखिन।

ओहने जोर दैत अपन स्वभावक विपरीत स्वरमे सोमेश्वर ठाकुर बजलाह– 'दुर्गाक दरसन करबा लेल गेल रही।'

'एतेक देरी किएक लागल? कत कत' गेल रही।

........'नवटोल......आ सरिसब......सरिसब आ......आ.....।' बोल लटपटा रहल छलनि। कामेश्वर ठाकुरकें बुझि पड़लनि जे किछु गड़बड़ वस्तु खेना गेल छनि।

.......'आ..... मधुर केहेन छलैक?...... सरिसबक मधुर तँ बड़ नीक होइछै.....?' पिता अबोधी मारैत पुछलखिन......।'

........'हँ दादा...., एह एहेन मिठगर, एहेन सोन्हगर...... जे सौझे स्वर्गेक सुख'.... सोमेश्वरक हाव-भाव, बोल-वचनसँ पिता खूब नीक जकाँ बुझि गेलखिन जे भाङ सन कोनो वस्तु मधुरमे देल रहैक, सएह हुनकर पुत्र खएलनि......।

'के सभ छलहुँ?' पिता अपन दुःख कें दबाए प्रसन्नता व्यक्त करैत पुछलखिन।

'एँह ...., मझिला भाइ, हुनकर दोस्त, बबलू......'

कामेश्वर ठाकुर माथ पर हाथ द' बैसि गेलाह। पत्नीक हाथमे लोटा भरि पानि दए कहलखिन– 'ई पानि पिआए दिअनु आ ओछाओन धरि ल' जाए सुता दिअनु। 'सोमू' कें माए माथ हँसोथैत सुताए देलखिन।

कामेश्वर ठाकुर साकांक्ष भ' गेलाह। दिनमा अपनहि मोने मालिकक कानमे ई बात कहि देलकनि – 'मालिक, खेत जाइत काल मझिला मालिक आ हुनकर दोस गप्प करैत छलाह जे हफीमक हिस्सक लगा दिअनु। जखन तलब जोर मारतनि तँ अपनहि बजार दौड़ताह– आ खेत बेच' पड़तनि.... ई कोला हम लेब...... ओ कोला अहाँ लेब......। दूनू गोटए खूब हँसैत रहथि।'

...... आब, सोमेश्वरकें पिताक कठोर आदेश रहनि, जे सत्यनारायण दास छोड़ि गामक ककरहु सँ, सम्पर्क नहि राखथि।

.......तँ, सोमेश्वर सेहो अपन पुत्र राजूकें गामक लोकसँ काते रखबाक चेष्टा करैत रहलाह। राजू खूब तेजस्वी, वकालत मे शहरक कोनो वकील हुनकर परतर नहि क' सकैत रहथि। मुदा, जखन लतामवाली काकी कानि-कानि कए ई कहलखिन जे तोहर सभटा जमीन अपराकें (दीदीकें) लिखल जा रहल छौ, तँ ओ तमतमाए गेल रहथि।

.... बहुत दिन पर भैया औताह, दीदी घरकें सजाए, साफ सुथरा कए बाट ताकि रहल छलीह। राजू अबितहिँ हुनका देखि चिचिआ' उठल –हँ, ई जे एतेक, कोठली छै तैमे पसरले रहू एकसरे.....'

दीदी अप्रतिभ होइत कान' लगलीह।

......जतेक उल्टा सीधा दादा सँ करएबाक हुअए, से.........।'

माय, जलखैक छिपली आगाँ आनि पानि अनबा लेल गेलखिन – तँ पुत्र रोकि देलखिन – रह दिअ'.......। आ पएर पटकैत आपस दड़िभंगा बिदा भ' गेलाह।

दीदी मुँह तकिते रहि गेलीह।

......मुदा दीदी तैयो माता-पिताक सेवामे लागलि रहलीह......।

लालकाका आ लालकाकी बहुतरास समाचार सभ कहलनि। माघ मासक कुहेस वातावरणकें आच्छन्न क देने छल।

.......लालकाकी, चलब बजार? देखबै जे इलाहाबाद केहेन छै?.....' हमर प्रस्ताव छल।

'कतहु जएबासँ पहिने भारद्वाज आश्रम जाएब.....सुनै' छिऐ जे ओ सैकड़ो शिष्य सहित एतए बास करैत छलाह। विद्याक ई स्थल केन्द्र रहलैक अछि.....!'

........'से जाएब तँ चलू। भारद्वाज मुनिक मूर्तिक दर्शन अवश्य कराएब, आनो आनो देवी-देवताक, मुदा ओत' आब केवल भिखमंगा जकाँ पण्डा-पण्डाइनक शब्द सुनबै -हिनका पाइ चढ़बिअनु......हुनका चढ़बिअनु..... हमर अनिच्छा व्यक्त छल किन्तु लालकाकीक अगाध श्रद्धा देखैत भारद्वाज आश्रम, ओत' सँ आनन्द भवन गेलहुँ। ओकर परात ओ सभ गाम बिदा भ' गेलाह।

.... अपन घर गृहस्थीक ओझराहटिक कारणें गाम जएबाक पलखति नहि भ' रहल छल। एहि बेर, विदा भ' गेल छी......

गरमी मासक साँझ। इलाहाबादसँ तूफान एक्सप्रेस चलबाक समय साढ़े दश बजे राति छलैक। आ हम सभ ताहि अनुसारे नओ बजे प्लेट फार्मपर पहुँचि गेल रही। हमरे सन बहुत यात्रीक भीड़ एकट्ठा भए गेल रहैक। ट्रेन अएबाक समयक प्रतीक्षा, ट्रेन पकड़बाक चिन्तासँ अपन धीया पुता आ सामान छोड़ि आन दिस ध्याने नहि जाइत छल। किन्तु एकाएक उद्घोषणा भेलैक। बुझल जे तूफान एक्सप्रेस चारि घंटा लेट छलैक। आब तँ माथपर नओ मोन पानि पड़ि गेल। चिंकी तीनिए बरखक छलि। प्लेटफॉर्म पर लोक सभक आवाजाही, ट्रेन सभक सीटी आदिक हल्लासँ ओकरा निन्न नहि भेलैक - सुतबाक समय रहैक तैयो। ओ खूब कूदि रहलि छलि जेना कोनो उत्सव मनाए रहलि हो। सामान ताकू, बच्चा सम्हारब आ एहि गरमीक लूक थापड़ सहू, सभटा मिलिकए तबाह क' रहल छल।

करितहुँ की? हारने हरिनाम। अपनाके अपनहि बुझौलहुँ जे ईहो सभ तँ प्रतीक्षे कए रहल अछि। अपन मुँह परक घामकें पोछि रूमाल रखलहुँ। कतहुसँ एकटा थाकल स्वर सुनाए पड़ल- "एतबा नहि विचार भेलनि जे जएबा काल उठिकए गोरो लगितथि। हम की कोनो टाका कैञ्चा माङए गेल, रहियनि?......"

'ह......ऽ.....ऽ, एकर कतेक सोच करैत छी? बौआ, तँ संगमे आएले छथि।' .....आब ओहि मौगीक बदमाशी पर कतेक ध्यान देबैक?.....?

किछुए कालमे एकटा युवक किछु ठंढ़ा पेय दूनू बूढ़ा बूढ़ीक हाथमे पकड़ा देलनि। दूनू व्यक्ति हलसि कए फ्रूटीक ओहि पैकेटकें धए अपन अपन गप्पमे लागि गेलाह। युवक प्लेटफार्मपर टहलए लगलाह। चालिक गति किछु तीव्र रहनि। माता-पितासँ दूर रहबाक वा आओर कोनो व्यग्रता रहल होनि। बूढ़ा बूढ़ीक नहुएँ नहुएँ गप्पसँ लऽगमे बैसलि कोनो अन्य महिलाकें ई भाँज लागि गेलनि जे ई लोकनि घरक कोनो वधूसँ आहत छथि। ओ हिनकर आओर निकट

घुसुकि बाजए लगलीह– "आब तँ अनेरे धीया पुताक मोहमे पड़ि बूढ़ लोक सभ कष्ट कटैत रहैए।" "दाइ, ई तँ संसार छिऐक। धीया-पुता लग नहि रहब तँ कतए जाएब?"

"किएक, बहुत उपाय छैक।" बूढ़ी जेना किछु सुनबे ने कएलनि।

"......हाथ पएर अवश भेल जाइए। एतेक कष्ट उठाए, आशा लगाए, धीया- पुताकें पोसलहुँ। से सभटा बुझि पड़ैए जे हाथसँ छूटि रहलए......" "अहूँ कतेक बजैत छी, आ बजैत-बजैत की कह' लगैत छिऐक?......" संगक पुरुष नहुएँसँ, किन्तु अधिकारपूर्ण स्वरमे बजलाह। लऽगमे बैसलि, दोसर ठामक महिलाकें बुझि पड़ल जे ओहि पर ध्यान नहि गेलनि, वा सुनियो कए अनठाए देलनि।

'हे यै...... हमर गाम दिस एकटा नारायणपुर गाम छैक। .....तकर मादे सुनलिऐ-ये जे ओत बूढ़ बुढ़ानुसक सेवा कएल जाइत छैक। हमर जेठ भाइ आ भाउज तँ ओत्तहि चल गेल छथि।"

"......किऐक?" हमर जिज्ञासा भेल।

"देखै ने छिऐ......आबक युग। एक्केटा बेटा, आ तकरा लेल अपन खेत पथार बेचि कए हमर भाइ पढ़एबा लिखएबाक व्यवस्था करौलनि। भातिजकें खूब नीक नोकरी भेलैक। ऊँच खानदान मे बियाह। आब ओहि दूनू बर कनियाक मोने जे बूढ़ा-बूढ़ी गाममे किऐक रहतीह। से हमर भाइ कहलखिन जे हम सभ दिन गाममे रहि अएलहुँ। ब्रह्मके दूध ढारैत छी। भाउज कहलखिन जे पाबनि-तिहार, छठि-चौरचन, सामा चकेबाक एतेक जोगार हमरा चेन्नईमे नहि होइत अछि। ताहि पर बेटा पुतोहुकें रोष भ' गेलनि।......यैह सभ होइत-होइत खर्चा-बर्चा नाम मात्रक कहियो काल पठबैत छलथिन। हमर भाइ-भाउजकें कष्टक दिन आबि गेलनि। दुखित पड़ि गेल रहथि।...... एहेन-एहेन लोकक दुर्दशाकें देखैत एकटा डाक्टरनी अपनहि गाममे एकटा सुश्रुषा केन्द्र खोलि लेलनि। ओहि स्थान पर अपन देस-कोसमे ओ देखलनि जे बूढ़-बुढ़ानुसकें धीया-पुता दिससँ बड़ कष्ट भेटैत छनि, जँ टाका कैञ्चा रहलनि तैयो आ नहि रहलनि तैयो।......"

'ओ तँ बड़ खर्चक बात भेलैक......' हमर जिज्ञासा छल।

'खर्चक ओतेक नहि, मुदा इन्तजामक बात बेशी......, गप्पक क्रम बड़ी काल धरि चलैत रहल.....कोना ओ डाक्टरनी समय बहार कएलनि,

कोना इन्तजाम–बात करैत छथि......' आदिक। ....हुनका कोना समय भेटलनि। रोगी सभकें देखैत, छथि।......से सभ तँ छुटिए गेल हेतनि।

'किछु ने छुटलनि। आओर बढ़िए गेलनि। एहेन बहुत बूढ़–बूढ़ानुससँ ओ गप्प कएलनि जे खूब कमजोर वा रोगी भ' गेल हुअए। वेशी वयस आ रोगक कारणें हुनका सभकें घरक लोकसँ उपेक्षा भेटि रहल छलनि। ओ डाक्टरनी पहिने तँ एक गोटएकें, पुनः दोसरकें आ एहिना करैत करैत पचीसो बूढ़कें अपना आश्रममे व्यवस्थित करौलनि। हुनका लोकनि स्थितिक अनुसारें रहन सहनक व्यवस्था करौलनि। ओ घर जाए सकैत छथि, धीया–पुतासँ भेंट कए सकैत छथि, मुदा, दिनचर्या ओहि आश्रमक अनुसारे राख' पड़तनि। बेशी तँ यैह देखबामे अबैत छैक जे एक बेर आबि गेलीह, से घर आपस जएबाक नाम नहि लैत छथि। बूढ़ा वा बूढ़ी अपन–अपन सामर्थ्यकें आश्रमेक काजमे लगबैत आनन्द पूर्वक समय बितबैत रहैत छथि।....'

"ओ.....ऽ.....ऽ, अहाँ, अपराजिताश्रमक गप्प क रहल छी? ओत डा० अपर्णा तँ साक्षात् देवी बनिकए आएल छथि।" पाछा सँ एकटा युवतीक स्वर आएल।

हमरा लेल दूनू नाम परिचित छल। ओ डा० अपर्णा हमर दीदीक बेटी थिक, आ तकरे गुणगान एतेक कालसँ सुनि रहल छी। हर्षसँ रोमाञ्चित भए उठलहुँ। दीदीकें सेहो बेशी बुच्ची बच्चा......एही नामसँ जनैत रहियनि। करिया काका मात्र अपरा कहैत रहलखिन। से, अपराजिता हुनकर नाम हेतनि। पहिल बेर एहि बातक ग्लानि भेल जे जे दीदी एतेक दुलार देलनि, जनिका लेल एतेक आदर रहल तनिकर नामो ने जनैत छियनि। प्रायः ई संस्कार– 'मौगीक नाम बुझबाक की काज'....... वा आओर किछु....... नहि कहि।

सोचिते रही तावत हमर ट्रेन शीघ्र अएबाक सूचनाक उद्घोषणा भेल। ओ यात्री जकाँ हमहूँ अपन सामान आ बच्चाकें सम्हारबाक उपक्रम कर' लगलहुँ।.....

गाम पहुँचितहिँ हम नारायणपुर गेलहुँ। एकटा उज्जर रंगक मकानक आगाँ लिखल छलैक– 'अपर्णा निवास।' बड़ाण्डापर दू टा व्यक्ति, प्रायः दम्पती रहथि, अपनामे वार्तालाप क' रहल छलाह– 'ई तँ भगवतिएक कृपा जे अपर्णा सन लोक एतए जन्म लेलक। ओकरा अपन गाम आ देस–कोसक लेल कतेक मोह छैक, ममता छैक,.....ई हमरा लोकनिक भाग।'.....गप्पक क्रम चलिए रहल छलैक। कोम्हरहु सँ, एकटा गौरवर्णा महिला श्वेत परिधानमे आबि टोकि देलखिन– "अरे, अहाँ सभ एतए छी? हम तँ भिनसुरका जलपान अहाँ सभक

कोठलीमे पठा देलहुँ।.....आ देरी करब ठीको नहि।' ओ सभ लऽगक कोठली दिस चल गेलाह। ओ महिला हमरा विनम्रतापूर्वक ओतए राखल कुर्सी पर बैसबाक संकेत दैत स्वयं ओहि दम्पतीक संगे भीतर चलि गेलीह। रौदक धाह लगबैत एकटा वृद्ध टुकुर टुकुर हमरा दिस ताकि रहल छलाह। हमरा कोनो परिचित चेहरा जकाँ लागल। हमहूँ ताक लगलिअनि।

'हमरा चिन्हलहुँ बाउ?'......हम मिसरी।'.....ई कहैत हुनकर आँखि डबडबा गेलनि।

'हँ....ऽ.....ऽ' पीसा.... हमर मुँहसँ अनायास निकलि गेल। "बहुत दिनपर देखलहुँ, ने.....? हमरा अपन गाम छोड़ पड़ल। तोहर दीदी तँ तेना ने रुसलखुन जे हमरा घूरि के ने तकलनि, की भेलनि से नहि बुझलिऐक।....." मिसरिया झाक मुँहसँ ई सुनितहि हमर मोन भेल जे चिकरि कए कहि दियनि– 'हमरा सभटा बूझल अछि....... सुनबाक साहस अछि अहाँके.....?' मुदा मर्यादाक रक्षा करबाक छल। दोसर जे एहि पुरुषक ई हीन अवस्था देखैत किछु बजबाक अपनहुँ साहस नहि भेल। मिसरिया झा बाजिये रहल छलाह– 'गुलाब काकी बलजोरी दोसर विवाह कराए देलनि। कहलनि जे अपुत्रकें गति नहि हुअए। दू-चारि बीघा खेतो छल से के भोगिते। तोहर दीदी तँ तेहेन ने रुसली जे हमरासँ बजबे ने करथि।.....विवाह कएल। दूटा बेटो भेल। अछिए......आ हमरा.....कोन दुर्गति ने कएलक......' ई तँ बेटी एहेन भेल जे......मनुक्खक दशा मे छी। ......तोहर दीदी धरि रुसले रहली.....रुसिकए चलो गेलीह, से कहैत मिसरिया झाक आँखि पुनः नोरा गेलनि।

'......तँ की, दीदी आब नहि छथि......' हमर मुँहसँ हठात् बहरा गेल। 'नहि, मिसरिया झाक मुँह दुखी भए गेलनि।

डा० अपर्णाकेँ देखि लागल रहए साक्षात दीदी ठाढ़ि छथि। ओ हमरा कोना चिन्हिते.....। किन्तु ई निश्चय जे दीदीक तपस्या सार्थक भेलनि।

......'मैडम अपनेकेँ बजबैत छथि......' एकटा महिला हमरा सामनेक केबाड़ दिस जएबाक संकेत करैत कहलनि।

हम ओहि दिस बढ़लहुँ। एकटा बड़का टा हॉल। आधुनिक साज सज्जा सँ पूर्ण। देवाल पर बड़की टा फोटो टाङल – मालासँ सुसज्जित। हम टकटकी लगाए देखए लगलहुँ। तावत गृह स्वामिनी आबि पुछैत छथि– 'अपनेक शुभ नाम?'

'रेणु'– हमर संक्षिप्त उत्तर छल।

.......ऐंऽ......ऽ माँक दुलारू......भतीजी.......? 'हँ.....हमरा' यदि भ्रम नहि होइत अछि तँ अपने अपर्णा......।

'हँ, हम अहाँक दीदीक बेटी......। जे थोड़ बहुत शिक्षा दए गेलीह ताहिसँ.....'

'ई थोड़ नहि......सभसँ बेशी आनन्द जे अहाँ समाजक एतेक ध्यान रखैत छी.....' गप्पक क्रममे हमर ध्यान ओही आदमकद फोटो पर केन्द्रित होइत चल गेल। मोनमे घुरिआइत रहल जे कोना गर्भक रक्षाक हेतु ओ क्लिनिकसँ भागि गेल रहथि।.....आ भरि जन्म सासुरक नाम नहि लेलनि। मुदा हुनकर अपन जिनगी?.....

ओहि फोटो दिस तकैत मोन होइए जे पुछियनि....... 'दीदी, तखन हरिणीकें की भेलैक?'

बुझि पड़ल जे फोटोक दीदीक स्मितमुख बाजि रहल हुअए– "तखन ओ एकटा बोनक पातपर पीठ ओरि देलकै। ओकर शोणित बहब बन्न भए गेलैक। तखने कतहुसँ सूर्यक किरण बोनक अन्हारके चीरि देलकै। इजोत पसरि गेलै।"





लेखिकाक परिचय

नाम - **डा० कामाख्या देवी, लेखनमे नीरजा रेणु।**

जन्म - ११ अक्टूबर १९४५ ई० नैहर (नवटोल)मे।

पिता - स्व० प० हरिश्चन्द्र मिश्र, सचिव-राजदरभंगा।

माता - स्व० गंगा देवी।

पति - डा० किशोरनाथ झा, राष्ट्रपति सम्मानित, ग्रा० बिट्ठो, पो० सरिसब-पाही, जि० मधुबनी।

शैक्षिक योग्यता - प्रतिष्ठाक संग बी.ए. तथा एम.ए.मे मैथिलीमे प्रथम स्थान तथा पीएच.डी.

(क) प्रकाशित (मौलिक) कृति

१. धार पिआसल (१६ कथाक संग्रह) १९९६ ई०

२. आगत क्षण ले (५८ कविताक संग्रह) १९९७ ई०

३. ऋतम्भरा (१८ कथाक संग्रह) २००१ ई० (साहित्य अकादमी दिल्लीसँ २००३ ई०मे पुरस्कृत)

४. प्रतिच्छवि (हिन्दीमे १६ कथाक संग्रह) २००२ ई०

५. अनेक पत्र, पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थ सबमे कविता, कथा, संस्मरण, आलोचना, ललितनिबन्ध आओर पचीस सँ अधिक शोधनिबन्ध प्रकाशित।

६. अनुचिन्तन (निबन्धसंग्रह)

७. मैथिली तथा संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकर

(ख) प्रकाशित सम्पादन

१. मैथिली कथाधारा (स्वातन्त्र्योत्तर कालिक १५ गोट प्रतिनिधि कथाक संग्रह) साहित्य अकादमी दिल्लीसँ १९८२ ई०मे प्रकाशित।
श्रीमती गौरीसेन द्वारा एकर बङ्ला अनुवाद कएल गेल साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

२. पाबनि तिहार २००२ ई०मे प्रकाशित

३. मैथिलीमे महिला लेखन - बीसम शताब्दी, २००४ ई०मे साहित्य अकादमी नई दिल्लीसँ प्रकाशित

४. सरिसबक फूल (कथा संग्रह) साहित्यिकी, सरिसब-पाहीसँ प्रकाशित, २००४ ई०।

सम्मान :

१. साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक परामर्शदात्री समितिक सदस्या (मैथिली साहित्य - १९७८ सँ ८३ ई० धरि)

२. मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग द्वारा सम्मान प्राप्त, १९९५ ई०।

३. विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा सम्मानित १९९९ ई०

४. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित २००३ ई०।

५. 'साहित्यिकी' सरिसब-पाही द्वारा विशिष्ट सम्मान प्राप्त, २००४ ई०।

६. सरिसबपाही पूर्वी पञ्चायत द्वारा सम्मानित २००४ ई०।

७. प्रबोध साहित्य सम्मान निर्णायिका समितिक, सदस्या, स्वाती फाउण्डेसन द्वारा मनोनीत २००५-६ ई०।

८. साहित्यिकी, सरिसब-पाही द्वारा सम्मान प्राप्त २०१२ ई०



लेखिकाक परिचय

नाम - **डा० कामाख्या देवी, लेखनमे नीरजा रेणु।**

जन्म - ११ अक्टूबर १९४५ ई० नैहर (नवटोल)मे।

पिता - स्व० प० हरिश्चन्द्र मिश्र, सचिव-राजदरभंगा।

माता - स्व० गंगा देवी।

पति - डा० किशोरनाथ झा, राष्ट्रपति सम्मानित,
ग्रा० बिट्ठो, पो० सरिसब-पाही, जि० मधुबनी।

शैक्षिक योग्यता - प्रतिष्ठाक संग बी.ए. तथा एम.ए.मे मैथिलीमे प्रथम स्थान
तथा पीएच.डी.

(क) प्रकाशित (मौलिक) कृति

१. धार पिआसल (१६ कथाक संग्रह) १९९६ ई०
२. आगत क्षण ले (५८ कविताक संग्रह) १९९७ ई०
३. ऋतम्भरा (१८ कथाक संग्रह) २००१ ई०
(साहित्य अकादमी दिल्लीसँ २००३ ई०मे पुरस्कृत)
४. प्रतिच्छवि (हिन्दीमे १६ कथाक संग्रह) २००२ ई०
५. अनेक पत्र, पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थ सबमे कविता, कथा, संस्मरण, आलोचना, ललितनिबन्ध आओर पचीस सँ अधिक शोधनिबन्ध प्रकाशित।
६. अनुचिन्तन (निबन्धसंग्रह)
७. मैथिली तथा संस्कृत साहित्यमे गौरीशंकर

(ख) प्रकाशित सम्पादन

१. मैथिली कथाधारा (स्वातन्त्र्योत्तर कालिक १५गोट प्रतिनिधि कथाक संग्रह) साहित्य अकादमी दिल्लीसँ १९८२ ई०मे प्रकाशित।
श्रीमती गौरीसेन द्वारा एकर बङ्ला अनुवाद कएल गेल साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
२. पाबनि तिहार २००२ ई०मे प्रकाशित
३. मैथिलीमे महिला लेखन - बीसम शताब्दी, २००४ ई०मे साहित्य अकादमी नई दिल्लीसँ प्रकाशित
४. सरिसबक फूल (कथा संग्रह) साहित्यिकी, सरिसब-पाहीसँ प्रकाशित, २००४ ई०।

सम्मान :

१. साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक परामर्शदात्री समितिक सदस्या (मैथिली साहित्य - १९७८ सँ ८३ ई० धरि)
२. मिथिला सांस्कृतिक संगम प्रयाग द्वारा सम्मान प्राप्त, १९९५ ई०।
३. विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा सम्मानित १९९९ ई०
४. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित २००३ ई०।
५. 'साहित्यिकी' सरिसब-पाही द्वारा विशिष्ट सम्मान प्राप्त, २००४ ई०।
६. सरिसबपाही पूर्वी पञ्चायत द्वारा सम्मानित २००४ ई०।
७. प्रबोध साहित्य सम्मान निर्णायिका समितिक, सदस्या, स्वाती फाउण्डेसन द्वारा मनोनीत २००५-६ ई०।
८. साहित्यिकी, सरिसब-पाही द्वारा सम्मान प्राप्त २०१२ ई०